मीडिया मीमांसा
Media Mimansa

Volume-16, No.1

January-March, 2022

A peer-reviewed bilingual quarterly research journal

Chief Editor
Prof. K.G. Suresh

Advisory Board
Shri Alok Mehta
Prof. Rajiv V. Dharaskar
Dr. Amitabh Deo Kodwani
Dr. Ravi Prakash Tekchandani
Prof. P. Sasikala

Editors
Prof. Monika Verma
Dr. Rakhi Tiwari

Joint Editors
Prof. Girish Upadhyay
Prof. Shivkumar Vivek

Associate Editors
Dr. Urvashi Parmar
Dr. Ramdeen Tyagi
Shri Lokendra Singh Rajpoot

Subscription and Publication coordination:
Prof. Kanchan Bhatia
Dr. Rakesh Pandey

Printed and Published by
Prof. Avinash Bajpai
Registrar, Makhanlal Chaturvedi National University of Journalism and Communication

Subscription
Single copy : Rs. 150/-
Annual : Rs. 500/-
Institutional Membership : Rs. 1,000/- (Annual)

Please remit your subscription through draft in favour of Registrar, MCRPVV, Bhopal
B-38 Vikas Bhawan, M.P. Nagar Zone-I, Bhopal-462011
Phone -0755-2554904

विषय-सूची / CONTENTS

- संपादकीय – **प्रो. के. जी. सुरेश** 1
- भारतीय फिल्मों के गौरवशाली इतिहास के पन्ने – **अनंत विजय** 2–4
- स्वतंत्रता पूर्व भारतीय सिनेमा की आधार शिला स्थापना में सिनेमॅटोग्राफी का योगदान (1896–1947) – **डॉ. श्रीकांत सिंह**, **आशीष भवालकर** 5–13
- गांधी, मंडेला और किंग के संदर्भ में सिनेमा में अहिंसा का फिल्मांकन – **डॉ. मीता उज्जैन**, **अंजना शर्मा** 14–20
- बॉलीवुड में महिला फिल्म निर्देशिकाओं की भूमिका – **डॉ. रजनीश कुमार झा** 21–27
- बिंज वाचिंगः वेब सीरीज विषयवस्तु व युवाओं की बदलती जीवनशैली – **मनोज कुमार पटेल**, **डॉ. गजेंद्र अवास्या** 28–34
- मध्यप्रदेश में फिल्म पर्यटन की संभावनाएंः एक अध्ययन – **अंकित पाण्डेय**, **प्रियंका पांडेय** 35–38
- The cinematic language of Satyajit Rayः With special reference to Pather Panchali. –**Dr.Yasharth Manjul** 39–43
- Study on non-verbal communication in national award winning movies (with special reference to Mrigaya) –**Dr. Urvashi Parmar**, –**Ms. Sheuli De Sarkar** 44–49
- Mobilizing Justice in Social Media through Hash Tagः A Case Study of #JusticeforSushantSingh Rajput on Twitter – **Nitesh Tripathi**, **Swati Chandak**, **Mr. Sayak Pal** 50–60
- A Narrative Analysis of the Amazon Prime Original Web Series Paatal Lok – **Dr.C.Sriram**, **Dr.V.Mohanasundaram** 61–67
- Environmental representation in Bollywood movieः A Narrative analysis of Movie SHERNI – **Shweta Arya** 68–76

संपादकीय

एक संभावनाशील माध्यम की चुनौतियां

चलचित्र, मानव समाज का वह जीवंत, चलायमान तथा मुखर सर्वकालिक दस्तावेज होता है जिसकी अनुगूंज हर भावी मानव पीढ़ी के मन-मस्तिष्क पर अमिट छाप छोड़ती हुई समय के प्रवाह में अनुप्राणित होती रहती है। प्रत्येक समाज और संस्कृति के विविध पक्षों को अपने में संजोए सिनेमा की विधा हर आयु-वर्ग, सामान्य और विशिष्ट व्यक्ति के मध्य अत्यंत लोकप्रिय और प्रभावोत्पादक है। जनसंचार का यह दृश्य-श्रव्य माध्यम जब समाज की उज्ज्वल, स्याह या ग्रे छवियों को कुशल लेखक, निर्देशक, निर्माता व तकनीकी विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में, कथा रूप में दर्शकों के समक्ष रखता है तो यह उन सभी के लिए परीक्षा की घड़ी होती है जो एक सशक्त माध्यम से समाज में संवाद, चर्चा व वार्तालाप की परिपाटी स्थापित करना चाहते हैं। स्वतः स्पष्ट है कि बिना उद्देश्य के संचार और सृजन संभव नहीं है। यही आधार भूमि है चलचित्र की। अतः जहां जनसंचार हो वहां जन-जन से संबद्ध और आबद्ध समसामयिक मुद्दे ही प्राथमिकता के साथ किसी चलचित्र की कथावस्तु बनते हैं। भारत भूमि की विविधता व बहुलता को अपने में समाहित कर, इसके भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक आदि आयामों को केंद्रित कर व्यावसायिक एवं कला सिनेमा ने कई प्रामाणिक तथा तथ्य आधारित काल्पनिक कहानियों को गढ़ा है, जो भारतीय सिनेमा में मील का पत्थर साबित हुई हैं। स्वतंत्रता से पूर्व अथवा स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज के नव निर्माण व पुनर्जागरण, उसकी विसंगतियों-विडंबनाओं और पुनरुत्थान पर सोद्देश्य फिल्मों का चित्रण और निर्माण इस जनमाध्यम के दर्शकों को सूचित, शिक्षित और मनोरंजित करने के उद्देश्यों को पूर्ण करता प्रतीत होता है।

तकनीकी एवं सूचना संचार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुई क्रांति की उत्तरोत्तर वृद्धि ने भारतीय सिनेमा उद्योग को गति प्रदान की है। सोशल मीडिया के विस्तार ने व्यावसायिक सिनेमा के भारी-भरकम बजट और अन्य तामझाम से हटकर, कई नए रचनाधर्मी युवाओं को कम व सीमित बजट में लघु अवधि के पॉकेट सिनेमा/शार्ट सिनेमा की ओर आकृष्ट किया है। यही कारण है कि अब सिनेमा के हर प्रारूप और कथानक को ध्यान में रखकर किए जा रहे नवाचारी प्रयोग सिने दर्शकों को आंदोलित और प्रेरित कर रहे हैं। कोरोना महामारी के समय सिनेमाघरों और मल्टीप्लेक्स के न खुलने के कारण भारत में ओटीटी का मार्केट जिस तेजी से बढ़ा है, उसके आंकड़े चौंकाने वाले हैं। वेब सीरीज और ओटीटी पर रिलीज होने वाली मूवीज नित्य नए रिकॉर्ड बना रही हैं। ऐसे में कुछ प्रश्न उठना लाजमी है- क्या अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की आड़ में दर्शकों को भ्रमित, अरुचिकर और नकारात्मक भावनाओं को उकसाने वाला कंटेंट तो नहीं परोसा जा रहा? क्या उस कंटेंट को, जो राष्ट्र की अखंडता, अस्मिता अक्षुण्ण रखने वाली पहचान से जुड़ा है, तोड़ा- मरोड़ा तो नहीं जा रहा ? तकनीकी प्रेम और आधुनिकता के प्रति आग्रह को उन्माद में तब्दील करते हुए भारतीय संस्कृति ,परंपराओं, रीति-रिवाजों और सबसे बढ़कर राष्ट्र गौरव और प्रेम के मनोभावों पर तो कुठाराघात नहीं किया जा रहा है? यह सभी प्रश्न चिंतन- मनन, विश्लेषण- विवेचना एवं शोध का केंद्रीय तत्व हैं। अतः फिल्म कम्युनिकेशन पर केंद्रित 'मीडिया मीमांसा' शोध पत्रिका का यह अंक फिल्मों की बहुरंगी नई-पुरानी विषय वस्तु को सम्मिलित करते हुए शोधपरक दृष्टि से लिखित शोध पत्रों के साथ संवेदनशील, जिज्ञासु व मर्मज्ञ अध्येताओं के बीच विशेष कलेवर के साथ प्रस्तुत है। उल्लेखनीय है कि यह अंक ऐसे विशिष्ट अवसर पर प्रकाशित हो रहा है जबकि चतुर्थ चित्र भारती फिल्मोत्सव का भव्य आयोजन विश्वविद्यालय के भोपाल स्थित नवीन परिसर में हो रहा है। यह विशेषांक ऐसे सभी विद्वत, सुधी शोधकर्ताओं, मीडिया शिक्षकों, समीक्षकों एवं अकादमिक गतिविधियों से संबद्ध पाठकों को इस अपेक्षा के साथ समर्पित है कि वे भविष्य में परोक्ष अथवा प्रत्यक्ष रूप से इस शोध पत्रिका में अपना बहुमूल्य योगदान सहर्ष प्रदान करेंगे।

- प्रो. के. जी. सुरेश
कुलगुरु एवं मुख्य संपादक

विशेष आलेख

भारतीय फिल्मों के गौरवशाली इतिहास के पन्ने

* अनंत विजय

स्वाधीनता के अमृत महोत्सव वर्ष में हम उन महापुरुषों को याद कर रहे हैं जिन्होंने हमें स्वतंत्रता दिलाने के लिए सर्वस्व होम कर दिया। हम उनके भी योगदान का स्मरण कर रहे हैं जिन्होंने स्वाधीनता के संघर्ष के लिए जमीन तैयार की और उनको भी याद कर रहे हैं जिन्होंने अपने छोटे प्रयासों की आहुति देकर भी स्वाधीनता का यज्ञ संपन्न किया। स्मरण तो उनका भी करना चाहिए जिन्होंने स्वाधीनता के संघर्ष में सीधे हिस्सा नहीं लिया लेकिन अपनी कला, अपनी साहित्यिक रचनाओं से स्वतंत्रता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जनमानस को तैयार किया। जो भी भारतीय जिस भी क्षेत्र में काम कर रहे थे वो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से राष्ट्र को स्वतंत्र करवाने के लिए अपना योगदान दे रहे थे। इस लेख में हम सिनेमा के क्षेत्र से जुड़े लोगों, उनकी पहल, उस वक्त की परिस्थितियों और घटनाओं की चर्चा करेंगे।

अपने देश में हम जब सिनेमा की बात करते हैं तो इसके जनक धुंडिराज गोविन्द फालके का नाम याद आता है। दुनिया 'दादा साहब फालके' के नाम से जानती है। उनके संघर्ष को, उनके काम को रेखांकित भी किया जाता रहा है। जब भी भारतीय फिल्म उद्योग की बात होती है तो उनका नाम बेहद आदर के साथ लिया जाता है। लिया भी जाना चाहिए। साथ ही हमें उन स्थितियों, उन परिस्थितियों, उन घटनाओं की भी चर्चा करनी चाहिए जिहोंने दादा साहब फाल्के का मन फिल्मों की ओर मोड़ा। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में भारत में विदेशी फिल्मों का प्रदर्शन आरंभ हुआ और उन फिल्मों ने नाटकों के प्रदर्शन को प्रभावित किया। जिन प्रेक्षागृहों में नाटकों का प्रदर्शन हुआ करता था वहां कुछ फिल्मों का प्रदर्शन भी होने लगा था। इन फिल्मों को देखने के बाद कुछ भारतीय फोटोग्राफर भी इस कला के प्रति आकर्षित होने लगे थे और उनके मन में भी फिल्में बनाने की आकांक्षा अंकुरित होने लगी थी। ऐसे ही एक छायाकार थे हरिश्चंद्र सखाराम भाटवडेकर, जिनको लोग 'सावे दादा' भी कहते हैं। सावे दादा का बांबे (अब मुंबई) में अपना स्टूडियो था और जब उन्होंने विदेशी फिल्में देखीं तो तय किया कि वो इस विधा में हाथ आजमाएंगे। उन्होंने विदेश से लुमिएर का विशेष कैमरा मंगवाया जिससे इंटरमिटेंट मोशन मैकेनिज्म के तहत चित्र खींचे जाते थे। हिंदी सिनेमा के इतिहासकार इस बात का उल्लेख करते हैं कि सावे दादा ने जब कैमरा मंगवाया तो उन्होंने दो फिल्में बनाईं – एक कुश्ती प्रतियोगिता पर और दूसरी सर्कस के जानवरों को ट्रेनिंग देने के दौरान फिल्मायी गई। सावे दादा ने इसके बाद कई छोटी फिल्में बनाईं।

ऐसे ही एक छायाकार थे हीरालाल सेन। उनके बारे में पुस्तकों और पत्रिकाओं में अलग-अलग जानकारियां मिलती हैं लेकिन सबमें एक बात साझा है कि वो एक बेहद प्रतिभाशाली फिल्मकार थे और कैमरे का उपयोग कर फिल्म बनाने की कला में माहिर भी। कहा जाता है कि उन्होंने कई फिल्में बनाईं लेकिन उनके भाई के गोदाम में आग लगने की वजह से वो फिल्में नष्ट हो गईं । उस दौर के समाचार पत्रों में छपे विज्ञापनों से इस बात के संकेत मिलते हैं कि हीरालाल सेन ने फिल्में बनाई थीं। इनकी चर्चा इस वजह से आवश्यक है कि इन लोगों के काम ने भारत में फिल्म निर्माण की नींव रखी जिसपर आनेवाले दिनों में एक बहुत मजबूत इमारत खड़ी हो सकी।

दादा साहब फाल्के की फिल्मों को देखकर भारतीय फिल्मकारों का हौसला बहुत बढ़ा और उनको लगने लगा कि वो भी फिल्में बना सकते हैं। दादा साहब की फिल्मों की सफलता और उससे होनेवाली आय को देखकर फिल्मों में पूंजी लगाने वालों का उत्साह भी बढ़ा और कई पूंजीपति फिल्म निर्माण में संभावनाएं तलाश करने लगे। फिल्म निर्माण का क्षेत्र भी वर्तमान महाराष्ट्र से निकलकर बंगाल पहुंच गया। बीसवीं सदी के आरंभिक वर्षों में कलकत्ता में एलफिंस्टन का निर्माण हुआ जिसके स्वामी जमशेद मदन थे। जमशेद मदन ने बाद में सिंगल थिएटर का साम्राज्य खड़ा कर दिया और देश के अलग-अलग हिस्सों में सिनेमाघर बनवाए। उनके बनाए सिनेमाघरों की वजह से हमारे देश में सिनेमा का कारोबार खूब फलने-फूलने लगा। फिल्म संस्कृति का विकास भी हुआ। आरंभिक दिनों में अमेरिका में बनी फिल्में यहां खूब दिखाई जाती थीं। अन्य देशों की फिल्में भी प्रदर्शन के लिए आती थीं। फिर प्रथम विश्वयुद्ध हुआ। इस युद्ध ने फिल्म निर्माण को प्रभावित किया।

भारतीय फिल्मों में आरंभिक दौर में नायिकाएं मिलने में काफी दिक्कत होती थी। दादा साहब का किस्सा बहुत मशहूर है। जब उन्होंने अपनी फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' की कहानी पर काम शुरु किया तो महिला कलाकार मिलने में मुश्किल होने लगी। कई विज्ञापन प्रकाशित हुए लेकिन कोई महिला फिल्म में अभिनय के लिए तैयार नहीं हो रही थी। उस वक्त फिल्म में महिलाओं के काम करने को अच्छा नहीं माना जाता था। दादा साहब फिल्म बनाने के लिए बेचैन हो रहे थे लेकिन उनको अपनी फिल्म के लिए कोई नायिका नहीं मिल रही थी। बेचैनी में उनकी निराशा बढ़ने लगी थी। एक दिन वो अपने घर के पास की दुकान में चाय पीने गए। वहां चायवाले लड़के सालुंके पर नजर पड़ी तो उनकी आंखें चमक उठीं। उन्होंने चायवाले लड़के को अपनी फिल्म में तारामति का रोल निभाने का प्रस्ताव दिया। काफी मशक्कत के बाद वो युवक लड़की का रोल निभाने के लिए तैयार हो गया। इस तरह भारतीय फिल्म में

एक पुरुष ने पहली अभिनेत्री का रोल किया और 'राजा हरिश्चंद्र' फिल्म बन गई। 3 मई 1913 को बांबे के कोरोनेशन हॉल में उसका प्रदर्शन हुआ। फिल्म लगातार बारह दिन चली। 1914 में यह लंदन में प्रदर्शित हुई। दादा साहब फाल्के को दूसरी फिल्म 'भस्मासुर मोहिनी' में नायिका मिल गई। नाटकों में काम करनेवाली कमलाबाई गोखले को उन्होंने अपनी फिल्म में अभिनय के लिए तैयार कर लिया। उस समय कमला बाई को फिल्म में अभिनय के लिए फाल्के साहब ने आठ तोला सोना, दो हजार रुपए और चार साड़ियां दी थीं। जमशेद जी मदन ने सिनेमा के कारोबार को स्थापित करने के बाद फिल्म निर्माण में कदम रखा था। उन्हें भी अपनी फिल्मों में अभिनेत्रियों के रोल के लिए संघर्ष करना पड़ा। उन्होंने इसका एक तोड़ निकाला और एंग्लो इंडियन लड़कियों को अपनी फिल्मों में बतौर अभिनेत्री रोल देना आरंभ कर दिया। उनका ये फॉर्मूला चल निकला। उन्होंने एंग्लो इंडियन लड़कियों के नाम बदलकर उनको भारतीय नाम देना शुरु कर दिया था। उस दौर में ही नितिन बोस, धीरेन गांगुली, बाबूराव पेंटर जैसे दिग्गजों का आगमन हुआ और इन लोगों ने भारतीय फिल्म को एक नई ऊंचाई और फिल्म निर्माण की कला को नया आयाम दिया।

फिर वी. शांताराम का दौर आया जिन्होंने बाबूराव पेंटर से फिल्म निर्माण की बारीकियां सीखीं और भारतीय सिनेमा की राह बदल दी। बहुत कम लोगों को इस बात का पता होगा कि इनका नाम वी शांताराम कैसे पड़ा। बाबूराव पेंटर और बाबूराव पेंढारकर फिल्म 'सुरेखा हरण' की रिलीज के लिए प्रिंट्स की तैयारी में व्यस्त थे। बाबूराम पेंढारकर ने शिवाजी थिएटर में काम करनेवाले शांताराम को बुलाकर पत्रों का उत्तर देने के काम पर लगा दिया। शांताराम ने उत्सुकतावश पूछा कि क्या उनकी अनुपस्थिति में वो अन्य दस्तावेजों पर भी दस्तखत कर सकते हैं? ये सुनते ही बाबूराव ने झट से शांताराम को कहा कि वो पहले दस्तखत तो करके दिखाएं। शांताराम ने कागज का एक टुकड़ा लिया और उस पर लिखा– एस आर वाणकुद्रे। वो कुछ देर तक हस्ताक्षर को देखते रहे, फिर बोले– तुम्हारा नाम अच्छा है लेकिन इसके आखिरी शब्द के उच्चारण में दिक्कत आ सकती है। उन्होंने सलाह दी कि शांताराम अपने नाम के अंत में आनेवाले वाणकुद्रे का प्रथम अक्षर पहले लिखें और उसके बाद शांताराम लिखें । इस तरह से एस आर वाणकुंद्रे बन गए वी. शांताराम।

वी. शांताराम की पुत्री मधुरा जसराज ने उन पर एक बेहद दिलचस्प किताब लिखी है– 'वी. शांताराम, द मैन हू चेंज्ड इंडियन सिनेमा।' इसमें शांताराम की गंधर्व नाटक मंडली, महाराष्ट्र फिल्म कंपनी से लेकर प्रभात फिल्म कंपनी और राजकमल कला मंदिर तक की यात्रा बेहद दिलचस्प तरीके से रखी गई है। 1921 में निर्देशक बाबूराव पेंटर ने 'सुरेखा हरण' के कुछ हिस्सों की एडिटिंग का जिम्मा शांताराम को सौंपा था। शांताराम को इस क्षेत्र का अनुभव नहीं था, इस वजह से उस फिल्म की एडिटिंग कमजोर हो गई। ये देखकर बाबूराव नाराज हो गए और फिर से एडिटिंग करवाई गई । शांताराम को यहीं से एडिटिंग और कैमरा वर्क के महत्व के बारे में सीखने मिला। बाबूराव पेंटर के साथ काम करते हुए शांताराम को लगा कि वो अब खुद ही फिल्में बना भी सकते हैं तो उन्होंने खुद की फिल्म प्रोडक्शन कंपनी बना ली– प्रभात प्रोडक्शंस। वी. शांताराम की पहली फिल्म थी 'दुनिया ना माने'। उस फिल्म से शांताराम का हौसला बढ़ा और बांबे पहुंच गए ।

जब मूक फिल्मों का दौर खत्म होने लगा तो शांताराम ने नई तकनीक को बहुत जल्दी अपनाया जबकि बाबूराव पेंटर उसको लेकर उदासीन हो गए। उस दौर में उन्होंने 'अमृत मंथन', 'अमर ज्योति', 'दुनिया ना माने', 'पड़ोसी', 'आदमी' जैसी बेहद सफल फिल्में बनाकर पूरी दुनिया में अपना लोहा मनवा लिया । तकनीक से उन्हें इतना प्यार था कि 1933 में फिल्म 'सैरंध्री' की कलर प्रोसेसिंग के लिए वो जर्मनी गए। वहां से उसे खरीदकर भारत लाए। इस तरह से भारत की पहली रंगीन फिल्म बनी । फिल्मों की शूटिंग में प्राकृतिक दृश्यों को फिल्माने के लिए शांताराम मचलते रहते थे। जब वो फिल्म 'दो आंखें बारह हाथ' बना रहे थे तो फिल्म की शूटिंग के दौरान शांताराम को एक बिगड़ैल सांड को काबू करना था । नैचुरल सीन को कैमरे में कैद करने के चक्कर मे शांताराम की एक आंख बुरी तरह से चोटिल हो गई। लंबे समय बाद उनकी आंखों की रोशनी लौटी। वी. शांताराम मानते थे कि फिल्म समाज सुधार का बेहद कारगर औजार है। उनकी कई फिल्मों में इस तरह के संदेश हैं । 1950 में वी. शांताराम ने दहेज फिल्म बनाई थी। इस फिल्म से ही ललिता पवार को दुष्ट सास के रूप में पहचान मिली। इससे पहले उन्होंने एक और बेहतरीन फिल्म बनाई 'डॉ. कोटनीस की अमर कहानी'। महाराष्ट्र के शोलापुर के डॉ. द्वारकानाथ कोटनिस चीन – जापान युद्ध के समय 1938 में डॉ. के एक दल के साथ चीन गए थे। जब चीन के सैनिक महामारी के शिकार हो रहे थे और उसको बचाने के लिए कोई टीका नहीं था। डॉ. कोटनीस टीका बनाना चाहते थे। उनके पास टीका को टेस्ट करने के लिए कोई उपलब्ध नहीं था। वो इसको खुद पर टेस्ट करते थे। कई टेस्ट के बाद उनको सफलता मिली। उनके टीके के उपयोग से सैनिक ठीक होने लगे। खुद पर टीका को टेस्ट करने से उनकी हालत खराब होती चली गई और अंततः निधन हो गया। मशहूर लेखक ख्वाजा अहमद अब्बास ने डॉ.कोटनीस के चीन में बिताए दिनों पर उनके साथी के हवाले से एक उपन्यास लिखा, 'वन हू डिड नॉट कम बैक'। उन्होंने ये किताब वी. शांताराम को पढ़ने के लिए दी। किताब पढ़ते ही शांताराम ने इस पर फिल्म बनाना तय कर लिया। डॉ.कोटनीस की भूमिका खुद निभाई। डॉ.कोटनीस की प्रेमिका, जो बाद में उनकी पत्नी बनती हैं, की भूमिका के लिए जयश्री को फाइनल कर लिया। लेकिन जयश्री की आंखें बड़ी थीं और चीनी लड़कियों की आंखें छोटी होती हैं। उनको चीनी दिखाने के लिए जयश्री का स्पेशल मेकअप किया गया ताकि आंखें छोटी दिखें। मेकअप से प्रभाव पैदा

करने का यह अनूठा उदाहरण है। आज जब महामारी के दौर में चीन और उसकी कारगुजारियों पर चर्चा होती है तो शांताराम की ये फिल्म बरबस याद आ जाती है। वो समय से आगे के फिल्मकार थे।

उसी दौर में हिमांशु राय और देविका रानी के योगदान को रेखांकित किया जाना चाहिए। इन दोनों ने फिल्म निर्माण से लेकर अदायगी तक में भारतीय फिल्मों का डंका देश-विदेश में बजाया। किश्वर देसाई ने अपनी पुस्तक 'द लाइफ एंड टाइम्स आफ देविका रानी' में हिमांशु राय की फिल्म 'कर्मा' के बारे में लिखा है। ये फिल्म 1933 में लंदन में रिलीज हुई थी और इसका निर्माण भारत, ब्रिटेन और जर्मनी के निर्माताओं ने संयुक्त रूप से किया था। इसके लीड रोल में हिमांशु राय और देविका रानी थीं। 68 मिनट की इस फिल्म को देखने के लिए उस वक्त लंदन का पूरा अभिजात्य वर्ग उमड़ पड़ा था। ऑक्सफोर्ड स्ट्रीट पर इस फिल्म का एक बड़ा पोस्टर लगा था जिसमें सिर्फ देविका रानी की तस्वीर थी। इस फिल्म के बारे में लंदन के समाचारपत्रों में कई प्रशंसात्मक लेख छपे थे। उसके बाद भी कई हिंदी फिल्मों को विदेश में सराहना मिली। इससे परतंत्र भारत के फिल्मकारों और कलाकारों का स्वयं पर भरोसा भी गाढ़ा हुआ।

जब देश स्वाधीन हुआ तो भारतीय फिल्मों, खासतौर पर हिंदी फिल्मों को लेकर पूरी दुनिया में उत्सुकता का माहौल बना। फिल्म इतिहासकारों के मुताबिक इसकी वजह ये थी कि दुनिया के अलग-अलग देशों के लोग भारत के बारे में जानना चाहते थे। 1952 में दिलीप कुमार और निम्मी की फिल्म आई थी 'आन'। इस फिल्म को योजनाबद्ध तरीके से दुनिया के 28 देशों में रिलीज किया गया था। दुनिया की 17 भाषाओं में इस फिल्म के सबटाइटल तैयार किए गए था। लंदन में इस फिल्म के प्रीमियर पर ब्रिटेन के उस समय के प्रधानमंत्री लॉर्ड एटली के उपस्थित रहने का उल्लेख कई जगहों पर मिलता है। अंग्रेजी में इसको 'सैवेज प्रिंसेस' तो फ्रेंच में 'मंगला, फी दिज आंद' (मंगला, भारत की लड़की) के नाम से रिलीज किया गया था। इस फिल्म में निम्मी ने जिस चरित्र को निभाया था, उसका नाम मंगला था। इस फिल्म को कुछ समय बाद जापान में भी रिलीज किया गया और वहां के दर्शकों ने भी इसको खूब पसंद किया। राजकपूर की फिल्म 'आवारा' हिंदी में 1951 में रिलीज हो गई थी। 1954 में मास्को और लेनिनग्राद में भारतीय फिल्म फेस्टिवल में राजकपूर की इस फिल्म का प्रदर्शन हुआ। इस फिल्म को दर्शकों ने खूब पसंद किया और वहां के अखबारों में राजकपूर के अभिनय की जमकर प्रशंसा हुई। राजकपूर का जादू ऐसा चला कि इस फिल्म को रूस के अन्य सिनेमाघरों में भी प्रदर्शित किया गया। फिल्म इतिहासकारों का मानना है कि रूस और चीन में राजकपूर की फिल्में इस वजह से दर्शकों को पसंद आ रही थीं कि वो समाजवादी विचारधारा के नजदीक थीं। पर राजकपूर खुद कह चुके हैं कि उनकी फिल्में विचार या विचारधारा को ध्यान में रखकर नहीं बनाई जाती हैं। उनकी फिल्मों में दर्शकों की संवेदना का ध्यान रखा जाता है।

भारतीय फिल्मों को कई गीतकारों, संगीतकारों, गायकों और निर्देशकों ने अपनी कला से समृद्ध किया। लता मंगेशकर नाम की एक ऐसी गायिका फिल्मी दुनिया में आईं जिन्होंने अपनी गायकी से पीढ़ियों को प्रभावित किया, पूरी दुनिया में भारतीय फिल्मों को एक पहचान दी। लता मंगेशकर की बात करते समय हमें वीर सावरकर को नहीं भूलना चाहिए। लता मंगेशकर जब तेरह साल की हुईं तो उनके परिवार पर वज्रपात हुआ। उनके पिता गुजर गए। अब परिवार के सामने कई तरह के संकट खड़े हुए। इतनी कम उम्र में लता मंगेशकर के कंधे पर पूरे परिवार की जिम्मेदारी आ गई। पिता की मृत्यु के बाद लता मंगेशकर बहुत परेशान रहने लगी थीं। संघर्ष के उस दौर में मंगेशकर परिवार को उनके पारिवारिक मित्र वीर सावरकर का साथ मिला था। यतीन्द्र मिश्र ने अपनी पुस्तक में लता मंगेशकर की जिंदगी को अहम मोड़ देने के वीर सावरकर के योगदान को रेखांकित किया है। अपनी किशोरावस्था में लता मंगेशकर ने समाज सेवा करने की ठान ली थी। अपने इस निर्णय के बारे में लता ने वीर सावरकर से चर्चा की थी। वीर सावरकर ने ही उन्हें समझाया था कि तुम ऐसे पिता की संतान हो जिसका शास्त्रीय संगीत और कला में शिखर पर नाम चमक रहा है। अगर देश की सेवा ही करनी है तो संगीत के मार्फत समाजसेवा करते हुए भी उसको किया जा सकता है। यहीं से लता मंगेशकर का मन बदला जो उन्हें संगीत की कोमल दुनिया में बड़े संघर्ष की तैयारी के लिए ले आया। हम भारतीयों को सावरकर का ऋणी होना चाहिए कि उन्होंने एक बड़ी प्रतिभा को खिलकर सफल होने का जज्बा दिया। कल्पना कीजिए कि अगर सावरकर ने लता मंगेशकर को ये सलाह न दी होती तो क्या होता।

बाद में फिल्मों की राह आसान होती चली गई। फिल्मों में अथाह पूंजी आ गई। हिंदी फिल्मों का केंद्र बांबे और दक्षिण भारतीय फिल्मों का केंद्र मद्रास और हैदराबाद बन गया। केरल में यथार्थवादी फिल्मों का दौर चला। तकनीक भी बेहतर हुई। अब तो अभिनय को छोड़कर तकनीक से कुछ भी संभव होता जा रहा है। नायक-नायिकाओं को कम उम्र का दिखाना हो, किसी की आवाज सुरीली करनी हो, समंदर का दृश्य दिखाना हो सब संभव है। कैमरा और फोटोग्राफी के क्षेत्र में तो क्रांतिकारी बदलाव आ गया है। पहले तो मूविंग शॉट्स के लिए इतनी मशक्कत करनी होती थी कि निर्देशक परेशान हो जाता था। वी. शांताराम तो कई बार बैलगाड़ी के अगले हिस्से में कैमरा बांधकर पैनोरमा शूट करते थे। अब वो काम जिब से आसान से संभव हो गया है। मुगले आजम के शूट को याद करिए कितने मुश्किल शॉट्स बगैर तकनीक के आधार पर शूट किए गए थे। अब तो एडिट टेबल पर कई तरह के चमत्कार किए जा सकते हैं। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारे पूर्वज फिल्मकारों ने तमाम दिक्कतों के बावजूद वैश्विक पटल पर भारतीय फिल्मों का परचम लहराया था। स्वाधीनता के अमृत महोत्सव वर्ष में उन पूर्वज फिल्मकारों की कला के समक्ष सर झुक जाता है।

*** (लेखक दैनिक जागरण में एसोसिएट एडिटर हैं और राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से सम्मानित हैं)**

स्वतंत्रता पूर्व भारतीय सिनेमा की आधारशिला स्थापना में सिनेमॅटोग्राफी का योगदान (1896-1947)

*** डॉ. श्रीकांत सिंह**
**** आशीष भवालकर**

शोध सार : भारत में फिल्म उद्योग उस समय उभरा जब स्वतंत्रता आंदोलन चरम पर था । 1914 से 1918 के बीच प्रथम विश्व युद्ध, 1939 से 1945 तक द्वितीय विश्वयुद्ध और 1943 में बंगाल में भीषण अकाल की घटनाएं भी घट रही थीं। आशय यह है कि भारी पूंजी निवेश के साथ तकनीकी संसाधनों पर आश्रित एक कलात्मक माध्यम के रूप में सिनेमा को विकसित होने के लिए परिस्थितियां अनुकूल नहीं थीं। इसके बावजूद भारतीय सिनेमा न केवल फला-फूला अपितु उसने स्वतंत्रता संग्राम एवं सामाजिक सरोकारों के प्रति अपनी रचनात्मक भागीदारी सुनिश्चित कर भारतीय सिनेजगत के स्वर्ण युग की बुनियाद भी तैयार कर ली। कला, विज्ञान एवं व्यवसाय के सुंदर समन्वय का प्रतीक सिनेमा उत्कृष्ट विषयवस्तु एवं तकनीकी कौशल के दम पर निरंतर निखरता गया । ब्रिटिश शासन के अधीन गुलाम भारत के फिल्मकारों की सोच सदैव स्वतंत्र रही। वह निरंतर भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों के अनुरूप रचनाकर्म करने के लिए प्रतिबद्ध रहे। परिणामस्वरूप स्वतंत्रता प्राप्त होते ही अगले कुछ वर्षों में भारतीय सिनेमा को वे उपलब्धियां प्राप्त हुईं जिनके कारण इसे भारतीय सिनेमा का स्वर्ण युग कहा जाने लगा। निःसंदेह सिनेमा जगत के निर्माता एवं निर्देशकों का योगदान अतुलनीय और असंदिग्ध है जिसके लिए उन्हें पर्याप्त सम्मान भी प्राप्त हुआ है, किंतु भारतीय सिनेमा के स्वर्ण युग की आधारशिला रखने वाले तकनीकी रचनाकारों के योगदान की पर्याप्त चर्चा भी नहीं की गई। स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर स्वतंत्रता पूर्व भारतीय सिनेमा की आधारशिला स्थापना (1896-1947) में तकनीकी रचनाकारों के दल के महत्वपूर्ण व्यक्तियों के योगदान में 'सिनेमॅटोग्राफर' के योगदान का समझाते हुए यह शोध आलेख प्रस्तुत है-

मुख्य शब्द : सिनेमा, स्वतंत्रता पूर्व भारतीय सिनेमा, मूक फिल्म, सिनेमॅटोग्राफी, सिनेमॅटोग्राफर

प्रस्तावना

मनुष्य सदैव आपबीती या आँखों देखी को व्यक्त करने के लिए आतुर रहा है, जिससे मानव जाति में आपसी संवाद के विविध तरीके निरंतर विकसित होते रहे। परस्पर संवाद के लिए बोली और फिर भाषा के उदय काल से ही मानव समाज में कथा सुनने और सुनाने की परंपराएं स्थापित हुईं जो समय के साथ समृद्ध होती रही हैं। स्थिर चित्रों की काल्पनिक, धार्मिक, ऐतिहासिक एवं दन्तकथाओं की विषयवस्तु ने सदैव दर्शकों को प्रभावित किया। विज्ञान और तकनीक के योगदान से चित्र का एक अन्य रूप वर्ष 1826 में 'छायाचित्र' सामने आया और इसी का और अधिक विकसित रूप 1892 में 'चलचित्र' के रूप में हमारे सामने आया।

चलचित्र के आविष्कार से उत्साहित होकर रचनात्मक व्यक्तियों ने विविध कलाओं के अवयवों और मुख्य रूप से कथा प्रस्तुतिकरण की एक सशक्त विधा 'नाटक' के तत्वों के सम्मिश्रण से एक नया अवतार प्रस्तुत किया जिसे हम सिनेमा के नाम से जानते हैं जिसने पारंपरिक किस्सागोई के स्वरूप को आमूलचूल बदलकर जनमानस को तीव्र रूप में उद्वेलित किया।

यद्यपि आयातित सिनेमॅटोग्राफिक तकनीक की मदद से भारतीय फिल्मकारों ने भारत में सिनेमा का श्रीगणेश किया किन्तु पहली कथात्मक फिल्म के लिए विशुद्ध रूप से भारतीय ऐतिहासिक एवं पौराणिक परिवेश आधारित कथावस्तु का चुनाव प्रारंभ से ही आत्मनिर्भरता की प्रतिबद्धता को उजागर करता है। भारत की पहली कथा फिल्म रामचंद्र गोपाळ 'दादासाहेब' तोरणे द्वारा प्रस्तुत 'पुंडलिक ' थी या धुंडिराज गोविन्द फाळके उपाख्य दादासाहब फाळके द्वारा प्रस्तुत राजा हरिश्चंद्र , इस चर्चित बहस का भी समाधान इस दृष्टि से किया जाता है कि यद्यपि पुंडलिक फिल्म, राजा हरिश्चंद्र से एक वर्ष पहले प्रदर्शित हो गई थी किंतु उसका कैमरामैन विदेशी था। ठीक इसके विपरीत राजा हरिश्चंद्र फिल्म के तकनीशियन भारतीय थे अतः भारत की पहली फिल्म निःसंदेह रूप से राजा हरिश्चंद्र ही मानी जानी चाहिए, यह

* विभागाध्यक्ष, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया विभाग, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल
* * शोधार्थी, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया विभाग, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल

आत्मनिर्भरता के तत्व का महत्व बताता है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में स्वदेशी के आग्रह का जनमानस पर गहरा प्रभाव था, अतः सिनेमा की आधारशिला में भी आत्मनिर्भरता का तत्व स्वाभाविक रूप से जुड़ना ही था। आत्मनिर्भरता की दृष्टि से विशुद्ध भारतीय तकनीकी नवाचारों एवं उपलब्धियों का महत्वपूर्ण योगदान था किन्तु इसकी व्यापक चर्चा अपेक्षाकृत उपेक्षित ही रही।

भारतीय सिनेमा भी शेष विश्व के अधिकांश अन्य सिनेमा की तरह विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संदर्भों और चुनौतियों का जवाब देते हुए समय के साथ विकसित हुआ है। स्वतंत्रता पूर्व भारतीय सिनेमा की विशिष्टता और विशेष अवधारणाओं को समझने के लिए भारतीय फिल्मों को आकार देने वाली व्यक्तिगत प्रेरणाओं एवं तकनीकी उपलब्धियों के योगदान को रेखांकित करने की दृष्टि से भारत में पहली बार चलचित्र प्रदर्शन के वर्ष 1896 से स्वतंत्रता प्राप्ति के वर्ष 1947 तक का विवरण इस शोध पत्र में प्रस्तुत है। यद्यपि इस कालखंड में स्टूडियो सिस्टम भी भारत में आकार ले चुका था किन्तु इसकी व्यापकता एवं इस शोध पत्र की सीमित शब्द सीमा को ध्यान में रखते हुए अत्यंत संक्षेप में स्थान दिया गया है।

उद्देश्य

1. स्वतंत्रता पूर्व भारत में स्थिर चित्र से चलचित्र की तकनीकी विकास यात्रा के विविध चरणों को जानना।

2. भारतीय सिनेमा जगत में फिल्म निर्माण तकनीक में स्वदेशीकरण की भावना एवं तत्कालीन परिस्थितियों को समझना।

शोध प्रश्न

1. स्वतंत्रता पूर्व भारत में फिल्म निर्माण की तकनीकी आधारभूत संरचना (infrastructure) किस प्रकार विकसित हुई?

2. स्वतंत्रता पूर्व भारत में ऐसे कौन से तकनीकी नवाचार थे जिन्होंने भारतीय सिनेमा के स्वर्ण युग की स्थापना की बुनियाद रखी?

3. भारतीय सिनेमा के स्वर्ण युग की स्थापना की आधारशिला रखने में भारतीय सिनेमॅटोग्राफरों का क्या योगदान था?

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र के विषयानुकूल ऐतिहासिक अनुसंधान पद्धति का चुनाव किया गया है। करलिंगर ने "ऐतिहासिक अनुसंधान को अतीत की घटनाओं, विकास क्रमों और विगत अनुभवों के सम्बन्ध में प्रमाणों की वैधता का सावधानीपूर्वक परीक्षण एवं सावधानीपूर्वक व्याख्या" कहा है। (करलिंगर,1972, 673)

यह अध्ययन भारतीय सिनेमा के अतीत की घटनाओं, तकनीकी विकास क्रम तथा विगत अनुभूतियों का अध्ययन है।

वैचारिक और सैद्धांतिक रूपरेखा

प्रोफेसर चार्ल्स ऑल्टमैन द्वारा संशोधित एवं प्रस्तुत की गई सूची के अनुसार सिनेमा का अध्ययन विविध दृष्टिकोणों से किया जा सकता है। इस शोध पत्र में उपरोक्त सूची में प्रथम तीन दृष्टिकोण के अनुसार तथ्यों का प्रस्तुतीकरण किया गया है :

1. सिनेमा के तकनीकी इतिहास के प्रथम अन्वेषक एवं तकनीकी नवाचारों का अध्ययन।

2. सिनेमाई तकनीकों का ऐतिहासिक रूप से अध्ययन जैसे प्रथम क्लोज-अप का इस्तेमाल, किसी काल खंड में फिल्म निर्माताओं के लिए क्या तकनीकी विकल्प उपलब्ध थे? इत्यादि।

3. व्यक्तित्व का अध्ययन (स्टूडियो दिग्गज या प्रमुख हस्ती, सितारे आदि)।

(ऑल्टमैन, 1977, 3 से 6)

तथ्य संकलन

इस शोध पत्र में प्रस्तुत विभिन्न ऐतिहासिक पहलुओं का विश्लेषण करने के लिए टेक्सास ए एंड एम विश्वविद्यालय पुस्तकालय की वेबसाइट पर उपलब्ध संदर्भानुसार, सिनेमा अध्ययन में स्वयं फिल्म या अन्य सहायक सामग्री जैसे प्रचार हेतु विज्ञापन, पोस्टर, पैम्फलेट, स्थिर छायाचित्र, पांडुलिपियां, छायाकारों के सर्वेक्षण, समकालीन पत्रिकाओं के लेख, समाचार पत्रों या पत्रिकाओं द्वारा आयोजित निर्देशकों एवं अन्य सहायकों के साथ साक्षात्कार इत्यादि उस युग के दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करते हैं अतः प्राथमिक स्रोत हो सकती हैं।

द्वितीयक स्त्रोत के रूप में पुस्तकें, समाचार पत्र , पत्रिकाएं एवं वेबसाइट से प्राप्त सामग्री शामिल है। इस प्रकार इस शोध पत्र में तथ्यों का संकलन प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्रोतों पर आधारित है।

संकलित तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या

1. विश्व में प्रथम बार चलचित्र का प्रदर्शन

जब संसार में पहली बार चलचित्र का प्रदर्शन हो तो उसमें भारत का नाम भी आना ही चाहिए, ऐसा अद्भुत संयोग हमारे भाग्य में था। फ्रांस के ल्यूमियेर ब्रदर्स ने 'सिनेमॅटोग्राफ' का आविष्कार किया और उससे तैयार की गयी दस लघु फिल्मों को 28 दिसंबर 1895 को पेरिस के बुलेवर्ड डेस क्यूकिन्स के पास ग्रांड कैफे के तहखाने के एक बड़े कमरे में प्रदर्शित किया जिसका नाम था 'सालो दे इंडिस' अर्थात भारतीय सभागार। संयोगों का यह क्रम निरन्तर बना रहा।

(जगमोहन, 1995, 16)

2. चलचित्र की ओर प्रारम्भिक भारतीय कदम

महादेव गोपाल पटवर्धन ने अपने एक इंजीनियर दोस्त मदनराव पितळे की मदद से 1885 में पहली बार अंधेरे कक्ष में एक शक्तिशाली प्रकाश स्रोत के समक्ष कांच की स्लाइडों पर चित्रित छवियों को जब एक उत्तल लेंस से होते हुए किसी दीवार या पर्दे पर प्रक्षेपित किया तो मित्रगण मंत्रमुग्ध हो गए। मराठी रामायण में वर्णित एक असुर (राक्षस) जिसका बल 100 असुरों के बराबर था अर्थात 'शम्भरासुर' के नाम और दीपक के एक पर्यायवाची शब्द 'खरोलिका' को मिलाने से इस यंत्र का भारतीय नाम 'शांबरिक खरोलिका' पड़ा। यूरोप और अमेरिका में यह मैजिक लैंटर्न अर्थात जादुई लालटेन के नाम से प्रचलित था। "भारतीय दर्शकों की रुचि को ध्यान में रखते हुए भारतीय पौराणिक व्यक्तित्वों को कांच की पट्टियों पर हाथ से खींची गई रेखाओं में दिखाना शुरू किया गया।" (पेटकर, 2014, 18)

पटवर्धन बंधुओं द्वारा पर्याप्त तैयारियों के बाद 'शांबरिक खरोलिका' का आम जनता के लिए पहला शो 30 सितंबर, 1892 को आयोजित किया गया। शांबरिक खरोलिका में प्रयोग की गई स्लाइड्स के बारे में जानकारी देते हुए पटवर्धन परिवार के वंशज सुनील पटवर्धन बताते हैं कि 'शांबरिक खरोलिका' में प्रयुक्त की गई स्लाइड्स, यूरोप और अमेरिका में प्रचलित मैजिक लैंटर्न में प्रयोग की गई स्लाइड्स से भिन्न प्रकार की थी। विदेशी स्लाइड्स में केवल काँच की एक सतह पर चित्रण किया जाता था, वहीं 'शांबरिक खरोलिका' में एक स्लाइड में ही 2 या 3 पतले कांच की मिनिएचर पेंटिंग युक्त सतह हुआ करती थी। एक ही स्लाइड की इन अलग-अलग सतहों को जब परस्पर सरकाया जाता था तो निर्जीव चित्रों में गति का आभास होता था। यह बहुत कुछ एनिमेशन के प्रभाव जैसा था। अर्थात 'शांबरिक खरोलिका' यूरोप और अमेरिका में प्रचलित मैजिक लैंटर्न की तुलना में अधिक विकसित था।

3. भारत में प्रथम बार चलचित्र का प्रदर्शन

व्यापारिक वर्चस्व की दृष्टि से ल्यूमियेर ब्रदर्स ने अपने तकनीशियन मारियस सेस्टियर के जरिए ऑस्ट्रेलिया के लिए फिल्म पैकेज रवाना किया। हवाई जहाज को बीच बंबई रुकना था। सेस्टियर को बंबई आने पर पता चला कि ऑस्ट्रेलिया जाने वाले हवाई जहाज में खराबी के चलते उन्हें कुछ दिन ठहरना होगा। मॉरिस के दिमाग में आया कि जो काम ऑस्ट्रेलिया जाकर करना है, उसे बंबई में भी किया जा सकता हैं। अतः वह 6 जुलाई 1896 को अगले दिन के लिए एक विज्ञापन छपवाने टाइम्स ऑफ इंडिया के कार्यालय गया। 'दुनिया का अजूबा' नाम से प्रचारित इस विज्ञापन को पढ़कर बंबई के कोने-कोने से दर्शकों का हुजूम वॉटसन होटल के लिए उमड़ पड़ा। एक रुपए की प्रवेश दर से लगभग 200 दर्शकों ने 7 जुलाई 1896 की शाम 20वीं सदी के इस चमत्कार से साक्षात्कार किया। इस तरह संयोगवश 'सिनेमॅटोग्राफ' के आविष्कार का शीघ्र लाभ भारत को प्राप्त हो गया।

4. भारतीय कलाकारों की चलचित्र से प्रथम अनुभूति

सम्पूर्ण विश्व और भारत के लिए सिनेमा एक नई तकनीकी विधा थी। अतः इसे विकसित करने में सर्वप्रथम व्यक्तिगत प्रयास ही प्रारंभ हुए। इसमें संस्थागत या शासन प्रायोजित व्यवस्थाओं की कोई भूमिका नहीं थी। धीरे-धीरे जब इसका व्यापारिक एवं जनसंचार में उपयोग उजागर होने लगा तब बड़े स्तर पर संगठित, व्यापारिक एवं राज्याश्रय आधारित समर्थन प्राप्त होने लगा। किन्तु परतंत्र भारत में विदेशी शासकों के संकुचित दृष्टिकोण और स्वतंत्रता के बाद प्रारंभ के कुछ वर्षों तक अन्य महत्वपूर्ण प्राथमिकताओं के कारण सिनेमा का विकास केवल निजी व्यक्तिगत प्रयासों पर ही आश्रित रहा। अतः उन भारतीय महापुरुषों के व्यक्तिगत प्रयासों को जानना अत्यंत आवश्यक है जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों में इस नवीन कला और तकनीक को निरंतर नवाचारों के बल पर समृद्ध किया। इन्हें हम श्वेत-श्याम मूक युग की नींव के पत्थर कहकर सम्मानित करते हैं।

4.1 हरीशचन्द्र सखाराम भाटवड़ेकर

वॉटसन होटल में आयोजित लघु फिल्मों के प्रदर्शन में अनुभवी छायाकार हरीशचन्द्र सखाराम भाटवड़ेकर जो सावे दादा के नाम से प्रसिद्ध थे , शामिल थे। वे इस अद्भुत कला माध्यम के बारे में बहुत उत्सुक हो गए। उन्होंने सन् 1898 में इंग्लैंड के रिले भाइयों से 21 गिनी की कीमत का एक कैमरा यानी 'सिनेमॅटोग्राफ़' खरीदा और स्थानीय दृश्यों को फिल्माने लगे। सावे दादा ने नवंबर 1899 में मुंबई के प्रसिद्ध हैंगिंग गार्डन में उस समय के दो मशहूर पहलवानों पुंडलीक दादा और कृष्णा नाहवी के बीच हुए कुश्ती के मुक़ाबले को फिल्माया। उनकी दूसरी फिल्म सर्कस के बंदरों की ट्रेनिंग पर आधारित थी। इन दोनों फिल्मों को उन्होंने डेवलपिंग के लिए लंदन भेजा। सन् 1899 में विदेशी फिल्मों के साथ जोड़कर उनका प्रदर्शन किया। इस प्रकार सावे दादा पहले भारतीय हैं जिन्होंने अपने बुद्धि कौशल से स्वदेशी लघु फिल्मों का निर्माण कर प्रथम निर्माता-निर्देशक तथा प्रदर्शक होने का श्रेय प्राप्त किया।

सावे दादा के करिश्मों का सिलसिला यहां आकर ठहरता नहीं है। दिसंबर 1901 में गणित में विशेष योगदान के लिए प्रशंसित छात्र आर.पी. परांजपे के कैम्ब्रिज से भारत वापसी पर भव्य स्वागत एवं 1902 में दिल्ली दरबार में एडवर्ड सप्तम के राज्याभिषेक का जश्न का फिल्मांकन करते हुए एच.एस.भाटवड़ेकर ने भारतीय डॉक्यूमेंट्री शैली फिल्म की आधारशिला रखी।

भाटवड़ेकर को हमेशा भारत के अग्रणी और प्रथम वृत्तचित्र फिल्म निर्माता के रूप में याद किया जाएगा। जगमोहन लिखते हैं, "भारत में तथ्यपरक फिल्मों का जनक होने का श्रेय इन्हीं अग्रदूत हरीशचंद्र सखाराम भाटवड़ेकर को दिया जाना चाहिए। क्योंकि यही तथ्यपरक फिल्में और न्यूजरील वृतचित्रों (डॉक्यूमेंट्री) की

पूर्वज थीं। यह फिल्में कल्पना पर नहीं, तथ्यों पर आधारित थीं।" (जगमोहन, 1995, 16)

4.2 हीरालाल सेन

ठीक इन्हीं दिनों 1897 में प्रोफेसर स्टीवेन्सन ने कोलकाता के स्टार थिएटर में एक ओपेरा फिल्म 'द फ्लावर ऑफ पर्शिया' का प्रदर्शन किया। इस फिल्म से प्रेरित होकर 1898 में फोटोग्राफर हीरालाल सेन ने उस शो के दृश्यों की एक फिल्म बनाई और इसका शीर्षक 'द डान्सिंग सीन ' रखा। (रॉय, 2021)

लेकिन सेन केवल नाटकों पर फिल्में बनाकर संतुष्ट नहीं थे। 1904 में उन्होंने बंगाल के विभाजन के विरोध में एक सार्वजनिक रैली की विशालता को सेलुलॉइड पर उतारने का फैसला किया। कोलकाता के टाउन हॉल में 22 सितंबर 1905 को स्वदेशी के प्रचार के लिए और बंगाल के विभाजन के विरुद्ध एक जोरदार प्रदर्शन हुआ। इसे हीरालाल सेन ने फिल्मांकित करके एक डॉक्यूमेंटरी फिल्म बनाई। आज इसे व्यापक रूप से भारत का पहला राजनीतिक वृत्तचित्र माना जाता है और यह सेन के करियर का उच्च बिंदु था।

अब तक छोटी-मोटी घटनाओं एवं थिएटर के मंचन का फिल्मांकन तो हो रहा था पर मौलिक कथाचित्र बनाने की कोई कोशिश नहीं की गयी थी।

4.3 रामचंद्र गोपाळ दादासाहब तोरणे

बंबई में जब भी विदेशी फिल्में लगतीं तो एक मध्यमवर्गीय परिवार में 18 अगस्त 1890 को जन्मे रामचंद्र गोपाल तोरणे उन्हें अवश्य देखने जाते थे। उनको हमेशा लगता कि ऐसी कोई फिल्म भारत में क्यों नहीं बनती। यही उनकी प्रेरणा बनी। 21 साल की उम्र में तोरणे ने अपनी खुद की फीचर फिल्म बनाने का विचार किया। उन्होंने अपने एक दोस्त नानासाहब चित्र को पैसे देने के लिए तैयार कर लिया। रामराव कीर्तिकार द्वारा एक हिंदू संत पर रचित मराठी नाटक 'श्री पुंडलीक' के एक जगह कैमरा लगाकर नॉनस्टॉप रिकार्डिंग की योजना बनी। जब चित्रे को पता चला कि मैसर्स बॉर्न एंड शेफर्ड (Bourne & Shepherd) कंपनी के पास एक सिने कैमरा है तो वह व्यक्तिगत रूप से उनसे मिलने गए और उन्हें विलियमसन कैमरा कच्ची फिल्म और एक फोटोग्राफर प्रदान करने के लिए 1,000 रुपये की राशि प्रदान करने के लिए राजी किया। कंपनी ने ब्रिटिश कैमरामैन जिनका नाम जॉनसन था, उपलब्ध कराया। पहले तो एक जगह कैमरा लगाकर नॉनस्टॉप रिकार्डिंग की गई किन्तु तोरणे इस तरीके से असन्तुष्ट थे, अतः उन्होंने प्रत्येक दृश्य अलग-अलग रिकॉर्ड करते हुए बाद में उसे आपस में जोड़ देने की योजना बनाई और वे सफल भी हुए। (रंगूनवाला,1975,28)

अतः कहा जा सकता है कि यह भारत में फिल्म सम्पादन का प्रथम प्रयास था। 18 मई 1912 को रिलीज़ हुई फिल्म 'श्री पुंडलिक', गिरगांव के कोरोनेशन सिनेमैटोग्राफ थिएटर में दो हफ्ते तक चलती रही।

4.4 धुंडिराज गोविन्द फालके

धुंडिराज गोविन्द फाल्के उपाख्य दादा साहब फाल्के ने 1910 में मुंबई में 1902 में निर्मित फ्रेंच निर्देशक फर्डिनेंड ज़ेका (Ferdinand Zecca) की मूक फिल्म 'द लाइफ ऑफ क्राइस्ट' देखने के बाद कई अन्य व्यवसायों जैसे फोटोग्राफी, प्रिंटिंग, मेकअप और जादू के अनुभव को इस नई कलात्मक विधा में आजमाने का संकल्प ले लिया। फालके खुद स्वदेशी आन्दोलन के हिस्सा थे और तिलक के जीवन से प्रभावित थे। जब उन्होंने लाइफ ऑफ़ क्राइस्ट देखी तो उन्हें लगा कि हम अपने भारतीय बिम्ब कब परदे पर देखेंगे। ये विदेशी कल्पनाएँ हमारी चेतना को धीरे-धीरे नष्ट कर देंगी।

परेश मोकाशी अपनी फिल्म में दिखाते हैं कि फाल्के 1912 में उपकरण खरीदने के लिए लंदन गए। साथ ही फ्रांस, जर्मनी और संयुक्त राज्य अमेरिका से फिल्म निर्माण और प्रदर्शन के लिए आवश्यक उपकरण तत्कालीन ह्यूटन बुचर, ज़ीस टेसर और पाथे सहित निर्माताओं से आयात किये। इसमें कैमरा, नेगेटिव और पाज़िटिव फिल्म स्टॉक, संपादन मशीन और फिल्म प्रोजेक्टर शामिल थे। कैबाउर्न ने विलियमसन कैमरा, एक फिल्म परफोरेटर, प्रोसेसिंग और प्रिंटिंग मशीन जैसे यंत्रों तथा कच्चा माल का चुनाव करने में मदद की। (मोकाशी, 2009)

फाल्के ने नासिक के अपने बचपन के दोस्त त्र्यंबक बी. तेलंग को स्टिल फोटोग्राफी और विलियमसन कैमरे के संचालन में प्रशिक्षित किया और उन्हें फिल्म का छायाकार बनाया।

फाल्के ने मुंबई के दादर में एक स्टूडियो स्थापित किया, जहां उन्होंने राजा हरिश्चंद्र के एक हिस्से की शूटिंग की। फिल्म के आउटडोर सीन पुणे के पास एक गांव में शूट किए गए। फिल्म को पूरा करने में फाल्के को सात महीने और 21 दिन लगे। इस दौरान उनकी पत्नी ने कलाकारों और क्रू की सभी जरूरतों को पूरा किया। राजा हरिश्चंद्र का वास्तव में प्रीमियर 21 अप्रैल 1913 को ओलंपिया थिएटर, ग्रांट रोड में प्रेस और आमंत्रित दर्शकों के लिए हुआ था, जिसके बाद 3 मई को सार्वजनिक प्रीमियर हुआ।

दादा साहब फाल्के ने अपनी फिल्मों में एक नए प्रगतिशील भारत के निर्माण का संदेश दिया। भले ही उनकी अधिकांश फिल्में जैसे 'राजा हरिश्चंद्र', 'लंका दहन' और 'सत्यवान सावित्री' हिंदू पौराणिक कथाओं पर आधारित थीं, फाल्के ने सूक्ष्मता से राष्ट्रवादी सिनेमा का सशक्त आधार तैयार किया।

ट्रिक सिनेमॅटोग्राफी और स्पेशल इफेक्ट के प्रवर्तक

दादासाहेब फाल्के की 1917 में रामायण के सुंदर कांड पर आधारित फ़िल्म 'लंका दहन' में मुख्य कलाकार अन्ना सालुंके ने राम और सीता दोनों के किरदार निभाए अर्थात डबल रोल का सफल प्रयोग किया गया। ब्रिगिट शुल्ज़ लिखते हैं, "फाल्के की तीसरी फिल्म 'श्री कृष्ण जन्म' (1918) में जब कंस का सिर धड़ से अलग होकर उड़ते हुए गायब हो जाता है तो दर्शक सहमते हुए विस्मय में पड़ जाते हैं।"

चलचित्र में यह मायावी उपलब्धि उन दिनों में हासिल की गई थी जब क्रोमा-की (हरे रंग की मैट) और कंप्यूटर ग्राफिक्स का जन्म ही नहीं हुआ था। (शुल्ज़,1995,184)

मूक युग से ही फिल्मों में ट्रिक फोटोग्राफी की शुरुआत हुई। उस दौर में ज्यादातर पौराणिक कहानियों पर आधारित फिल्में बन रही थीं जिनके दृश्यों की मांग के अनुसार ट्रिक सिनेमॅटोग्राफी को पनपने के लिए सकारात्मक वातावरण प्राप्त हुआ। सवाक युग तक आते-आते कैमरे भी उन्नत हो गए थे। सहयोगी उपकरणों , लेंस और फिल्टर में नवीनता और वजन में हल्के होने के कारण ट्रिक सिनेमॅटोग्राफी ने गति पकड़ी और अपना महत्व स्थापित किया। त्र्यंबक बी तेलंग, बाबूराव पेंटर, बाबूभाई मिस्त्री और विदेशी फिल्म संस्थानों से प्रशिक्षित प्रमथेश चंद्र बरुआ, सुचेत सिंह और दिलीप गुप्ता जैसे अनेक सिनेमॅटोग्राफरों ने अपने दृढ़ संकल्प और रचनात्मकता के माध्यम से जो असंभव लग रहा था, उसे पर्दे पर जीवंत कर दिया और कई सेलुलॉइड चमत्कार संभव किए।

4.5 बाबूराव कृष्ण राव मिस्त्री (बाबूराव पेंटर)

सौंदर्य दृष्टि और तकनीकी कौशल के उत्कृष्ट समन्वय के प्रतिनिधि बाबूराव कृष्ण राव मिस्त्री ने एक उत्कृष्ट चित्रकार और मूर्तिकार के रूप में अपने गुणों और अनुभवों के निचोड़ से भारतीय सिनेमा में कला और तकनीक का स्वदेशी आधार तैयार किया, जिसके कारण उन्हें 'भारतीय फिल्म कला के पिता' के नाम से जाना जाता है। उन्हें 'बाबूराव पेंटर' के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि वे कई थिएटर कंपनियों के प्रसिद्ध प्राकृतिक चित्रकार थे। सूर्यकांत मांढरे लिखते हैं "बाबूराव पेंटर और उनके भाई आनंदराव ने भारतीय सिनेमा में फिल्म निर्माण प्रौद्योगिकी में कई तकनीकी नवाचार किए। उनके द्वारा मात्र बीस साल की आयु में 'पहला भारतीय फिल्म कैमरा' बनाया था।" (मांढरे, 1993, 185)

आनंदराव, जो पहले से ही जानते थे कि एक स्थिर कैमरा कैसे काम करता है, ने मुंबई में खरीदे गए एक सेकेंड-हैंड प्रोजेक्टर को यह जानने के लिए एक-एक पुर्जे में अलग कर दिया कि चलती छवियों को स्क्रीन पर कैसे पेश किया जाता है, ताकि वे प्रक्रिया को रिवर्स-इंजीनियर कर सकें और चलती छवियों को फिल्म पर कैप्चर करने का प्रयास कर सकें। 1914 में एक बढ़ई मित्र ज्ञानबा सुतार की मदद से बाबूराव और आनंदराव ने अपने कैमरे पर काम करना शुरु किया। 1916 में आनंदराव की मृत्यु हो गई, किन्तु इस आघात को सहकर भी बाबूराव ने अपना काम जारी रखा और बड़े समर्पण के साथ वे अंततः 1918 में पहला स्वदेशी फिल्म कैमरा बनाने में सफल हुए। वीरेंद्र वळसंगकर अपनी डॉक्यूड्रामा फिल्म में दिखाते हैं कि कैमरे के पुर्जों के लिए गणितीय गणनाओं में विष्णु गोविंद दामिले ने सहयोग किया। (वळसंगकर, 2011)

दादा मिस्त्री की मदद से एक लेथ मशीन पर कई प्रयोग करके स्वदेशी रूप से बना कैमरा बनाने में बाबूराव को दो साल लग गए। उन्होंने इस देसी कैमरे से कई सीन कैद किए।

4.6 प्रमथेश चंद्र बरुआ

प्रमथेश चंद्र बरुआ (24 अक्टूबर,1903 - 29 नवम्बर,1951) की पहचान एक ऑलराउंडर अर्थात अभिनेता, फिल्म निर्माता, निर्देशक, संगीतकार, पटकथा-लेखक के रूप में अक्सर की जाती है, किन्तु एक दक्ष सिनेमॅटोग्राफर के रूप में उनकी पहचान से कुछ लोग ही परिचित हैं। पी सी बरुआ ने ऐसे समय में फिल्मों में प्रवेश किया जब भारतीय सिनेमा और इसके फिल्म निर्माता इसकी मौलिक पहचान को आकार दे रहे थे। सिनेमा में नई तकनीकों को सीखने के लिए उत्सुक बरुआ ने यूरोप की यात्रा की और लंदन में एलस्ट्री स्टूडियो (Elstree Studios) में फिल्म निर्माण की प्रक्रिया देखी। पेरिस में उन्हें सिनेमॅटोग्राफ़ी सीखने का अवसर मिला। उन्होंने फॉक्स स्टूडियो में फिल्मों के लिए प्रकाश व्यवस्था के बारे में सीखा। उन्होंने अपनी वापसी से पहले प्रकाश व्यवस्था के उपकरण खरीदे और भारत में एक स्टूडियो बनाया। इस गहन अनुभव का उपयोग उन्होंने श्वेत श्याम मूक फिल्म अपराधी (1931) में किया जिसे अपराधी अबला और द कलप्रिट के नाम से भी रिलीज़ किया गया। स्वयं अभिनेता के रूप में काम करते हुए देबकी बोस को निर्देशन और कृष्ण गोपाल को सिनेमॅटोग्राफ़ी की जिम्मेदारी सौंपी गई। फिल्म के दृश्यांकन के लिए स्टूडियो के अंदर कृत्रिम अन्तःप्रकाश व्यवस्था (इंडोर लाइटिंग) का पहली बार उपयोग किया गया। अपराधी (1931) के फिल्मांकन के लिए बालीगंज सर्कुलर रोड स्थित गौरीपुर हाउस में बिजली मीटर की बिजली क्षमता बढ़ानी पड़ी। 400 एम्पीयर की क्षमता वाले दो और मीटर लगाये गए थे। पहली बार फिल्म को 10000 वाट के साथ शूट किया गया था और जब नैगेटिव विकसित किए गए तो कोई छवि नहीं देखी जा सकती थी। प्रमथेश ने फिर से प्रयोग करना शुरू किया, इस बार 20000 वॉट के साथ, किन्तु परिणाम ज्यादा नहीं बदले। अब अधिक वॉट क्षमता जोड़ी गई, जो आश्चर्यजनक रूप से कुल 40,000 वॉट थी। इस बार प्रयोग सफल रहा। इस प्रयोग के कारण 50000 फीट की 'पिक्चर नेगेटिव' की बर्बादी हुई। मेकअप के साथ प्रयोग ने भी 1,000 फीट अतिरिक्त नेगेटिव खर्च किया। (चटर्जी,2008,46)

अंततः छह महीने की शूटिंग के बाद फिल्म पूर्ण हुई। इसे 28 नवंबर 1931 को चित्रा टॉकीज में जारी किया गया था। पी सी बरुआ के इस जोख़िम उठाने से इस फिल्म के साथ बंगाल में फिल्म निर्माण के तकनीकी परिदृश्य में आमूल-चूल परिवर्तन आया। निर्देशकों को अब शूटिंग के लिए प्राकृतिक प्रकाश की अवधि पर निर्भर नहीं रहना पड़ता था। स्टूडियो के अंदरूनी हिस्सों में शूटिंग करना एक आम बात हो गई।

4.7 अब्दुल समद बाबूभाई मिस्त्री

अब्दुल समद बाबूभाई मिस्त्री के नाम से प्रसिद्ध हुए। बाबूभाई मिस्त्री को भारत में ट्रिक फोटोग्राफी के जनक और विशेष प्रभाव

निर्देशक के रूप में जाना जाता है। वे गुजरात के शहर सूरत से मुंबई पहुचते हैं और पुराने अनुभव के कारण फिल्मों के सेट बनाने और पोस्टर तैयार करने का काम प्राप्त कर लेते हैं। सिनेमा की तकनीक, विशेष रूप से कैमरा उन्हें अधिक आकर्षित करता था। देखते-देखते ही वे कैमरे के अधिकांश तकनीकी पहलुओं के जानकार बन गए। 1933 की 'हातिम ताई' के लिए एक सहायक कला निर्देशक के रूप में अपना करियर शुरू करने के बाद उन्होंने 1937 में रिलीज़ हुई फिल्म 'ख्वाब की दुनिया' के लिए स्क्रीन पर विशेष प्रभाव पैदा करने के लिए नवीन तकनीक का उपयोग किया। उन्होंने मंद रोशनी और काले पर्दे की पृष्ठभूमि पर काले धागे की सहायता से निर्जीव वस्तुओं में भी गतिशीलता का भ्रम उत्पन्न कर दिया। इस तरह बाबूभाई मिस्त्री की तकनीकी कौशलयुक्त रचनात्मकता से वर्ष 1937 में स्पेशल इफेक्ट वाली पहली भारतीय फिल्म बनी।

5. बोलती फिल्मों की शुरुआत

पहली स्वदेशी संवाद युक्त फिल्म 'आलम आरा' 14 मार्च 1931 को बॉम्बे की इंपीरियल फिल्म कंपनी ने रिलीज़ की तो फिल्मी दुनिया में बड़ी हलचल होना स्वाभाविक ही था। ध्वनि के आगमन के कारण भारतीय प्रोडक्शन में अचानक तेजी आई और कई नए निर्माताओं के उदय के लिए एक स्वर्णिम अवसर पैदा किया।

मूक फिल्मों की तुलना में सवाक फिल्मों का उत्पादन पूर्णतया नवीन कार्य था जिसने फिल्म उत्पादन और प्रदर्शन की मौजूदा प्रणालियों में आधारभूत तकनीकी बदलाव की मांग की थी। इन वर्षों में शिक्षित युवा पेशेवरों का एक नया वर्ग उभरा जिसने विशेषज्ञता की मांग स्थापित करते हुए संवाद लेखन, संगीत संयोजन, ध्वनि मुद्रण और कृत्रिम प्रकाश में फिल्मांकन आदि जटिलतापूर्ण विशिष्ट कार्यों के सफल क्रियान्वयन से स्वदेशी भारतीय फिल्म उद्योग को समग्र रूप से उन्नत किया।

5.1 भारतीय टॉकीज का स्वप्न साकार करने वाली जोड़ीः आर्देशिर ईरानी और आदि एम. ईरानी

चित्र के साथ ध्वनि के जुड़ने की शुरुआत ने फिल्मों के उत्पादन और प्रदर्शन के तौर-तरीकों को बदल दिया। इसने नए उपकरणों के तकनीकी विकास की गति को तीव्र कर दिया। ध्वनि इंजीनियरिंग के साथ-साथ कैमरे के डिजाइन में भी परिवर्तन हुए। कैमरे की मैगज़ीन में सैकड़ों फ़ीट फिल्म रोल और इन्टरमिटेंट सिस्टम को गतिमान रखने के लिए मोटर के शोर को ब्लिंप या कवर का उपयोग करके नियंत्रित किया जाता था। शुरुआती कई वर्षों तक भारत में साइलेंट कैमरे दुर्लभ थे।

फिल्म 'आलम आरा' को आर्देशिर ईरानी के करियर का एक महत्वपूर्ण मोड़ भी माना जाता है और उन्हें 'भारतीय टॉकीज के पिता' के रूप में प्रतिष्ठा मिली। ईरानी द्वारा बेल एंड हॉवेल से खरीदे गए उपकरणों का उपयोग करके मुंबई के ज्योति स्टूडियो में लगभग चार महीने तक फिल्मांकन कार्य किया। शूटिंग शुरू होने से पहले उन्होंने अमेरिकी विशेषज्ञ विल्फोर्ड डेमिंग से ध्वनि रिकॉर्डिंग की मूल बातें सीखीं। इंपीरियल स्टूडियो का संचालन कर रहे ईरानी ने टैनोर सिंगल सिस्टम कैमरा विदेश से आयात किया जो एक एकल-प्रणाली रिकॉर्डिंग है और सिके द्वारा शूटिंग के साथ एक ही समय में ध्वनि रिकॉर्ड की जाती है। (गर्ग, 1980)

इसी कालखंड में दक्षिण भारत में पहली तमिल बोलती फिल्म कालिदास को 31 अक्टूबर 1931 को रिलीज़ किया गया था। ज्ञानेश उपाध्याय अपने निबंध में लिखते हैं – कई फिल्में तो 1934 तक मूक ही बनती रहीं। जैसे एक शिशु धीरे-धीरे बोलना शुरू करता है और धीरे-धीरे ही उसकी आवाज साफ होती जाती है, ठीक उसी प्रकार से 1930 का दशक भारतीय फिल्मों की आवाज साफ होने का दौर है। (उपाध्याय, 2013, 12)

5.2 विष्णु गोविंद दामले

प्रतिष्ठित प्रभात फिल्म कंपनी के संस्थापक सदस्यों में से एक, प्रारंभिक भारतीय सिनेमा के अग्रणी सेट डिजाइनर, उत्कृष्ट छायाकार, निर्देशन जैसी अनेक कलाओं में पारंगत विष्णुपंत गोविंद दामले एक दूरदर्शी साउंड इंजीनियर भी हैं, इसका परिचय तब मिला जब 6 फरवरी, 1932 को मराठी फिल्म 'अयोध्येचा राजा' रिलीज हुई। तब सिनेमा का तंत्रज्ञानी समुदाय आश्चर्यचकित रह गया। यह फिल्म न केवल ध्वनि और गीत की दृष्टि से उत्कृष्ट थी , बल्कि संवाद रिकॉर्डिंग गुणवत्ता में भी सर्वोत्तम थी। (वळसंगकर, 2011)

फिल्म को हिंदी में 'अयोध्या का राजा' (1932) के दोहरे संस्करण के रूप में भी बनाया गया था, जिससे यह भारतीय सिनेमा का पहला डबल टॉकी वर्जन बन गया।

5.3 मुकुल बोस

हिन्दी और बांग्ला फिल्मों में भारतीय परिवेश के सजीव चित्रण के लिए प्रसिद्ध फिल्मकारों में से एक नितिन बोस बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। नितिन बोस ने बांग्ला फिल्म 'भाग्य चक्र' (1935) का हिन्दी संस्करण 'धूप छांव' नाम से बनाया। नितिन बोस के छोटे भाई मुकुल बोस ने, जो न्यू थियेटर्स में साउंड रिकॉर्डिस्ट थे, सलाह दी कि क्यों न पहले ही गीत रिकॉर्ड कर लिया जाये और फिल्मांकन के समय इस गीत के अनुरूप अभिनेता अपने होंठ चलाते जायें। इस पद्धति से कैमरे तथा अभिनेताओं की गतिशीलता में बाधा नहीं पड़ेगी। (चड्ढा, 2021,101) इस तरह निर्देशक नितिन बोस ने साउंड रिकॉर्डिस्ट मुकुल बोस की सहायता से सुप्रभा सरकार, पारुल घोष एवं हरिमती के स्वरों में एक गीत रिकॉर्ड करके पार्श्वगायन का पहला नवाचार किया था।

6. रंगीन फिल्मों का पदार्पण :

सेल्युलाइड फिल्म की छवियों को रंगमय करने के प्रयास निरन्तर चल रहे थे। संसार में पहली रंगीन फीचर फिल्म 1910 में बनाई गई थी। इन प्रारम्भिक वर्षों में ही पुनः भारत को 1912 में ही रंगीन फिल्मांकन का साक्षी बनने का अवसर प्राप्त हुआ। चार्ल्स

अर्बन कलर तकनीक के प्रारम्भिक उपयोगकर्ताओं में से एक थे। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि 1911 के दिल्ली दरबार का 'किनेमाकलर' तकनीक से फिल्मांकन था जिसे देश का पहला रंगीन वृत्तचित्र 'विद् अवर किंग थ्रू इंडिया' एवं 'द दरबार एट दिल्ली, 1912' के नाम से भी जाना जाता है। भारत के सम्राट के रूप में राजा जॉर्ज पंचम को मान्यता देने के लिए दिल्ली में एक शानदार समारोह आयोजित किया गया था। कुल पांच फिल्म कंपनियों ने समारोह को फिल्माया। इनमें से रंगीन शूटिंग करने वाली अर्बन की ही टीम थी। हर्बर्ट लिखते हैं, चार्ल्स अर्बन अपने साथ चार या पांच कैमरामैन को किनेमाकलर प्रक्रिया से भारत की संपूर्ण शाही यात्रा को फिल्माने के लिए साथ लाये थे। (हर्बर्ट,1996,135)

6.1 कलर फिल्म को बनाने के भारतीय प्रयास

1941 से पहले भारत में कोई भी रंगीन स्टॉक उपलब्ध नहीं था, केवल मोनोक्रोम फिल्म स्टॉक और फुटेज के साथ रंग प्रक्रियाएं जैसे किनेमाकलर (1908–1914), टेक्नीकलर प्रक्रिया (1917–1954), और सिनेकलर ही विकल्प थे। शांताराम वणकुद्रे द्वारा निर्मित और सहयोगी वी.अवधूत के साथ केशवराव ढैबर की सिनेमॅटोग्राफी से अग्फ़ा (Agfa B&W 35-mm) नेगेटिव पर शूट मराठी में पुनः निर्मित 'सैरंध्री' (1933), भारत की पहली रंगीन फिल्म होती किन्तु जर्मनी में इसकी प्रोसेसिंग सफल नहीं रही। रिलीज प्रिंट बाई-पैक कलर प्रिंटिंग द्वारा बनाए गए थे। (जसराज,2015,85)

एक बार पुनः इम्पीरियल पिक्चर्स के बैनर तले अर्देशिर ईरानी द्वारा बाजी जीत ली गई और किसान कन्या (1937) को भारत की पहली स्वदेशी रूप से निर्मित रंगीन फिल्म का श्रेय प्राप्त हुआ। मोती गिडवानी द्वारा निर्देशित और रुस्तम एम. ईरानी की सिनेमॅटोग्राफी से इसे 'सिनेकलर प्रक्रिया' से बनाया गया था। 'किसान कन्या' को बॉक्स ऑफिस पर मिली औसत सफलता के बावजूद इसने टेक्नोलॉजी में इतिहास रचकर भारत को गौरवान्वित किया। साथ ही इस फिल्म के जरिए सिने इंडस्ट्री में नवीनीकरण (Innovation) के रास्ते खुले। फ्रेम को रंगने और दिखाने की प्रक्रिया सरल नहीं थी। यह भी क्रमिक विकास के द्वारा परिपक्वव हुई। फिल्म उद्योग में रंग प्रौद्योगिकी का व्यावहारिक और वास्तविक विकास 1950 के दशक से प्रारंभ हुआ जब भारत में टेक्नीकलर की शुरुआत हुई। फिल्मों के पोस्टर पर प्रमुखता से 'कलर बाय टेक्नीकलर' छापा जाने लगा। स्वतंत्रता पूर्व की भारतीय रंगीन फिल्में गुणवत्ता के मामले में न्याय नहीं कर सकी थीं, किन्तु इन्होंने भविष्य की रूपरेखा सामने रख दी थी। यह निर्विवाद सत्य है कि इस कालखंड के सिनेमॅटोग्राफर एवं तकनीशियनों के महत्वपूर्ण योगदान के कारण ही रंगीन सिनेमा के लिए भूमि तैयार हुई। इसी दौर में विवेकशील व्यवसयी अंबालाल झावेरभाई पटेल उभरकर सामने आए। 1946 में, पटेल ने ब्लैक एंड व्हाइट फिल्म फुटेज के लिए मुंबई में फिल्म सेंटर की स्थापना की। एक अन्य महत्वपूर्ण व्यक्ति दिलीप गुप्ता जो फिल्म 'मधुमति' की सिनेमॅटोग्राफ़ी के लिए चर्चित हैं, ने 1948 में पहली 'कोडाक्रोम' रंगीन फिल्म 'अजीत' की फ़ोटोग्राफ़ी की।

भारत की स्वतंत्रता से कई वर्षों पूर्व से ही तकनीशियनों के अथक परिश्रम एवं सिनेमॅटोग्राफरों के बहुमूल्य अनुभव के समर्पण के कारण ही स्वतंत्र भारत में रंगीन सिनेमा की आधारभूत संरचना खड़ी हो सकी।

7. स्वतंत्रता पूर्व भारत में फिल्म निर्माण के केंद्र : स्टूडियो

स्वतंत्रता पूर्व भारत में फिल्म निर्माण कार्य बॉम्बे, कोल्हापुर, पुणे, कलकत्ता, लाहौर और मद्रास जैसे शहरों में स्थित स्टूडियो द्वारा संचालित किया जाता था। स्टूडियो ऐसे स्थान थे जिन्होंने भारतीय फिल्म उद्योग को आकार दिया गया। इन स्टूडियो ने न केवल कई रचनात्मक व्यक्तियों को किसी एक सामूहिक रचनाकर्म के लिए एक छत के नीचे लाकर महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक फिल्मों का निर्माण संभव किया, बल्कि फिल्म उद्योग के लिए नवीनतम तकनीक, साधन और संसाधनों की भी पूर्ति की। इस तथ्य पर प्रकाश डालने की दृष्टि से शोध पत्र की सीमित शब्द सीमा को ध्यान में रखते हुए केवल प्रभात फिल्म कंपनी में तकनीकी नवाचारों को अत्यंत संक्षेप में स्थान दिया गया है।

बाबूराव पेंटर के शिष्यों शांताराम राजाराम वणकुद्रे , केशवराव ढैबर, विष्णु गोविंद दामले, शेख फत्तेलाल और सीताराम बाबू कुलकर्णी ने प्रभात स्टूडियो की स्थापना 1929 में कोल्हापुर में की और 1933 में वी. शांताराम ने इसे पुणे स्थानांतरित कर दिया। शांताराम के ये चारों साथी तकनीकी क्षेत्र के उत्कृष्ट तकनीक विशेषज्ञ थे। उन्होंने हिंदी फिल्मों में पहली बार मूविंग शॉट्स का इस्तेमाल किया था। उनकी पहली मूक फिल्म 'गोपाल कृष्ण' (1929) में बैलगाड़ियों की दौड़ को पहली बार दिखाया गया था। वर्ष 1933 में उन्होंने अपने गुरु बाबू राव पेंटर द्वारा बनाई गई ब्लैक एंड व्हाइट फिल्म 'सैरंध्री' का रीमेक पहली रंगीन हिंदी फिल्म के रूप में बनाने का प्रयास किया था जो तकनीकी कारणों से सफल नहीं हो सका। 'सैरंध्री' के काम के दौरान शांताराम जब जर्मनी के उफ़ा स्टुडिओ में थे, उन्हीं दिनों उन्होंने जर्मन एक्सप्रेशनिस्ट फिल्मकारों की कलाकृतियों का अध्ययन किया, जिससे प्रभावित होकर 'अमृत मंथन' (1933) में उन्होंने छाया-प्रकाश के नए प्रयोग किए। 'अमृत मंथन' में पहली बार आंख का बिग क्लोजअप फिल्माने के लिए टेलीफोटो लेन्स का इस्तेमाल किया। चंद्रसेना (1935) फिल्म में ही उन्होंने पहली बार ट्राली का इस्तेमाल किया था। साथ ही वर्ष 1935 में प्रदर्शित हुई फ़िल्म 'जंबू काका' (1935) में एनिमेशन का इस्तेमाल भी उन्होंने ही किया था।

फिल्म इतिहासकार आशीष राजाध्यक्ष और विलेमेन निर्देशक

वी. शांताराम को 30 के दशक के सबसे प्रसिद्ध भारतीय निर्देशकों में से एक के रूप में वर्णित करते हैं। देश के दूसरे सर्वोच्च सम्मान 'पद्मविभूषण' से सम्मानित शांताराम राजाराम वणकुद्रे को अंतरराष्ट्रीय स्तर के महान निर्देशक के रूप में जो ख्याति मिली, वह इसलिए कि वे एक सिनेमा के महान शिल्पकार और प्रौद्योगिकीविद् भी थे।

प्रभात स्टूडियो के दामले एवं फत्तेलाल भी भारत के फिल्म इतिहास में उल्लेखनीय बौद्धिक एवं तकनीकी योगदान देने वाले व्यक्ति थे। दोनों की जोड़ी ऐतिहासिक फिल्म 'संत तुकाराम' (1936) के लिए जानी जाती है। संत तुकाराम न केवल एक बड़ी हिट फिल्म थी बल्कि इसने 1937 में 5 वें वेनिस अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में एक पुरस्कार भी जीता था और अभी भी यह फिल्म आस्वादन पाठ्यक्रमों का एक हिस्सा है। अभिनय में यथार्थवाद के स्पर्श के साथ उनकी फिल्में सामाजिक रूप से प्रासंगिक थीं। ये वे पहलू थे जो उस समय दुर्लभ थे। द इंडियन एक्सप्रेस में अपने लेख में घोष लिखते हैं, अमेरिकी फिल्म निर्देशक फ्रैंक कैपरा ने दामले-फत्तेलाल द्वारा निर्देशित संत ज्ञानेश्वर (1940) को अब तक देखी गई फिल्मों में 'तकनीकी रूप से परिपूर्ण भारतीय फिल्म' के रूप में वर्णित किया। (घोष, 2014)

निष्कर्ष

भारत में पहली बार चलचित्र प्रदर्शन के वर्ष 1896 से स्वतंत्रता प्राप्ति के वर्ष 1947 तक की फिल्मों के अध्ययन से हम पाते हैं कि भारतीय फिल्मकारों ने ब्रिटिश शासन पर निर्भरता के बजाए आत्मनिर्भरता का रास्ता चुना जिसका प्रत्यक्ष लाभ यह हुआ कि वे ब्रिटिश शासन की सेंसरशिप को चुनौती प्रस्तुत करते हुए हिन्दू पौराणिक कथाओं के फिल्मांकन द्वारा दर्शकों को जाग्रत और प्रेरित करते हुए उनमें राष्ट्रीय चेतना के साथ स्वतंत्रता की भावना पर आधारित फिल्में बनाने में सफल हो सके।

इसका एक दूसरा अप्रत्यक्ष लाभ यह हुआ कि हिंदू पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथाओं के कुछ विशेष प्रसंगों अथवा कुछ विशेष चरित्रों की मांग के अनुसार विविध तकनीकी सिनेमॅटिक उपाय खोजने के लिए भारतीय फिल्मकारों के समक्ष सदैव चुनौती रही। विशेष वरदानों से युक्त देवता अथवा मायावी राक्षसों की संकल्पना को पर्दे पर जीवंत करने के लिए विशेष प्रभाव उत्पन्न करने के साधन, दक्ष कैमरा प्रचालन, प्रकाश व्यवस्था एवं सम्पादन में निरंतर नवाचार होते रहे। स्वतंत्रता पूर्व भारत में फिल्म निर्माण की तकनीकी आधारभूत संरचना (infrastructure) प्रारंभ में व्यक्तिगत प्रयासों से विकसित हुई, जिसने अगले कुछ दशकों के बाद एक व्यवस्थित स्टूडियो सिस्टम का रूप लेना प्रारंभ कर दिया। स्वतंत्रता पूर्व भारत में स्वदेशीकरण की भावना से ऐसे बहुत से स्वदेशी तकनीकी नवाचार हुए जिन्होंने भारतीय सिनेमा के स्वर्ण युग की स्थापना की बुनियाद रखी। इन सभी तकनीकी नवाचारों के केंद्र में भारतीय सिनेमैटोग्राफरों का महत्वपूर्ण योगदान था। कई निर्देशकों की इच्छाशक्ति, सिनेमॅटोग्राफर के जोखिम उठाने का साहस और असंख्य तकनीशियनों के श्रम से भारतीय सिनेमा निरंतर समृद्ध होता रहा।

संदर्भ

- ऑल्टमैन, सी.एफ. (1977). टूवर्ड्स अ हिस्टोरियोग्राफी ऑफ अमेरिकन फिल्म .सिनेमा जर्नल, 16, 1.
- उपाध्याय, ज. (2013, अक्टूबर-दिसंबर). बदलता देश , दशक और फिल्मी नायक (अ. मिश्र & महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, Eds.). बहुवचन, 39, 10-24.
- कर्लिंगर, एफ.एन. (1972). फाउंडेशन ऑफ़ बीहैव्यरल रिसर्च : एजुकेशन एण्ड सायक्लोजिकाल इंक्वायरी. लंदनः होल्ट, राइनहार्ट एण्ड विंस्टन.
- गर्ग, भ. द. (1980). मेकिंग ऑफ आलम आरा : एन इंटरव्यू विथ अर्देशिर ईरानी. The Garga Archives. Retrieved February 8, 2022, from https://garga-archives.com/writings/the-making-of-alamara-interview-with-ardeshir-irani/
- घोष, स. (2014, फरवरी 6). द अनसंग हीरो. द इंडियन एक्सप्रेस. https://indianexpress.com/article/cities/mumbai/the-unsung-hero/
- चटर्जी, ए शोमा. (2008). पीसी बरुआः लीजेंड्स ऑफ इंडियन सिनेमा. एससीबी डिस्ट्रीब्यूटर.
- चड्ढा, म. (2021). हिन्दी सिनेमा का इतिहास (प्रथम ed.). मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल.

- जगमोहन. (1995, अगस्त). भारतीय सिनेमा के अग्रदूत (द. भारद्वाज, Ed.). योजना, सिनेमा और समाज, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय नई दिल्ली, 8, 15–20.
- जसराज, म. प. (2015). वी शांताराम – द मैन हू चेंज्ड इंडियन सिनेमा. पेंगुइन इंडिया.
- पेटकर, श. (2014). शांबरिक खरोलिका. ग्रंथाली प्रकाशन माटुंगा (पश्चिम), मुंबई.
- मांढरे, स. (1993). कोल्हापुरी साज. पुरंदरे प्रकाशन, पुणे.
- रंगूनवाला, फ़. (1975). 75 ईयर्स ऑफ़ इंडियन सिनेमा. इंडियन बुक कंपनी.
- शुल्ज़, ब. (1995). डी.जी.फाल्केज़ राजा हरिश्चंद्र इन ब्रिटिश इंडिया ऑफ़ 1913. पायोनियरिंग अ नेशनल सिनेमा अंडर कॉलोनियल रूल. In ऑस्कर मेस्टर, एरफिंडर एण्ड गेस्चफ्त्समान (pp. 173—189). फ्रैंकफर्ट एम मेन. http://dx.doi.org/10.25969/mediarep/16074
- हर्बर्ट, एस., मैककर्नन, एल., एवं ब्रिटिश फिल्म इंस्टिट्यूट.(1996). हूज़् हू ऑफ विक्टोरियन सिनेमाः अ वर्ल्डवाइड सर्वे.लंदनः बीएफआई.
- मोकाशी, प. (निर्देशक). (2009). हरिश्चंद्राची फैक्ट्री [Film; मराठी]. यूटीवी मोशन पिक्चर्स.
- रॉय, अ. (निर्देशक). (2021). हीरालाल [Film; बंगाली]. ईजल मूवीज.
- वळसंगकर, व. (निर्देशक). (2011). विष्णुपंत दामले – बोलपटांचा मूकनायक [Film; मराठी]. ए वी दामले.
- https://tamu.libguides.com/c.php?g=639764
- https://www.victorian-cinema.net/sestier
- https://www.victorian-cinema.net/bhatvadekar
- http://www.udayindiahindi.in
- http://charlesurban.com/documents_gallery.html
- https://dastaktimes.org/charlie-chaplin-was-also-a-fan-of-v-shantaram/
- https://artsandculture.google.com/exhibit/-v-shantaram-motion-picture-scientific-research-and-cultural-foundation/IAICzUD0r80sKQ?hl=hi
- https://www.youtube.com/watch?v=_4iENx7xjBY

गांधी, मंडेला और किंग के संदर्भ में सिनेमा में अहिंसा का फिल्मांकन

*** डॉ. मीता उज्जैन**
**** अंजना शर्मा**

'महात्मा गांधी, मार्टिन लूथर किंग और नेलसन मंडेला की विरासत है कि वे इस मौलिक विश्वास के उदाहरण थे कि संघर्ष के वाहक उसके अहिंसक समाधान के लिए उत्तरदायी हो सकते हैं। यही विश्वास संयुक्त राष्ट्र की गतिविधियों को रेखांकित करता है।'

– सैय्यद अकबरुद्दीन (संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थायी प्रतिनिधि)

शोध सार : अहिंसा का भाव यूं तो भारतीय अध्यात्म में गहरा समाया हुआ है लेकिन आधुनिक राजनीति में गांधी उसका इस्तेमाल करने वाले पहले भारतीय थे। महात्मा गांधी की अहिंसा ने उन्हें वैश्विक नेता बनाया। गांधी की ही तरह मंडेला और किंग ने अपने सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सत्याग्रह और अहिंसा का मार्ग अपनाया था। नेलसन मंडेला और किंग जॉर्ज, गांधी की ओर आकर्षित और कुछ हद तक उनसे प्रभावित थे। उन्होंने अहिंसा पर चलते हुए वंचितों के लिए अधिकार हासिल किए। नई पीढ़ी ने इन नेताओं और इनके कार्यों को उनकी एवं उन पर लिखी गई पुस्तकों के अतिरिक्त उनकी सिनेमाई छवियों के ज़रिए भी जाना। गांधी, मंडेला और किंग के व्यक्तित्व एवं कृतित्व ने फिल्मकारों को ख़ासा प्रभावित किया। कुछ फिल्मों में ये नायक मुख्य किरदार के रूप में दिखाई दिए तो कहीं-कहीं उनके जीवन मूल्य भी दिखाया गया। प्रस्तुत शोध आलेख में अहिंसा रूपी अस्त्र को धारण करने वाले गांधी, मंडेला और किंग से प्रभावित सिनेमा और फिल्मकारों के उनके प्रति आकर्षण का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्दः अहिंसा, गांधी, मंडेला, किंग, फिल्म।

प्रस्तावना

महात्मा गांधी, नेलसन मंडेला और मार्टिन लूथर किंग जूनियर दुनिया की तीन ऐसी शख्सियत रही हैं, जिन्होंने फिल्मकारों को अपनी ओर खूब आकर्षित किया। तीनों नेताओं के आंदोलन के तरीकों ने उन्हें न केवल वैश्विक पहचान दिलाई बल्कि दुनिया के समक्ष एक ऐसा मार्ग प्रस्तुत किया, जिस पर चलकर बिना किसी का लहू बहाए शांतिपूर्ण प्रदर्शन और बातचीत के माध्यम से बड़ी-से-बड़ी समस्या हल की जा सकती है। इन तीनों ही नायकों ने अहिंसा के मार्ग को अपनाकर अपने लक्षित उद्देश्यों को प्राप्त किया। गांधी इनमें अग्रणी हैं। 'उन्होंने दुनिया के इतिहास में सबसे ज्यादा हिंसक सदियों में से एक में विरोध के एक ऐसे अस्त्र का आविष्कार किया जो अहिंसा पर आधारित था।' (गुहा, 2015)

गांधी, मंडेला और किंग के आंदोलन के तरीकों ने उन्हें दुनियाभर में लोकप्रिय बना दिया। उनके विचारों और कार्यों को कई पीढ़ियों तक पहुंचाने के लिए सम्प्रेषण की सिनेमायी विधा का खूब इस्तेमाल हुआ। तीनों ही नेताओं पर वृत्तचित्र और बायोग्राफिकल (जीवन वृत्त पर आधारित) फिल्में तो बनी ही हैं, उनसे प्रभावित फीचर फिल्मों का भी निर्माण हुआ है। कई फिल्मों के किरदारों पर इनके विरोध के तरीकों का असर स्पष्ट देखने को मिलता है।

जनसंचार के माध्यम सिनेमा का व्यापक बदलावों के लिए एक उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। चूंकि सिनेमा के माध्यम से विचार व भावनाएं बड़े पैमाने पर दर्शकों तक पहुंचाई जा सकती हैं अतः इस माध्यम का सकारात्मक बदलावों के लिए उपयोग किया जा सकता है। एक अध्ययन के मुताबिक रूस में सिनेमा को वैयक्तिक व सामाजिक बदलाव के माध्यम के रूप में देखा जाता है। सिनेमा का रूसी दर्शकों की मुख्य सामाजिक मुद्दों के प्रति प्रवृत्ति सहित उनका सम्पूर्ण दृष्टिकोण विकसित करने में योगदान होता है। (Kubrak, 2020) सिनेमा की इसी खूबी का इस्तेमाल विश्व स्तर पर अच्छे विचारों व भावनाओं को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाकर इन्हें अपनाने के लिए प्रेरित करने में किया जा सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य

महात्मा गांधी, नेलसन मंडेला व मार्टिन लूथर किंग जूनियर

* सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर , मा.च.रा.प.सं.वि.वि., भोपाल
** पीएच.डी. शोधार्थी , मा.च.रा.प.सं.वि.वि., भोपाल

के जीवन पर आधारित व उनके जीवन मूल्यों से प्रेरित फिल्मों में अहिंसा के फिल्मांकन का अध्ययन करना।

अध्ययन की प्रासंगिकता

असहमति अथवा विरोध के अहिंसक तरीके, स्वस्थ व सभ्य समाज की पहचान माने जाते हैं। लेकिन वर्तमान समय में लोगों में असुरक्षा का भाव इतना अधिक बढ़ गया है कि दुनियाभर से हिंसक घटनाओं की ख़बरें आना साधारण बात हो गई है। गांधी, मंडेला और किंग के संघर्ष के इतने वर्षों बाद भी नस्लीय टिप्पणियों व हिंसा की ख़बरें आती रहती हैं। समाज में विभिन्न कारणों से हिंसा का सहारा लेना आम बात हो गई है। ऐसे में इन महान नेताओं के जीवन व कार्यों पर आधारित फिल्मों का महत्व बढ़ जाता है। सिनेमा सम्प्रेषण का एक सशक्त माध्यम है व गांधी, मंडेला और किंग के अहिंसक तरीके लोगों को अहिंसा का मार्ग अपनाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

अध्ययन की विधि

यह अध्ययन पूर्ण रूप से द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। इसके लिए गांधी, मंडेला व किंग के जीवन व उनके अहिंसा के मार्ग पर केंद्रित विभिन्न फिल्मों का अध्ययन किया गया है। साथ ही तीनों नेताओं व उनसे संबंधित सिनेमा पर विभिन्न शोध पत्रिकाओं, पुस्तकों, वेबसाइट्स पर प्रकाशित सामग्री को एकत्रित कर उसका अध्ययन करने के पश्चात निष्कर्ष निकालने की चेष्टा की गई है।

गांधी, मंडेला व किंगः पूर्वावलोकन

वकालत की पढ़ाई करने के बाद जब गांधी 1893 में एक मुकदमे के सिलसिले में दक्षिण अफ्रीका गए तो वहां उनके साथ हुई घटनाओं एवं वहां रह रहे भारतीयों की स्थिति ने उन्हें बदलाव के लिए आंदोलित कर दिया। उन्होंने वहां 21 वर्ष बिताए और इस बीच कई अहिंसक प्रदर्शनों व आंदोलनों के जरिए उन्होंने वहां मौजूद भारतीयों के लिए कई अधिकार प्राप्त किए। गांधी ने 1915 में भारत वापसी की। उन्हें भारत में महात्मा कहा गया। उन्होंने यहां भी ग़ुलामी की ज़ंजीरों में जकड़े भारत को स्वतंत्र कराने के लिए अहिंसा का ही मार्ग चुना।

गांधी के अहिंसा के रास्ते ने दुनियाभर को अचंभित और आकर्षित किया। बाद के समय में दुनियाभर में अनेक ऐसे आंदोलन खड़े हुए जिनके मूल में अहिंसा थी। 'लोकतांत्रिक आंदोलनों के द्वारा हुए करीब पांच दर्जन सत्ता परिवर्तनों के अध्ययन में पाया गया है कि सत्तर फीसदी से ज़्यादा मामलों में तानाशाही सरकारें इसलिए धराशायी नहीं हुईं कि उनके खिलाफ सशस्त्र विद्रोह हुआ था, बल्कि वे बहिष्कार, हड़ताल, उपवास और विरोध के दूसरे माध्यमों की वजह से पराजित हुईं जिसकी प्रेरणा गांधी से मिली थी।' (गुहा, 2015)

'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, अमेरिका में नागरिक अधिकार आंदोलन, पूर्वी यूरोप और चीन में (तिब्बत समेत) साम्यवाद के खिलाफ जन-प्रतिरोध, बर्मा और मध्य-पूर्व में सैन्य तानाशाही के खिलाफ लगातार जारी विरोध... इनमें से सभी ने ट्रांसवाल (दक्षिण अफ्रीका) में गांधी द्वारा अपनाए गए तौर-तरीकों से कुछ न कुछ या पूरी प्रेरणा ज़रूर ली है।' (गुहा, 2015)

दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के खिलाफ आवाज़ उठाने वाले नेलसन मंडेला भी बहुत हद तक गांधी से प्रभावित कहे जाते हैं। यहां तक कि उन्हें 'अफ्रीकी गांधी' भी कहा गया। मंडेला पर साम्यवाद का भी प्रभाव रहा। लेकिन रंगभेद के खिलाफ उनका आंदोलन सत्याग्रह पर आधारित और अहिंसक था। 1948 में दक्षिण अफ्रीकी सरकार के लिए हुए चुनाव के बाद वहां कई ऐसे कानून लाए गए जो रंगभेद को बढ़ावा देते थे। मंडेला ने गांधी के दिखाए मार्ग पर चलते हुए 1952 में इसके खिलाफ ज्वाइंट डिफेंस कैम्पेन की शुरुआत की। उन्होंने 1962 से लेकर 1982 तक का 27 वर्षों का समय जेल में बिताया। उनके जेल में रहने के दौरान ही वह काफी लोकप्रिय हो गए थे और उन्हें दुनियाभर में रंगभेद के खिलाफ आवाज़ उठाने वाला मुख्य चेहरा माना जाने लगा था। उनके कार्यों के लिए जब उन्हें 1994 में नोबल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था, तब 'उन्होंने अपनी सफलताओं के लिए स्वयं को गांधी का ऋणी बताया था।' (Roychowdhury, 2016)

दिल्ली विश्वविद्यालय के दक्षिण अफ्रीका विभाग के प्रोफेसर केके विरमानी ने अपनी किताब 'नेलसन मंडेला और दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद' में लिखा है कि मंडेला कर्म-प्रधान थे। उनके साहस, धैर्य, जनता से जुड़ाव और त्याग की भावना ने उन्हें अफ्रीका ही नहीं बल्कि विश्वभर के अश्वेत और हाशिए पर मौजूद लोगों का नेता बना दिया। (भारद्वाज)

मार्टिन लूथर किंग जूनियर अफ्रीकी मूल के अमेरिकियों के नागरिक अधिकारों के लिए हुए संघर्ष का चेहरा थे। भारतीय राष्ट्रपिता गांधी की दिखाई अहिंसा की राह पर चलते हुए उन्होंने अमेरिका में नस्लविरोधी आंदोलन की अगुवाई की, जिसके लिए उन्हें बाद में अपनी जान भी गंवानी पड़ी। किंग युद्ध विरोधी थे और गांधी की तरह ही शांतिपर्ण तरीके से मसलों का हल खोजने में यकीन रखते थे। वर्ष 1955 में अमेरिका में किंग के नेतृत्व में अश्वेतों के 385 दिनों तक चले बसों के बॉयकॉट ने वहां की श्वेत आबादी को हिलाकर रख दिया था और इसके बाद आखिर बसों में अश्वेतों को बराबरी का अधिकार हासिल हुआ था। अमेरिकी गांधी कहे जाने वाले किंग की रंगभेद को मिटाने की दिशा में किए गए प्रयासों की वजह से 1968 में गोली मारकर हत्या कर दी गई।

किंग ने भविष्य के अमेरिका को लेकर एक सपना देखा था। इसी सपने को लेकर 1963 में दिए गए उनके भाषण 'आई हेव ए

ड्रीम' को अमेरिकी इतिहास के सर्वश्रेष्ठ भाषणों में से एक माना जाता है। इसी भाषण के एक अंश में उन्होंने कहा था, 'मेरे दोस्तों, आज और कल की तमाम मुश्किलातों के बाद भी मेरे पास एक सपना है। ये अमेरिका के सपने की जड़ों में गहरे तक जमा हुआ सपना है। मेरा सपना है कि देश खड़ा होगा और अपनी नस्ल के सच्चे अर्थों को जिएगा। हम सच में ऐसे जिएंगे कि सारे इंसान एक हैं। मेरा सपना है कि पुराने गुलामों के लड़के और उनके मालिकों की संताने जॉर्जिया की किसी पहाड़ी पर भाईचारे की मेज पर साथ बैठेंगे।' (Martin Luther King, 2020)

गांधी, मंडेला और किंगः समानता

भारत में जन्मे गांधी हिंदू संस्कृति में पले-बढ़े थे और उनकी मां बहुत धार्मिक महिला थीं। बाद में उन्होंने कानून की पढ़ाई की और वकालत करने लगे। किंग अमेरिका के जॉर्जिया में पैदा हुए थे। वह एक धार्मिक ईसाई परिवार से ताल्लुक रखते थे। बाद में वह बेपटिस्ट पास्टर बने। नेलसन मंडेला दक्षिण अफ्रीका के जनजातीय परिवार में जन्मे थे। वह जनजातीय संस्कारों और ईसाई धर्म के सिद्धांतों के बीच बड़े हुए। मंडेला ने भी कानून की पढ़ाई की और वकील बने।

गांधी, मंडेला और किंग, तीनों ही वैश्विक नेताओं में कई समानताएं थीं। इन तीनों ने सामाजिक हित के लिए किए गए अपने संघर्षों में अहिंसा को अचूक अस्त्र के रूप में चुना था। तीनों की सबसे खास बात यह थी जब उन्हें अपने कार्यों के लिए जनता की ओर से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से समर्थन मिला तो वे इस बात के लिए और भी अधिक सजग हो गए कि लोगों का एक बड़ा तबका उन पर आश्रित है। इससे उनमें सामाजिक जिम्मेदारी अथवा जवाबदेही का बोध बढ़ा और उन्होंने अपनी सामाजिक भूमिकाओं के प्रति और अधिक समर्पण का भाव अपनाया। (David & Passini, 2010)

गांधी ने औपनिवेशिक शासन के खिलाफ 'अवाम की ताकत' का इस्तेमाल किया और मंडेला ने भी अपने हर कदम के परिणामों को तौलते हुए दक्षिण अफ्रीका में इन्हीं तरीकों का इस्तेमाल किया (Hasan, 2016)। मंडेला ने एक बार गांधी के बारे में लिखा था कि वह उपनिवेशवाद विराधी एक आदर्श क्रांतिकारी थे। 'गांधी और मैंने, दोनों ने औपनिवेशिक उत्पीड़न का सामना किया है और हम दोनों ने ही हमारी अवाम को उन सरकारों के खिलाफ लामबंद किया, जिसने हमारी स्वतंत्रता का उल्लंघन किया था।' (Koenig, 2013)

गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में नस्लवाद के खिलाफ और फिर भारत में औपनिवेशिक शासन के खिलाफ आंदोलन खड़ा करने में अहिंसक तरीकों का ही इस्तेमाल किया था। मार्टिन लूथर किंग उनसे सीधे तौर पर प्रभावित थे। किंग का कहना था, 'गांधीवादी दर्शन, उत्पीड़ित लोगों के समक्ष स्वतंत्रता संघर्ष के लिए उपलब्ध एकमात्र नैतिक और ठोस तरीका था।' (Jr., 1958) किंग ने सबसे पहले 1955 से 1956 के बीच मोंटगोमरी बस बायकॉट के लिए विरोध के अहिंसक तरीके का इस्तेमाल किया था।

गांधी, मंडेला और किंग पर केंद्रित सिनेमा

महात्मा गांधी, नेलसन मंडेला और मार्टिन लूथर किंग जूनियर के जीवन और कार्यों ने न केवल उनके देश के बल्कि वैश्विक फिल्मकारों को भी अपनी ओर आकर्षित किया। इन तीनों शख्सियतों पर आधारित कई फिल्मों का निर्माण हुआ है। कुछ बायोग्राफिकल व डॉक्यूमेंटरी फिल्में हैं, तो कुछ फिल्में इनके जीवन से प्रेरणा लेकर बुनी गई कहानियों पर आधारित हैं। कुछ फिल्में ऐसी भी बनीं, जिनके किरदार इन नायकों से प्रभावित दिखे।

सिनेमा में गांधी

हाथ में लाठी, चेहरे पर गोल चश्मा, कमर पर घड़ी और सफेद धोती में लिपटे महात्मा गांधी ने अपने जीवनकाल में ही फिल्मकारों को प्रभावित करना शुरू कर दिया था। शुरुआती दौर में उन पर कुछ वृत्तचित्र फिल्में ही बनीं जबकि लोकप्रिय सिनेमा की कहानियां और किरदार उनके जीवन से प्रेरणा लेते दिखाई दिए।

राशिद किदवई कहते हैं कि फिल्मों के माध्यम से गांधी एक महान नैतिक बल के रूप में उभरते हैं। हालांकि फिल्मकारों ने उनके विचारों को सजगता के साथ अपनी फिल्मों में नहीं उतारा है, लेकिन उनकी फिल्में देखकर उन पर गांधी का प्रभाव होने का एहसास होता है। बाद में तो फिल्मों पर गांधी का प्रभाव होना उनकी सफलता की गारंटी बन गया। (KIDWAI, 2019)

भारत में सिनेमा के विकास के समानांतर गांधी अपने अहिंसा रूपी शस्त्र के साथ अंग्रेज़ों के खिलाफ मोर्चा संभाले हुए थे। उनकी अहिंसा और विरोध के अनोखे तरीके फिल्मकारों को आकर्षित कर रहे थे। गांधी पर बनी पहली बायोपिक फिल्म 1982 में 'गांधी' नाम से प्रदर्शित हुई। भारतीय सहयोग से बनी यह ब्रिटिश फिल्म गांधी की मृत्यु के 34 वर्ष बाद बनी। रिचर्ड एटनबरो के निर्देशन और बेन किंग्सले की मुख्य भूमिका वाली यह फिल्म बेहद सफल अंतर्राष्ट्रीय फिल्मों में शामिल है। खुद एटनबरो ने अपनी इस फिल्म के बारे में कहा था, 'मेरा उद्देश्य गांधी को इस फिल्म में अहिंसा के पुरोगामी के रूप में प्रस्तुत करना था। दुनिया में अन्य कहीं पर, किसी भी असहयोग आंदोलन को जनता का ऐसा समर्थन नहीं मिला जैसा कि भारत में गांधी के आंदोलनों को मिला था। बहुत हद तक उनकी वजह से ही उनके देश को ब्रिटिश राज से मुक्ति मिल सकी थी।' (A. Ajai, 2019)

'गांधी' ने जहां कई एकेडमी अवॉर्ड्स हासिल किए वहीं समीक्षकों की राय में यह फिल्म खरी नहीं उतर सकी। अखिल गुप्ता इसे पॉलीटिकल बायोग्राफी बताते हैं। उनके अनुसार फिल्म में गांधी को एक नेता के रूप में प्रस्तुत किया गया है जबकि उनके अन्य पक्ष कहीं अधिक महत्वपूर्ण थे। वह कहते हैं कि फिल्म ऐतिहासिक संदर्भ में अपने दर्शकों को गुमराह करती है। (Gupta, 1983)

फिल्मकार श्याम बेनेगल ने 1996 में 'द मेकिंग ऑफ द महात्मा' प्रस्तुत की, जो गांधीजी के दक्षिण अफ्रीका में बिताए 21 वर्षों की कहानी है। फिल्म दिखाती है कि जब दक्षिण अफ्रीका के मेरिन्सबर्ग रेलवे स्टेशन पर जायज टिकिट होने के बावजूद गांधी को गोरे सहयात्री के विरोध पर ट्रेन से सामान सहित प्लेटफॉर्म पर फेंक दिया जाता है, तो इससे पहुंचे आघात के बाद एक आम आदमी के महात्मा बनने की अंतर्यात्रा शुरू हो जाती है। हालांकि यह फिल्म सफल नहीं रही लेकिन इसमें गांधी के जीवन की उन कुछ घटनाओं को शामिल किया गया है, जहां से उन्होंने अहिंसा के मार्ग पर चलना आरंभ किया था।

वर्ष 2007 में प्रदर्शित हुई और फिरोज अब्बास खान व अनिल कपूर के निर्देशन में बनी 'गांधी, माय फादर' मुख्य रूप से गांधी के बड़े बेटे हरिलाल को केंद्र में रखकर बनाई गई है। जब्बार पटेल की फिल्म 'डॉक्टर बाबासाहेब अम्बेडकर,' कमल हासन की 'हे राम,' राजकुमार संतोषी की 'द लीजेंड ऑफ भगत सिंह,' केतन मेहता की 'सरदार,' राकेश रंजन कुमार की 'गांधी टू हिटलर' सहित कई फिल्मों में गांधी अथवा उनके विचार नज़र आते हैं। हालांकि कुछ फिल्मों में उन्हें नकारात्मक रूप में प्रदर्शित करने का भी प्रयास किया गया है।

वर्ष 2000 में आशुतोष गोवारीकर ने लगान नाम से फिल्म बनाई, जो बेहद सफल रही। फिल्म का केंद्रीय पात्र गांधी के नज़दीक दिखाई देता है। फिल्म का नायक जाति-धर्म के भेद के बिना अहिंसक तरीके अपनाते हुए लोगों को अन्याय के खिलाफ एकजुट करता है। गोवारीकर की ही वर्ष 2004 में प्रदर्शित फिल्म 'स्वदेस' भी गांधीवादी विचारों के करीब है। फिल्म का केंद्रीय पात्र अपने गांव के विकास के लिए अमेरिका से लौट आता है। गांधीजी ने 1937 से 1940 तक वर्धा आश्रम में स्वयं को राजनीति से दूर रखकर केवल ग्राम सुधार पर गहन विचार किया था। (चौकसे, 2012)

वर्ष 2005 में जाहनू बरुआ के निर्देशन में बनी 'मैंने गांधी को नहीं मारा' व दीपा मेहता की 'वॉटर' भी गांधीवादी मूल्यों की बात करती हैं। प्रकाश झा की सत्याग्रह और अमित राय की 'रोड टू संगम' भी गांधीवाद से प्रभावित उम्दा फिल्में थीं, हालांकि बॉक्स ऑफिस पर ये फिल्में कोई कमाल नहीं दिखा सकीं।

वर्ष 2006 में प्रदर्शित हुई राजकुमार हीरानी की 'लगे रहो मुन्नाभाई' बेहद सफल रही। इस फिल्म ने सफलताओं के सारे कीर्तिमान तोड़ दिए थे। इसके प्रदर्शन के बाद एक बार फिर हर ज़ुबां पर गांधी का नाम था। यही नहीं, हर कहीं उनके सुझाए विरोध के अहिंसक तरीके लोकप्रिय हो रहे थे। रचेल ड्वेयर कहते हैं, 'लगे रहो मुन्नाभाई' गांधी के जटिल दृष्टिकोण को प्रस्तुत नहीं करती लेकिन बताती है कि उनकी रणनीतियों में से एक सत्याग्रह को अपनाकर किस तरह संघर्ष का नैतिक समाधान निकाला जा सकता है। फिल्म के मुख्य किरदार मुन्नाभाई ने इसे 'गांधीगिरी' कहा है। (Dwyer, 2011)

सिनेमा में मंडेला

दक्षिण अफ्रीकी गांधी मतलब नेलसन मंडेला पर 1996 में मंडेला नाम से ही पहली वृत्तचित्र फिल्म बनी, जो इतनी उम्दा रही कि एकेडमी अवॉर्ड्स के लिए इसका नामांकन हुआ। फिल्म मंडेला के जीवन इतिहास को बयां करती है। वर्ष 2009 में उन पर केंद्रित फिल्म 'इन्विक्टस' बनी, जो बेहद लोकप्रिय और सफल रही। क्लिंट ईस्टवुड के निर्देशन में बनी यह फिल्म जॉन कार्लिन की किताब 'कॉनक्विरिंग द एनिमी' पर आधारित है। फिल्म 1995 का दक्षिण अफ्रीकी परिदृश्य प्रस्तुत करती है। उस समय एक ओर नेलसन मंडेला राष्ट्रपति चुनाव के लिए खड़े हुए थे तो दूसरी ओर उनका रंगभेद से ग्रसित देश रग्बी विश्व कप की मेजबानी कर रहा था।

'इन्विक्टस' में रग्बी को एक संदर्भित खेल के रूप में लिया गया है लेकिन फिल्म इस खेल के विविध पक्षों की बात न करते हुए खेलों के महत्वपूर्ण सामाजिक पक्ष की ओर इंगित करती है, जो खेल गतिविधियों को बढ़ाता व न्यायसंगत ठहराता है। फिल्म खेलों की सामाजिक एकीकरण की विस्तृत क्षमता की ओर इंगित करती है। (Assumpcao & et.al, 2016)

वर्ष 2011 में फिल्म 'विनी मंडेला' आई। फिल्म नेलसन मंडेला की पत्नी विनी मंडेला पर केंद्रित है। फिल्म का निर्देशन डेरेल रूड्ट ने किया है। वर्ष 2013 में मंडेला पर बनी बायोग्राफिकल फिल्म 'मंडेलाः लांग वॉक टू फ्रीडम' रिलीज हुई। फिल्म नेलसन मंडेला के शुरुआती जीवन से लेकर उनके दक्षिण अफ्रीका के प्रथम अश्वेत राष्ट्रपति बनने तक की कहानी प्रस्तुत करती है। जस्टिन कैडविक ने फिल्म का निर्देशन किया है और इदरिस अल्बा ने मुख्य भूमिका निभाई है। (Shinde, 2014)

वर्ष 2010 में उन पर बनी वृत्तचित्र फिल्म 'द सिक्सटींथ मेन' आई। क्लिफॉर्ड बेल्टॉल ने इसका निर्देशन किया है। वर्ष 2014 में 'मंडेलाः द मिथ एंड मी' (मूल शीर्षक- ए लेटर टू नेलसन मंडेला) प्रदर्शित हुई। वर्ष 2017 में 'विनी' नाम से एक वृत्तचित्र फिल्म का प्रदर्शन हुआ। फिल्म में मंडेला की पत्नी विनी स्वयं अपने जीवन की कहानी बताती हैं। इनके अतिरिक्त एंडगेम, म्यूजिक फॉर मंडेला, मंडेलाज़ गन जैसी फिल्में भी दक्षिण अफ्रीका की रंगभेद की समस्या व मंडेला के जीवन पर केंद्रित रहीं। इसके अतिरिक्त मदीबा नाम से उन पर एक लघु श्रंखला का भी निर्माण हुआ।

सिनेमा में किंग

मार्टिन लूथर किंग के जीवन व कृतित्व पर आधारित कई वृत्तचित्र फिल्मों, फीचर फिल्मों और बायोग्राफिकल फिल्मों का निर्माण हुआ है। 'सिटीजन किंग' नाम से बनी वृत्तचित्र फिल्म

किंग के जीवन के अंतिम पांच वर्षों की घटनाओं को समेटती है। फिल्म दो भागों में बनी है। पहले भाग में बर्मिंघम में उनकी गिरफ्तारी और फिर जेल, वाशिंगटन तक का मार्च, उनका आई हेव ए ड्रीम भाषण, सिविल राइट्स एक्ट का लागू होने और उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार मिलने तक की कहानी है। दूसरे भाग में सेलमा से मोंटगोमरी तक के मार्च, किंग के शिकागो जाने व अन्य घटनाओं सहित उनकी हत्या की कहानी प्रस्तुत की गई है। फिल्मकार ऑरलेंडो बैगवेल और नोलैंड वॉकर ने इसे बनाया है। उन पर बनी किंगः ए फिल्म्ड रिकॉर्ड... 'मोंटगोमरी टू मेम्फिस' – फिल्म किंग के शुरूआती जीवन में मोंटगोमरी में सिविल राइट्स आंदोलन की शुरूआत से लेकर मेम्फिस में 1968 में उनकी हत्या तक की कहानी है। किंग की हत्या के 40 वर्षों बाद बनी 'किंगः गो बियोन्ड द ड्रीम टू डिस्कवर द मैन' वर्तमान समय में उनके संदेशों की प्रासंगिकता पर आधारित है। 'ब्रिंगिग किंग टू चाइना' किंग से प्रेरित फीचर फिल्म है जिसमें किंग के अहिंसा के स्वप्न को चीन में साकार करती एक महिला के संघर्ष को दिखाया गया है। इसी तरह 'आई एम क्यूरियसः यलो' भी किंग से प्रेरित एक महिला की कहानी है जो सामाजिक समानता व लैंगिक स्वतंत्रता के मुद्दे उठाती है।

एवा डूवर्ने की वर्ष 2014 में प्रदर्शित फिल्म 'सेलमा' अश्वेतों के लिए मताधिकार हासिल करने के लिए किए गए किंग के ऐतिहासिक संघर्ष की कहानी है। रंगभेद की अमेरिका की असमान नीति से संघर्ष कर रहे अश्वेत अमेरिकियों के लिए किंग एक उम्मीद की किरण बनकर उभरे थे। वह फिल्म में एक जगह कहते हैं कि अश्वेतों को मताधिकार न देना, उनके साथ अलगाव का भाव रखना और बसों का बायकॉट, ये सभी घटनाएं एक ही समस्या से जुड़ी हुई हैं। और ये सब तब दूर हो जाएंगी जब श्वेत अमेरिकियों की चेतना को जागृत कर उन्हें मानव समानता की सच्चाई से परिचित कराया जाएगा और उन पर इस बात को स्वीकारने के लिए दबाव बनाया जाएगा कि हर व्यक्ति चाहे वह किसी भी नस्ल का हो, ईश्वर का अंश है। (Norris, 2016)

किंग पर मोर एंग्री देन अफ्रेडः द प्रॉमिस्ड लैंड, एट द रिवर आई स्टैंड जैसी फिल्में भी बनीं।

विमर्श एवं निष्कर्ष

महात्मा गांधी, नेलसन मंडेला और मार्टिन लूथर किंग जूनियर, तीनों ही अपने-अपने समय की महान हस्तियां रही हैं। तीनों नायकों ने अहिंसक तरीके अपनाते हुए अन्याय के खिलाफ अपनी आवाज़ को बुलंद किया। इनमें से मंडेला की राह थोड़ी सी अलग रही, शुरुआती समय में जहां वे साम्यवाद से प्रभावित रहे, वहीं बाद में उन्होंने बदलाव के लिए अहिंसक मार्ग ही चुना। लेकिन गांधी शेष दो नायकों से अलग हैं।

गांधी केवल अपने अहिंसक मार्ग के लिए ही विख्यात नहीं हैं बल्कि उनका पूरा जीवन ही प्रेरणास्पद है। गांधी पर आधारित अथवा उनसे प्रेरित फिल्मों पर उनके जीवन के कई पहलुओं का असर रहा है। गांधी पर वृत्तचित्र फिल्में तो कई बनीं लेकिन बायोग्राफिकल फिल्मों की श्रेणी में एटनबरो की गांधी, द मेकिंग ऑफ महात्मा और गांधी माय फादर को रखा जा सकता है। अन्य कई फिल्में आज़ादी के संघर्ष के अन्य नायकों के जीवन पर आधारित हैं और गांधी को उन फिल्मों में उन नायकों के साथ उनके रिश्ते के बरक्स ही पर्दे पर उतारा गया है। गांधी का व्यक्तित्व इतना विशाल रहा है कि उसे इस तरह से समेटा जाना शायद फिल्मकारों के लिए भी संभव नहीं रह सका। सिनेमा ने उनसे प्रेरणा ली है, फिल्मी किरदार उनसे प्रभावित रहे हैं और कहानियों पर उनके मूल्यों का असर स्पष्ट दिखाई दिया है। फिल्मकार शांताराम की दो आंखें बारह हाथ (1957), लगान, लगे रहो मुन्नाभाई जैसी फिल्में भी कहीं न कहीं अहिंसा के मूल्य को छूती हैं।

दूसरी ओर नेलसन मंडेला व किंग जॉर्ज पर बनी फिल्मों में अहिंसक संघर्ष को स्पष्ट रूप से फिल्मांकित किया गया है। मंडेलाः लांग वॉक टू फ्रीडम, इन्विकटस और सेलमा इसके उम्दा उदाहरण हैं।

गांधी, मंडेला और किंग के निधन के वर्षों बाद भी उनके विचारों पर आधारित फिल्मों का निर्माण लगातार जारी है। उन पर कई वृत्तचित्र फिल्में और लघु फिल्में बनाई जा रही हैं, जो समय-समय पर विभिन्न फिल्म समारोहों में तो प्रदर्शित होती ही हैं, साथ ही ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर भी दर्शकों के लिए उपलब्ध रहती हैं। फिल्मों का बनना इसका परिचायक है कि महात्मा गांधी, नेलसन मंडेला और मार्टिन लूथर किंग का सत्य आधारित अहिंसा का मार्ग सर्वश्रेष्ठ है। वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में इन तीनों नायकों के अहिंसक मार्ग की प्रासंगिकता एक बार फिर नज़र आने लगी है।

संदर्भ

- A. Ajai, G. B. (2019). Multiple Colours of Gandhi in Post-Colonial. International Journal of Recent Technology and Engineering (IJRTE) , 191-195.
- Assumpcao, L. O., & et.al, J. B. (2016). Sports, Nationalism and Symbolic Efficiency: The Film Invictus. International Journal of Research in Humanities

and Social Studies , 18–24.
- Attenborough, R. (Director). (1982). Gandhi [Motion Picture].
- Benegal, S. (Director). (1996). The Making of The Mahatma [Motion Picture].
- David, M., & Passini, S. (2010). Avoiding Crimes of Obdience: A Comparative Study of the Autobiographies of MK Gandhi, Nelson Mandela and Martin Luther King, Jr. Peace and Conflict Journal of Peace Psychology , 295–319.
- DuVernay, A. (Director). (2014). Selma [Motion Picture].
- Dwyer, R. (2011). The Case of the Missing Mahatma:Gandhi and the Hindi Cinema. Public Culture , 349–376.
- Eastwood, C. (Director). (2009). Invictus [Motion Picture].
- Ghosh, A., & Babu, T. (2006). Lage Raho Munna Bhai: Unravelling Brand 'Gandhigiri'. Economic and Political Weekly , 5225–5227.
- Gupta, A. (1983, Autumn). Attenborough's Truth: The Politics of Gandhi. The Threepenny Review , pp. 22–23.
- Hasan, M. (2016, December 16). Mandela and the Mahatma. Retrieved December 29, 2021, from The Hindu: https://www.thehindu.com/opinion/op-ed/Mandela-and-the-Mahatma/article12009462.ece
- Jr., M. L. (1958, 1 September). ₹My Pilgrimage to Nonviolence₹. Retrieved December 29, 2021, from Stanford University: https://kinginstitute.stanford.edu/king-papers/documents/my-pilgrimage-nonviolence
- Khan, F. A. (Director). (2007). Gandhi, My Father [Motion Picture].
- KIDWAI, R. (2019, october 2). Observer Research Foundation. Retrieved october 6, 2021, from orfonline.org: https://www.orfonline.org/expert-speak/gandhi-great-influencer-on-hindi-cinema-despite-his-celluloid-aversion-56035/
- Koenig, R. (2013, December 6). Gandhi inspired Mandela on South Africa's 'Long Road to Freedom'. Retrieved December 29, 2021, from St. Louis Public Radio – Understanding Starts Here: https://news.stlpublicradio.org/government-politics-issues/2013-12-06/gandhi-inspired-mandela-on-south-africas-long-road-to-freedom
- Kubrak, T. (2020). Impact of Films: Changes in Young People's Attitudes after Watching a Movie . Behavioral Sciences , 1–13.
- Martin Luther King, J. (2020, August 20). American Rhetoric. Retrieved december 28, 2021, from American Rhetoric:

https://www.americanrhetoric.com/speeches/mlkihaveadream.htm
- Norris, M. (2016). Dr. King and the Image of God: A Theology of Voting Rights in Ava DuVernay. Journal of Religion & Film , 1-26.
- Roychowdhury, A. (2016, july 18). MandelaDay: Gandhi was not the only Indian to inspire Madiba. Retrieved December 29, 2021, from The Indian Express: https://indianexpress.com/article/research/mandeladay-gandhi-was-not-the-only-indian-to-inspire-madiba/
- Shinde, N. S. (2014). Long Walk To Freedom:The Experience Viewing an Autobiography. Critical Space , 75-84.
- गांधी, म. (2019). सत्य के साथ मेरे प्रयोग. नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन.
- गुहा, र. (2015). गांधी भारत से पहले. दिल्लीः पेंगुइन बुक्स.
- चौकसे, ज. (2012). महात्मा गांधी और सिनेमा. मुंबईः मौर्य आर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड.
- भारद्वाज, अ. (n.d.). सत्याग्रह. Retrieved october 5, 2021, from satyaggrah.scroll.in: https://satyagrah.scroll.in/article/108401/nelson-mandela-life-and-work-profile
- https://guides.library.vcu.edu/mlk/film#s-lg-box-12080346

बॉलीवुड में महिला फिल्म निर्देशिकाओं की भूमिका

* डॉ. रजनीश कुमार झा

शोध सारः फिल्में हमारे दैनिक जीवन का एक अहम हिस्सा हैं या कहें बन गई हैं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। फिल्म उद्योग की जिम्मेदारी बेहतर और अच्छी फिल्में बनाने की है, क्योंकि यही फिल्में दर्शकों और हमारे मन पर असर डालती हैं। बॉलीवुड अब 100 साल से ज्यादा का सफर तय कर चुका है। इस दौरान कई फिल्म निर्देशकों ने अपने काम से न केवल मनोरंजन किया, बल्कि समाज की घटनाओं को भी हमारे सामने रखा। एक समय यानी शुरुआती दौर में फिल्म शब्द आधी आबादी के लिए प्रतिबंधित सा था, लेकिन धीरे-धीरे समय बदला और महिला अभिनेत्रियों के साथ-साथ महिला निर्माता-निर्देशिकाओं ने भी अपना हुनर दिखाना शुरु किया। फातिमा बेगम के रूप में बॉलीवुड को पहली महिला निर्देशिका मिली, उसके बाद जद्दनबाई, शोभना समर्थ और न जाने कितनी निर्देशिकाओं ने फिल्मी फलक पर कदम रखा। और न केवल कदम रखा बल्कि अच्छी खासी फिल्में भी बनाईं। 1980 के दशक में कई महिला निर्देशिकाओं ने अंतर्राष्ट्रीय फलक पर भी नाम कमाया। इनमें मीरा नायर, अपर्णा सेन सई परांजपे प्रमुख हैं। बाद में दीपा मेहता, अरुणा राजे जैसी कुछ और महिलाएं निर्देशन के फील्ड में आईं। अब इनकी विरासत आने वाली पीढ़ी ने संभाल रखी है। फराह खान, जोया अख्तर, मेघना गुलजार, किरण राव समेत कई युवा फिल्म निर्देशिकाएं हैं जो समाज के लिए बेहतर फिल्मों का निर्माण कर रही हैं।

मुख्य शब्दः बॉलीवुड, फिल्म, फिल्म डायरेक्टर, महिला निर्देशिकाएं।

प्रस्तावना

बॉलीवुड में महिला निर्देशिकाओं की एंट्री भले ही देर से हुई पर हम इसे देर आए दुरुस्त आए कह सकते हैं। वे बेहतरीन फिल्में लेकर भी आ रही हैं। हिंदी सिनेमा में पिछले कई सालों में बड़े बदलाव देखने को मिले हैं जिनमें कुछ बदलाव बेहतरीन हैं। अब पहले से कहीं ज्यादा महिला प्रधान फिल्में बनने लगी हैं। सबसे खास बात है कि इन फिल्मों को दर्शक काफी पसंद भी कर रहे हैं। हिंदी सिनेमा में महिलाएं अपने किरदारों और इंडस्ट्री में अपनी स्थिति को लेकर भी काफी सतर्क हो चुकी हैं। यही वजह है कि अब फिल्मों में बराबरी का माहौल देखने को मिल रहा है। सिर्फ अभिनय के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि निर्देशन के क्षेत्र में भी महिलाएं सफल हो रही हैं। बॉलीवुड में लंबे समय तक सिर्फ पुरुष निर्देशकों का ही वर्चस्व रहा है, लेकिन महिलाओं ने शुरु से ही इस क्षेत्र में अपना दबदबा कायम करने की कोशिश की है। अब बहुत सी महिलाएं निर्देशन के क्षेत्र में उतर भी रही हैं और करोड़ों की कमाई करने वाली बढ़िया फिल्में भी बना रही हैं।

उद्देश्य

बॉलीवुड में महिला निर्देशिकाओं की भूमिका उनके योगदान के साथ-साथ उनकी तरफ से उठाए गए विषयों का अध्ययन।

शोध पद्धति

शोधपत्र बॉलीवुड में महिला फिल्म निर्देशिकाओं की भूमिका को लिखने के लिए विवेचनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। इस शोध में द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है, जिसके तहत पुस्तकें, समाचार पत्र और पत्रिकाएं शामिल हैं।

विषय का चयन क्यों?

हिंदी सिनेमा में महिलाएं अपने किरदारों और इंडस्ट्री में अपनी स्थिति को लेकर काफी सतर्क हो चुकी हैं। यही वजह है कि अब बराबरी का माहौल देखने को मिल रहा है। बॉलीवुड में लंबे समय तक सिर्फ पुरुष निर्देशकों का ही वर्चस्व रहा है, लेकिन महिलाओं ने शुरू से ही इस क्षेत्र में खुद को कामयाब बनाने की कोशिश की है। सिनेमा के 108 साल होने को है पर अंगुलियों पर गिनने लायक महिलाएं ही निर्देशन के क्षेत्र में उतरी हैं। हालांकि हम ये कह सकते हैं कि हर दौर में कुछ न कुछ महिला निर्देशिकाओं ने बेहतर करने की कोशिश की और वे सफल भी रहीं। वर्ष 2000 के बाद यानी इक्कीसवीं शताब्दी की बात करें तो कई महिलाओं ने करोड़ों की कमाई करने वाली बढ़िया फिल्में भी बनाईं और अब भी बना रही हैं। बॉलीवुड के शुरुआती दौर में हमारी जो सामाजिक स्थिति

* सीनियर प्रोड्यूसर, न्यूज़ स्टेट / न्यूज़ नेशन

थी उसमें महिलाओं का आना खराब समझा जाता था। और तो और, उस दौर में महिलाओं का किरदार भी पुरुष ही किया करते थे। पर धीरे-धीरे समय बदला और आज हम उस दौर में पहुंच गए हैं जहां महिलाएं न केवल निर्देशन बल्कि संगीत, तकनीक के क्षेत्र में भी अपनी किस्मत आजमा रही हैं। इस विषय का चयन के प्रमुख उद्देश्य यही है कि महिला निर्देशिकाएं पुरुष निर्देशकों के सामने अपने आपको किस तरह खुद को महत्वपूर्ण मानती हैं। साथ ही कितना महत्वपूर्ण फिल्म बनाती हैं या कहें किस प्रकार के मुद्दे को दर्शकों के सामने उठाती हैं या प्रस्तुत करती हैं।

भूमिका

कुछ ऐसी महिला निर्देशकों की जिन्होंने अपने काम से इंडस्ट्री पर राज किया चर्चा करेंगे। साल 2022 में हिंदी सिनेमा को पूरे 109 साल हो जाएंगे। बॉलीवुड सिनेमा का दुर्भाग्य कहें या कुछ और, जब भी बॉलीवुड की बात होती है तो ये देखने को मिलता है कि महिला निर्देशकों को लेकर केवल सन्नाटा छाया रहा। यूं कहें तो बॉलीवुड महिला निर्देशकों के लिए तरस सा गया। फातिमा बेगम हिंदी सिनेमा की पहली महिला निर्देशक थीं, लेकिन उनके बाद लंबे समय तक कहीं कुछ आहट सुनाई नहीं दी, और सारा टैलेंट कैमरे के पीछे नहीं, आगे ही रंग बिखेरता रहा। बहरहाल, इक्कीसवीं सदी के पूर्वार्ध और बाद के दो दशक में न केवल हिंदी सिनेमा में महिला डायरेक्टर हुई हैं, बल्कि उन्होंने अपने कामों से ये बता दिया है कि वे किसी से कम नही हैं। निर्देशन के क्षेत्र में इन महिला निर्देशिकाओं ने न केवल अपना हुनर दिखाया और बॉक्स ऑफिस को बेहतरीन फिल्में दीं। अगर शुरुआती दौर से में महिला फिल्म निर्देशिकाओं की कमी थी तो आज के दौर में महिला निर्देशिकाओं की संख्या बढ़ी है। हालांकि ये रोचक तथ्य है कि भारत में जितनी महिला निर्देशिकाओं की संख्या है वो विश्व के किसी भी देश में नहीं है। आज स्थिति यह बन गई है कि भारतीय महिला निर्देशिकाओं ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अहम पहचान बना ली है। इन महिला निर्देशिकाओं में दीपा मेहता, मीरा नायर, अपर्णा सेन, विजया मेहता, अरुणा राजे, नंदिता दास, कल्पना लाजमी, पामेला रुक्स प्रमुख हैं।

महिलाओं की निर्देशन क्षेत्र में आज भले ही रुचि बढ़ती जा रही हो पर अतीत इतना सुनहरा नहीं रहा है। भारतीय फिल्मों के इतिहास में महिला निर्देशिकाओं में अगर कोई नाम गर्व के साथ लिया जा सकता है तो वो है रतनबाई का। रतनबाई भारत की पहली फिल्म निर्माता थीं। भारतीय सिनेमा के पितामह दादा साहब फाल्के के शिष्य बाबूराव पेंटर ने 1918 में कांग्रेस अधिवेशन पर जो फिल्म बनाई थी, उसी फिल्म को देखकर रतनबाई ने बाबूराव पेंटर को नया स्टूडियो बनाने के लिए आर्थिक मदद की।

रतनबाई को जहां भारतीय फिल्मों में पहली महिला फिल्म निर्माता के रूप में जाना जाता है वहीं पहली महिला निर्देशिका होने का गौरव फातिमा बेगम को है। उस दौर में अभिनय के क्षेत्र में धूम मचाने के बाद वह निर्देशन के क्षेत्र में उतरीं और अपने सहयोगियों के साथ फातिमा फिल्म कॉरपोरेशन की स्थापना की, हालांकि बाद में उसका नाम बदलकर विक्टोरिया फातिमा कंपनी कर दिया गया। 1926 में फातिमा बेगम ने बुलबुल-ए-पेरिस्तान नाम की एक मूक फिल्म बनाई। इसके बाद 1926 से 1929 के बीच नौ फिल्मों का निर्माण किया। बुलबुल-ए-पेरिस्तान एक बड़े बजट का फंतासी फिल्म थी, उसमें स्पेशल इम्पैक्ट का इस्तेमाल भी किया गया था, क्योंकि इस कहानी का कैनवास पेरिस्तान में सेट था। ये तो शुरुआत थी, उसके बाद कई महिला फिल्म निर्देशिकाओं ने निर्देशन की कमान संभाली। फातिमा बेगम से लेकर आज के दौर में फराह खान, जोया अख्तर और मेघना गुलजार तक ने न केवल बेहतरीन फिल्में बनाई हैं बल्कि सामाजिक परिवेश और सामाजिक मुद्दों को भी बड़े पर्दे पर उठाया है।

बॉलीवुड का संक्षिप्त इतिहास

भारतीय सिनेमा का इतिहास 19वीं शताब्दी के आखिरी समय का है। 1896 में ल्युमेर ब्रदर्स द्वारा शूट की गई पहली फिल्म का प्रदर्शन मुंबई, जो कभी बंबई था, में किया गया लेकिन वास्तव में सिनेमा का इतिहास तब बना जब भारतीय सिनेमा के पिता दादा साहब फाल्के ने भारत की पहली लंबी फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' बनाई, जो सन् 1913 में प्रदर्शित हुई। मूक फिल्म होने के बावजूद, इसे व्यावसायिक सफलता मिली। भारतीय सिनेमा की पहली फिल्म यही 'राजा हरिश्चंद्र' थी, जिसे 1914 में लंदन में प्रदर्शित किया गया था। हालांकि, भारतीय सिनेमा के सबसे पहले प्रभावशाली व्यक्तित्व दादासाहब फाल्के ने 1913 से 1918 तक 23 फिल्मों का निर्माण और संचालन किया, भारतीय फिल्म उद्योग की प्रारंभिक वृद्धि हॉलीवुड की तुलना में तेज नहीं थी। अर्देशिर ईरानी ने ध्वनि सहित पहली 'आलम आरा' फिल्म बनाई थी जो कि 1931 में बाम्बे में रिलीज हुई। 'आलम आरा' के प्रदर्शन ने भारतीय सिनेमा के इतिहास में एक नए युग की शुरुआत की। 1931 में आलम आरा के लिए रिकॉर्ड किया गया पहला गीत 'दे दे खुदा के नाम पर' था। यह वाजिर मोहम्मद खान द्वारा गाया गया था। इसके बाद कई निर्माण कंपनियों ने कई फिल्मों को रिलीज किया, जिसकी वजह से भारतीय सिनेमा में काफी वृद्धि हुई। 1930 और 1940 के दौरान कई प्रख्यात फिल्म हस्तियों जैसे देवकी बोस, चेतन आनंद, एस. एस. वासन सहित अन्य प्रसिद्ध लोग फिल्मी परदे पर देखे गए। 1950 और 1960 में भारतीय सिनेमा के इतिहास को स्वर्ण युग माना जाता है क्योंकि गुरुदत्त, राज कपूर, दिलीप कुमार, मीना कुमारी, मधुबाला, नर्गिस, नूतन, देव आनंद और वहीदा रहमान जैसे कुछ यादगार कलाकारों का उदय हुआ। 1970 और 1980 के दशक में राजेश खन्ना, अमिताभ बच्चन, शत्रुघ्न सिन्हा जैसे कलाकारों का आगाज हुआ। ये वो दौर था जब फिल्मों की कमाई निर्देशकों के नाम पर हुआ करती थी। 1990 के दशक में शाहरुख खान, सलमान खान, माधुरी दीक्षित, आमिर खान, जूही चावला, चिरंजीवी और कई अन्य कलाकारों का एक नया दल फिल्मी दुनिया में दिखाई

दिया। अभिनेताओं की इस नई शैली ने अपने प्रदर्शन को बढ़ाने के लिए नई तकनीकों का इस्तेमाल किया, जिसने आगे बढ़कर भारतीय फिल्म उद्योग को उन्नति के शिखर पर पहुंचा दिया।

बॉलीवुड में महिला फिल्म निर्देशिकाएं- एक अंतहीन सफर

फातिमा बेगम

बॉलीवुड की पहली महिला निर्देशक थीं फातिमा बेगम जिन्होंने इस संघर्ष की शुरुआत की थी। उन्होंने फिल्म 'वीर अभिमन्यु' से अभिनय के क्षेत्र में कदम रखा। इसके बाद उन्हें फिल्मों के निर्देशन में दिलचस्पी आने लगी तो उन्होंने अपना प्रोडक्शन हाउस भी स्थापित कर लिया, जिसका नाम फातिमा फिल्म्स था। उन्होंने 1926 में बुलबुल-ए-पेरिस्तान का निर्देशन किया। फिल्मों का निर्देशन कर रहीं फातिमा बेगम के लिए पुरुषों के वर्चस्व वाले इस क्षेत्र में सफलता पाना आसान नहीं था।

हालांकि उन्होंने हार नहीं मानी और हीर रांझा (1928), शकुंतला (1929) जैसी कई फिल्मों का निर्देशन किया। निर्देशन के साथ ही फातिमा ने अपनी फिल्मों का निर्माण भी किया। उन्होंने कोहेनूर और इंपीरियल स्टूडियो की फिल्मों में भी काम किया। सवाक फिल्मों के आने के बाद भी वह काम करती रहीं। 1934 में उन्होंने सेवा सदन मे काम किया जिसका निर्देशन नूनूभाई बी. वकील ने किया था। फातिमा की फिल्म पंजाब लांसर्स 1937 में रिलीज हुई थी और इसके निर्देशक होमी मास्चर थे। 1983 में जब फातिमा बेगम का निधन हुआ, तब वह 91 साल की थीं और उनका निधन गुमनामी में हो गया।

जद्दनबाई

बॉलीवुड की दिग्गज अभिनेत्री रहीं नरगिस दत्त की मां और संजय दत्त की नानी जद्दनबाई भी अपने जमाने की हिट अदाकारा थीं। साथ ही वो पहली महिला संगीतकार भी थीं। जद्दनबाई मुंबई फिल्म इंडस्ट्री का सबसे बड़ा नाम बनीं। 1935 में उन्होंने संगीतकार की भूमिका निभाते हुए 'तलाशे हक' में अपना जौहर दिखाया। 1936 में 'मैडम फैशन', 1936 में एक अन्य फिल्म 'हृदय मंथन', 1937 में 'मोता का हार', इसी साल एक अन्य फिल्म 'जीवन स्वप्न' में उन्होंने अपने निर्देशन से लोगों का दिल जीत लिया।

मोहन बाबू (नरगिस के पिता) ने जद्दनबाई से शादी कर ली थी और अपना धर्म बदल लिया था। जद्दनबाई ने कड़े संघर्ष के बाद खुद को एक निर्देशक के रूप में स्थापित किया। हालांकि फिल्म 'बरसात' के निर्माण के दौरान कैंसर के कारण उनका निधन हो गया।

शोभना समर्थ

अपनी सौम्य छवि से दर्शकों के दिल में जगह बनाने वाली शोभना समर्थ ने निर्देशन में भी अपना सिक्का जमाया था। उन्होंने 1935 में फिल्मों में अभिनय करना शुरू किया था। साल 1950 में फिल्म 'हमारी बेटी' से उन्होंने निर्देशन के क्षेत्र में कदम रखा था। इसके 10 साल बाद उन्होंने 'छबीली' फिल्म का निर्देशन किया था जिसमें उनकी दोनों बेटियां नूतन और तनूजा नजर आई थीं।

सई परांजपे

सई परांजपे को उन चुनिंदा फिल्म निर्देशकों में गिना जाता है, जिन्होंने आर्ट सिनेमा की गरिमा को बनाए रखा। उनका जन्म 19 मार्च 1938 को मुंबई में हुआ था। सई परांजपे ने जानदार मुद्दों को कभी संवेदनशील तरीके से तो कभी रोमांचक अंदाज में पेश किया। स्पर्श, चश्मे बद्दूर, कथा, साज, दिशा वो फिल्में हैं, जिन्होंने बॉलीवुड में आयाम कायम किया। उन्होंने कई मराठी नाटकों को लिखा और निर्देशित किया है। उन्होंने कई राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार अपने नाम किए। भारत सरकार ने सई परांजपे को उनकी कलात्मक प्रतिभा की पहचान के लिए साल 2006 में पद्म भूषण उपाधि से भी सम्मानित किया।

चश्मे बद्दूर जैसी कॉमेडी फिल्में बनाकर उन्होंने ये साबित किया कि इस तरह की फिल्में भी महिला निर्देशिकाएं बना सकती हैं। 1981 में आई 'चश्मे बद्दूर' फिल्म दिल्ली में रह रहे 3 बेराजगार नौजवानों की कहानी है। इन तीनों नौजवानों को एक अदद नौकरी जरूरत होती है। नौकरी से ज्यादा उन्हें जरूरत एक प्रेमिका की होती है। हास्य का ताना-बाना इसी के इर्द-गिर्द बुना गया है। फिल्म में 3 लड़कों का किरदार फारुख शेख, रवि वासवानी और राकेश बेदी ने निभाया। सई परांजपे ने फिल्म 'स्पर्श' का निर्देशन किया था। इस फिल्म में नसीरुद्दीन शाह, शबाना आजमी और ओमपुरी ने अभिनय किया था। फिल्म में अंधे लोगों को लेकर लोगों की मानसिकता को उजागर किया गया है। नसीरुद्दीन शाह ने एक अंधे आदमी का किरदार काफी बेहतरीन तरीके से निभाया था।

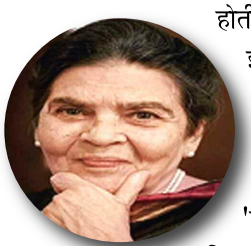

अरुणा राजे

अरुणा राजे का जन्म साल 1946 में हुआ, जिन्होंने हिंदी सिनेमा में अपने निर्देशक और संपादक से अलग आयाम स्थापित किया। 1976 में उन्होंने फिल्म 'शक', साल 1980 में 'गहराई' और 1982 में फिल्म 'सितम' का सह-निर्देशन अपने पति विकास देसाई के साथ किया। उनकी शादी ज्यादा दिनों तक नहीं चल सकी और दोनों ने तलाक ले लिया। लंबे समय के बाद उन्होंने 1988 में फिर से फिल्मी दुनिया में वापसी की और फिल्म 'रिहाई' का निर्देशन किया। 1992 में फिल्म 'पतित पवन' 1993 में 'शादी या...' जो एक टीवी सीरीज थी, 1996 में भैरवी, 2004 में तुम, 2019 में फायरब्रांड का निर्देशन किया है।

अरुणा राजे ने महिला सशक्तीकरण पर फिल्में बनानी उस दौर में शुरु की थीं, जब बॉक्स ऑफिस पर हर तरफ मसाला फिल्मों का बोलबाला था। 1988 में रिलीज हुई उनकी फिल्म 'रिहाई' हिंदी सिनेमा की क्लासिक फिल्मों में गिनी जाती है। रिहाई में अरुणा राजे ने हेमा मालिनी के लिए दमदार किरदार लिखा था। अरुणा राजे का नाम महिला सशक्तीकरण पर बनी फिल्मों के पुरोधाओं में लिया जाता है।

दीपा मेहता

बॉलीवुड का सिर गर्व से ऊंचा करने वाली दीपा मेहता ऑस्कर नॉमिनेटेड फिल्म डायरेक्टर हैं। इनकी फिल्में भारतीय परिवेश के सामाजिक मुद्दों और महिलाओं पर केंद्रित होती हैं। इन्होंने 1996 में बनी 'फायर' 1998 की 'अर्थ' और 2005 की 'वाटर' से ऑस्कर अवार्ड में प्रवेश किया। आज दीपा मेहता इंडो-कैनेडियन फिल्म डायरेक्टर के नाम से ज्यादा मशहूर हैं। दीपा मेहता के निर्देशन में बनी फिल्म 'फायर' दो महिलाओं के समलैंगिक रिश्तों पर आधारित थी। यह मध्यवर्गीय परिवार में उन दो महिलाओं की कहानी थी जो रिश्ते में देवरानी और जेठानी होती हैं और एक दूसरे के प्रति आकर्षित हो जाती हैं।

उस दौर में कई संगठनों ने इस फिल्म का विरोध किया था। दीपा मेहता की फिल्म 'वाटर' में विधवा महिलाओं के जीवन से जुड़ी स्याह दुनिया को दिखाया गया है। इस फिल्म को अकादमी अवॉर्ड 2007 के लिए नॉमिनेट भी किया गया। हालांकि फिल्म का काफी विरोध हुआ। दीपा मेहता को भारत की सबसे प्रतिष्ठित निर्देशकों में शुमार किया जाता है।

मीरा नायर

अपनी फिल्मों से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने वाली मीरा नायर पुरुषों को भी टक्कर देती हैं। मीरा ने अपने सफर की शुरुआत शार्ट फिल्म व डाक्यूमेंट्री से की लेकिन आज उनका नाम देश की बेस्ट फिल्म निर्देशक में शामिल हैं। फिल्म 'सलाम बॉम्बे' (1988) ने इन्हें बॉलीवुड में पहचान दिलाई, जिसके लिए इन्हें कई पुरस्कार भी मिल चुके हैं।

इतना ही नहीं, इनकी इस पहली फिल्म को कांस फिल्म फेस्टिवल में गोल्डेन कैमरा अवार्ड भी मिला। साल 1996 में आई फिल्म 'काम सूत्र' को लेकर देशभर में विरोध हुआ था। फिल्म में कई बोल्ड और न्यूड सीन फिल्माए गए थे। फिल्म को मीरा नायर ने डायरेक्ट किया था। मीरा ने हॉलीवुड फिल्में जैसे Amelia, Queen of Katwe, The Namesake जैसी फिल्में डायरेक्ट की हैं।

कल्पना लाजमी

कल्पना लाजमी मशहूर अभिनेता गुरुदत्त की भतीजी के साथ-साथ मशहूर चित्रकार ललिता लाजमी की बेटी थी। कल्पना ने निर्देशन की शुरुआत श्याम बेनेगल के साथ बतौर असिस्टेंट डायरेक्टर की। सन् 1978 में 'डी.जी. मूवी पायोनियर', 1979 में 'ए वर्क स्टडी इन टी प्लकिंग' तथा 1981 में 'एलांग विथ ब्रह्मपुत्र' के बाद 1986 में फीचर फिल्म 'एक पल' बनाई। 1988 में 'लोहित किनारे' 1993 में 'रुदाली', '1997 में 'दरमियां', 2001 में दमन, '2003 में 'क्यों' और 2006 में फिल्म 'चिनगारी' निर्देशित की। रुदाली काफी पसंद की गई। वे नारीवादी विषयों पर फिल्म बनाने के लिए जानी गईं।

कल्पना लाजमी ने 'दमन' (दमनः ए विक्टिम आफॅ मेरिटल वायोलेंस) और 'चिनगारी' बनाई। 'चिनगारी' ग्रामीण परिवेश में वेश्यावृत्ति की कथा पर आधारित फिल्म थी। इसमें सुष्मिता सेन ने कल्पना के निर्देशन में बखूबी अभिनय किया। देखा जाए तो कामर्शियल अभिनेत्रियों में कलात्मक अभिनय की खोज का उल्लेखनीय काम कल्पना लाजमी ने किया। 2018 में उनका निधन हो गया।

अपर्णा सेन

अपर्णा सेन ने फिल्मों में अभिनय एवं निर्देशन के साथ लोकप्रिय बंगाली पत्रिका 'सानंद' का भी लम्बे समय तक संपादन किया। अपर्णा के निर्देशन में बनीं महत्वपूर्ण फिल्में थीं- 1981 में 36 चौरंगी लेन, 1984 में परोमा, 1989 सती, 1989 में पिकनिक, 1995

में युगांत, 2000 में हाउस ऑफ मेमोरीज, 2002 में मिस्टर और मिसेज अय्यर, 2005 में 15 पार्क एवेन्यू , 2010 में इति मृणालिनीः एन अनफिनिश्ड लेटर एवं 2013 में गोयनार बक्शो। उनकी फिल्म 'द जैपनीज वाइफ' को 2010 में कनाडा के कैलगरी में आयोजित 'हिडन जेम्स फिल्म महोत्सव' में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार दिया गया था। 'इति मृणालिनीः एन अनफिनिश्ड लेटर' बायोग्राफिक फिल्म है।

फिल्म शुरू होती है एक वेटरन एक्ट्रेस मृणालिनी मित्रा के सुसाइड नोट से। इसकी एक अभिनेत्री अपने जीवन की सभी त्रासदियों का दोषी खुद को मानती है और याद करती है अपने उस समय को जब वो अपने दोस्तों के साथ सिनेमा में जाने का ख्वाब देखती थी। स्त्री मनोदशा को फिल्माने में

अपर्णा सेन को महारत हासिल है। वे बिना झिझके स्त्री के अंतर्मन को बड़ी कलात्मकता से रुपहले पर्दे पर उतार देती हैं। इनकी नई फिल्म 'द रेपिस्ट' है। 'द रेपिस्ट' को वैराइटी मैगज़ीन द्वारा 'अपर्णा सेन के बेहतरीन कार्यों में से एक' के रूप में प्रशंसित किया गया है। फिल्म ने 26वें बुसान अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में प्रतिष्ठित किम जिसियोक पुरस्कार जीता है। फिल्म स्पष्टतः अपराध से परे दिखती है। यह न केवल यह पता लगाती है कि अपराध का कारण क्या है और यह अपराधियों को कैसे प्रभावित करता है, बल्कि यह भी पता चलता है कि जब सच्चाई करीब आती है तो किसी के आदर्शवादी विचारों में भारी बदलाव आता है।

फराह खान

फराह खान ने कोरियोग्राफी से लेकर फिल्मों के निर्देशन तक का एक लंबा सफर तय किया है। फिल्म

जो जीता वहीं सिंकदर में पहले कोरियोग्राफी का जिम्मा सरोज खान को दिया गया था, लेकिन किसी कारण वो ये काम नहीं कर पाईं और फिर ये मौका मिला फराह खान को। कोरियोग्राफी के बाद उन्होंने फिल्म निर्देशन में दिलचस्पी दिखाई और 'मैं हूं ना', 'ओम शांति ओम', 'हैप्पी न्यू ईयर' जैसी कई हिट फिल्में बनाईं।

जोया अख्तर:

सफल निर्देशकों की सूची में जोया अख्तर का नाम भी शामिल हो चुका है। वह एक ऐसी फिल्म डायरेक्टर हैं जिनकी फिल्में बॉक्स ऑफिस पर ही हिट नहीं होतीं बल्कि आलोचकों को भी पसंद आती हैं। उनकी मेहनत का ही ये फल था कि उनकी फिल्म

'गली ब्वॉय' को ऑस्कर के लिए भेजा गया था। जोया 'गली ब्वॉय' के अलावा 'दिल धड़कने दो', 'जिंदगी ना मिलेगी दोबारा' और 'लक बाई चांस' जैसी फिल्में बना चुकी हैं। जोया अख्तर बखूबी जानती हैं कि उनके ऑडियंस को क्या चाहिए।

उनकी फिल्मों में जिंदगी का सेलिब्रेशन दिखाई देता है और इसी वजह से उनकी फिल्में सबसे ज्यादा पसंद की जाती हैं। रीयल लाइफ में बहुत सी चीजें ऐसी भी होती हैं जो डिप्रेसिंग होती हैं और इंसान को फ्रस्टेशन के स्तर पर पहुंचा देती हैं, लेकिन जोया अख्तर की फिल्मों में रियलिटी होने के बावजूद उम्मीद की किरण दिखाई देती है जो ऑडियंस को आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हैं।

रीमा कागती

गुवाहाटी से आने वाली रीमा कागती बॉलीवुड की कुछ डिफरेंट डायरेक्टर्स में से एक हैं। साल 2007 में आई फिल्म हनीमून ट्रैवल्स प्राइवेट लि. से चर्चा में आई रीमा की दूसरी फिल्म तलाश थी जिसमें अमीर खान जैसे

दिग्गज बॉलीवुड एक्टर ने काम किया था।

इसके अलावा रीमा 'लक्ष्य', 'जिंदगी ना मिलेगी दोबारा', 'दिल चाहता है', 'लगान' जैसी फिल्मों का सहायक निर्देशन कर चुकी हैं। रीमा कागती की बॉलीवुड एक्टर अक्षय कुमार अभिनीत फिल्म 'गोल्ड' ने 100 करोड़ क्लब में अपनी जगह बनाई। फिल्म में अक्षय तपन भारतीय हॉकी टीम के मैनेजर हैं, जिनका सपना है कि भारत ब्रिटिश टीम को हराकर हॉकी में ओलंपिक गोल्ड मेडल हासिल करे।

तनुजा चंद्रा

1995 के बाद महिला निर्देशकों की कतार में तनुजा चंद्रा ने अपनी अलग पहचान स्थापित की है।

चंद्रा ने 'संघर्ष' और 'दुश्मन' जैसी साईकोथ्रिल फिल्मों का निर्देशन भी किया।

तनुजा चंद्रा को बेहद गंभीर और संजीदा निर्देशक के रूप में जाना जाता है। सुष्मिता सेन को लेकर 'जिंदगीं रॉक्स' का भी निर्देशन उन्होंने किया था। फिल्म 'होप एंड लिटिल सुगर' के निर्देशन के लिए तनुजा चंद्रा की काफी तारीफ की गई थी।

अनुषा रिजवी

फिल्म 'पीपली लाइव' से लोगों के दिल में जगह बनाने वाली अनुषा रिजवी किसी पहचान की मोहताज नहीं हैं। फिल्म निर्देशन के क्षेत्र में आने से पहले वह एन. डी. टी. वी. की रिपोर्टर थीं। उन्होंने किसानों द्वारा की जा रही आत्महत्याओं को आधार बनाकर एक कहानी लिखी थी और उस पर ही पहली फिल्म बनाई, जिसे लोगों ने खूब पसंद किया।

लीना यादव

महिला निर्देशिकाओं में एक अलग पहचान बनाने वाली लीना यादव अक्सर कुछ नया करने की सोचती हैं। इनकी दोनों फिल्में 'शब्द' और 'तीन पत्ती' हॉलीवुड से प्रेरित रहीं है। इसके अलावा भी लीना ने बॉलीवुड की 'राजमा चावल' पार्च्ड' जैसी बेहतरीन फिल्मों का निर्देशन किया है। 'पार्च्ड' को टोरंटो फिल्म फेस्टिवल में काफी सराहना मिली है। फिल्म बाल विवाह, पितृ सत्तात्मक परिवारों, रूढ़िवादी परंपराओं और मैरिटल रेप जैसे विषयों पर आधारित थी।

गौरी शिंदे

गौरी ने अपनी कॅरियर की शुरुआत डाक्यूमेंट्री फिल्मों से की लेकिन आज वह किसी भी पहचान की मोहताज नहीं हैं। फिल्म 'इंग्लिश-विंग्लिश' से सबके दिलों में छा जाने वाली फिल्म निर्देशिका गौरी शिंदे मशहूर फिल्म निर्देशक आर. बाल्की की पत्नी हैं। भारत में तो इस समय यह आलम है कि विद्वान उसे ही माना जाता है जिसे अंग्रेजी आती है। करोड़ों भारतीय ऐसे हैं जिन्हें यह भाषा बिलकुल पल्ले नहीं पड़ती और रोजाना इस हीन भावना से ग्रस्त रहते हैं उनकी फिल्म ऐसी ही शशि नामक महिला की कहानी है जो इस भाषा में अपने आपको व्यक्त नहीं कर पाती। घर पर बच्चे और पति अक्सर उसका मजाक बनाते हैं क्योंकि अंग्रेजी शब्दों का वह गलत उच्चारण करती हैं। उन्होंने साल 2016 में 'डियर जिंदगी' नाम की संवेदनशील फिल्म बनाई जिसमें आलिया और शाहरुख खान ने लीड भूमिका निभाई थी।

मेघना गुलजार

मेघना ने बॉलीवुड इंडस्ट्री में अपने कॅरियर की शुरुआत निर्देशक सईद मिर्जा को असिस्ट कर किया था। उसके बाद फिल्म मेकिंग सीखने के लिए न्यूयॉर्क चली गई थीं। न्यूयॉर्क से वापस आने के बाद उन्होंने अपने गुलजार पिता की फिल्म माचिस और हू-तू-तू में असिस्ट किया। उसके बाद मेघना ने कई डॉक्यूमेंट्रीज और म्यूजिक एलबम बनाए।

साल 2002 में मेघना ने निर्देशन की शुरुआत फिल्म 'फिलहाल' से की। इस फिल्म में तब्बू और सुष्मिता सेन लीड रोल में थीं। लेकिन फिल्म बॉक्स ऑफिस पर कमाल नहीं दिखा पाइ। इस फिल्म में मिस यूनिवर्स सुष्मिता सेन और तब्बू नजर आई थीं। उनकी फिल्म सरोगेसी पर आधारित थी। उस वक्त यह फिल्म बोल्ड मानी गई। इसके बाद निर्देशक ने साल 2015 में फिल्म 'तलवार' से कमबैक किया। ये फिल्म आरुषि हत्याकांड पर केंद्रित थी। मेघना की इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचा दिया था। जिसके बाद उन्हें बॉलीवुड में पहचान मिली। 2018 में मेघना ने फिल्म 'राजी' बनाई। फिल्म ने विक्की कौशल और आलिया भट्ट लीड रोल में थे। इस फिल्म में बॉक्स ऑफिस पर कमाल का बिजनेस किया। उसके बाद मेघना ने साल 2020 में फिल्म 'छपाक' बनाई। इस फिल्म में दीपिका पादुकोण लीड रोल में थीं। बाद में उन्होंने फिल्म 'जस्ट मैरिड' और 'दस' कहानियां निर्देशित की। इसके बाद आरुषि हत्याकांड पर 'तलवार' फिल्म बनाई।

नंदिता दास

नंदिता दास का जन्म 7 नवंबर 1969 को हुआ था। उनके पिता जतिन दास प्रसिद्ध कलाकार और उनकी मां लेखिका थीं। नंदिता का जन्म मुंबई में हुआ लेकिन परवरिश दिल्ली में हुई, जहां सरदार पटेल विद्यालय में उनकी शुरुआती शिक्षा-दीक्षा हुई। बाद में दिल्ली के मिरांडा हाउस से उन्होंने स्नातक की डिग्री हासिल की। निर्देशक के रूप में 'फ़िराक़' उनकी पहली फिल्म हैं जिसका प्रीमियर साल 2008 में टोरंटो फिल्म फेस्टिवल में हुआ।

इस फिल्म को तकरीबन 50 फिल्म समारोहों में प्रदर्शित किया गया जिसे 20 पुरस्कार हासिल हुए। पहली फिल्म 'फिराक़' गुजरात में हुए गोधरा कांड के 24 घंटे और उसके बाद हुए सांप्रदायिक दंगों में आम आदमी के दर्द को दिखाने का सशक्त प्रयास करती हैं। उन्हें कान्स फिल्म समारोह में साल 2005 और 2013 में ज्यूरी के रूप में

मनोनीत किया गया। कला में उल्लेखनीय योगदान के लिए नंदिता दास को फ्रांस सरकार की ओर से 'ऑर्ड्रे देस आर्ट्स एत देस लेटर्स' से सम्मानित किया गया है। नंदिता ने 2018 में 'मंटो' फिल्म निर्देशित की थी। नंगा सच दिखाकर सामाजिक यथार्थ को उजागर करने वाले कहानीकार सआदत हसन मंटो के साथ नंदिता दास ने फिल्म 'मंटो' में पूरा न्याय किया है और इस फिल्म के जरिये उन्होंने उस दौर के हिंदुस्तान को दिखाते हुए समाज के दोहरेपन को भी बेनकाब किया है।

संदर्भ

- एस चंद्रकांत, (December 8, 2018),देश की 10 महान हिंदी महिला फिल्म निर्देशक https://www.youngisthan.in/hindi/10-great-film-directors-of-india-1276/
- गुप्ता उषा , हिंदी सिनेमा में महिला निर्देशकों ने बनाई अपनी अलग पहचान, https://www.merisaheli.com/7-daring-female-directors-redefining-indian-hindi-cinema-to-the-world-from-meghna-gulzar-to-farah-khan/
- पेडणेकर सतीश(29 March,2019), राह आसान नहीं है महिला निर्देशकों की, https://hindi.theprint.in/culture/women-directors-like-zoya-akhtar-meghna-gulzar-nadita-dass-path-is-not-easy-in-bollywood/
- गोयलअनुराधा (07 Mar 2015) , महिलाएं जिन्होंने संभाली निर्देशन की कमान, https://www.amarujala.com/entertainment/bollywood/female-directors-in-bollywood
- News18 हिंदी (June 01, 2015), ये हैं बॉलीवुड की 10 महिला डायरेक् टर, https://hindi.news18.com/photogallery/woman-director-376554.html
- दीपांशा काशुधान(Mar 8 ,2021)Bollywood Female Director: बॉलीवुड की मशहूर महिला डायरेक्टर, जिन्होंने फिल्मों में महिला किरदार की गढ़ी अलग परिभाषा.https://samacharnama.com/news/bollywood-female-director
- निशा सिन्हा(NOV, 2021)महिला फिल्म डायरेक्टर्स का डंका:स्टीरियोटाइप स्टोरी लाइन से हटकर काम कर रही हैं वुमन फिल्म डायरेक्टर, https://www.bhaskar.com/women/news/woman-film-director-working-away-from-stereotype-story-line-129003071.html
- Retrieved from https://hindi.mapsofindia.com/my-india/history/history-of-indian-cinema
- डॉ. शरद सिंह(दिसंबर 5, 2018) ,चर्चा प्लस ...भारतीय सिनेजगत की महिला निर्देशक जो जोखिम लेने से नहीं डरतीं, https://sharadakshara.blogspot.com/2018/12/blog-post.html
- भुराड़िया निर्मला (1998) , कैमरे के पीछे महिलाएं, इंदौर

बिंज वाचिंग: वेब सीरीज विषयवस्तु व युवाओं की बदलती जीवनशैली

*** मनोज कुमार पटेल**
**** डॉ. गजेंद्र अवास्या**

शोध सार : इन्टरनेट की सुलभ उपलब्धता, स्मार्ट मोबाइल फ़ोन के बढ़ते प्रचलन और कोविड महामारी के कारण हुए लॉकडाउन ने दर्शकों के बीच ओटीटी प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध वर्चुअल विषयवस्तु की मांग को काफी बढ़ाया है। वीडियो स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म्स पर कभी भी और कहीं भी विषयवस्तु देखने की सुविधा ने हमारी देखने की आदतों में भी काफी बदलाव किया है, जिसमें से एक बिंज वाचिंग (Binge Watching) प्रवृत्ति है। इसमें अधिक से अधिक वेब सीरीज विषयवस्तु को एक ही बार में लगातार देखने की होड़ रहती है और जिसके कारण दर्शकों की, विशेषकर युवाओं की जीवनशैली में काफी बदलाव होने की संभावना रहती है, साथ ही शारीरिक और मानसिक रोग होने की भी आशंका रहती है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य ओटीटी पर उपलब्ध वर्चुअल विषयवस्तु के कारण युवाओं में बिंज वाचिंग प्रवृत्ति के कारकों को जानना और उनकी जीवनशैली में हो रहे बदलावों पर शोध करना है। यह शोध भोपाल जिले के 15 से 40 वर्ष के उत्तरदाताओं के सर्वे पद्धति से एकत्रित नमूने पर आधारित है। प्रस्तुत शोध में डिजिटल विषयवस्तु के प्रति युवाओं में बढ़ती रुचि, बिंज वाचिंग प्रवृत्ति और उससे प्रभावित होती जीवनशैली के कारकों का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द : ओटीटी प्लेटफॉर्म, बिंज वाचिंग, डिजिटल विषयवस्तु, जीवनशैली, वर्चुअल विषयवस्तु ।

परिचय

तेजी से ऑनलाइन होती दुनिया और बदलती परिस्थितियों के साथ डिजिटल डाटा के उपभोग के माध्यम और तरीकों में बड़े बदलाव देखने को मिल रहे हैं। 2008 में रिलायंस द्वारा पहला ओटीटी प्लेटफॉर्म् BigFix लाया गया, उसके बाद से आज लगभग 40 से अधिक ओटीटी प्लेटफॉर्म भारतीय बाज़ार में उपलब्ध हैं (Dangwal, 2017) जिसमें हॉटस्टार, नेटफ्लिक्स, अमेज़न प्राइम वीडियो, जी 5 इत्यादि इनमें कुछ प्रमुख नाम हैं। इसकी सुलभ उपलब्धता और इसमें प्रसारित मूल हिंदी विषयवस्तु इसकी लोकप्रियता का एक बड़ा कारण है। जहाँ पहले पारंपरिक माध्यमों में प्रतिदिन एक तय समय पर कार्यक्रमों को प्रसारित किया जाता था और जिसे देखने का भी एक सीमित समय था, वहीं आज दर्शक ओटीटी प्लेटफॉर्म और इन्टरनेट के माध्यम से किसी भी कार्यक्रम को कभी भी और कहीं भी देख सकता है। यह बदलाव विशेषकर युवाओं के लिए मनोरंजन के माध्यम के एक बेहतर विकल्प के रूप में उभरा जिसके प्रारंभ में काफी फायदे भी नज़र आये परन्तु बिंज वाचिंग प्रवृत्ति और उसके नकारात्मक प्रभावों से युवा दर्शकों की जीवनशैली में बदलाव देखने को मिलने लगे हैं और साथ ही इससे शारीरिक और मानसिक रूप से हानि भी हो सकती है।

युवा और बिंज वाचिंग-

बिंज वाचिंग वह प्रवृत्ति है जिसमें दर्शक किसी भी ओटीटी विषयवस्तु को एक ही बैठक में कई घंटों तक लगातार देखता है या किसी भी कार्यक्रम के तीन या उससे अधिक एपिसोड को एक ही बैठक में लगातार देखता है (Dictionary, 2020)l तेजी से होते तकनीकी बदलाव के साथ ही भारत में भी इन्टरनेट का उपयोग अधिक होने लगा है। भारत आज युवाओं द्वारा इन्टरनेट के उपयोग के मामले में चीन के बाद दूसरे नंबर पर है जिसके लिए मनोरंजन की जरूरत पूरी करने हेतु ओटीटी वीडियो स्ट्रीमिंग सेवाएं एक वैकल्पिक माध्यम के रूप में स्थापित हो गई हैं। 2020 में, पूरे भारत में 749 मिलियन से अधिक इंटरनेट उपयोगकर्ता थे। यह आंकड़ा 2040 तक 1.5 बिलियन से अधिक उपयोगकर्ताओं तक बढ़ने का अनुमान था, जो दक्षिण एशियाई देश के लिए इंटरनेट सेवाओं में एक बड़ी बाजार क्षमता का संकेत देता है। (STATISTA, 2021)

इस बदलती तकनीक में न तो किसी एपिसोड के एक विशेष समय पर आने की प्रतीक्षा करना है और न ही उसके लिए किसी एक जगह बैठकर देखना है बल्कि इसे हम जब चाहें, जहाँ चाहें और कितनी भी देर तक देख सकते हैं। इन सुविधाओं के कारण दर्शक विशेषकर युवा दर्शक बिंज वाचर बनता जा रहा है। यह

* शोधार्थी, जागरण लेक यूनिवर्सीटी भोपाल
** असिस्टेंट प्रोफेसर, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल

उसके आवेग व्यवहार या निर्माता द्वारा क्लिफहेंगर सिद्धांत से निर्मित की गयी जिज्ञासा के कारण भी हो सकता है।

वैसे बिंज वाचिंग प्रवृत्ति निम्नलिखित कारणों में से किसी एक वजह से अधिक देखी जा सकती है –

1. क्लिफ हैंगर सिद्धांत में किसी भी एपिसोड का नाटकीय या रोमांचक अंत किया जाता है जिससे दर्शक के मन में अगला एपिसोड उसी वक्त देखने की जिज्ञासा जाग्रत हो जाती है।(collinsdictionary, 2015)
2. वेब सीरीज निर्माता द्वारा सभी एपिसोड एक ही बार में प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध होने से भी इस प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल सकता है।
3. कोविड जैसी महामारी के कारण समय मिलने और कई बार अपनी भावनात्मक क्षति को पूरा करने हेतु भी दर्शकों को डिजिटल विषयवस्तु देखने की लत लग सकती है।

डिजिटल विषयवस्तु की आसान और सस्ती उपलब्धता से युवाओं पर बिंज वाचिंग प्रवृत्ति के प्रभाव बढ़ने की स्थिति में उनकी जीवनशैली में बदलाव होने की भी संभावना रहती है जिसमें नींद में कमी, मानसिक तनाव, कार्य क्षमता में कमी जैसे लक्षण दिखाई देने लगते हैं। 2013 में किया गए सर्वे के अनुसार भी अधिकांश दर्शक एक ही बैठक में अपने पसंदीदा कार्यक्रमों के कई एपिसोड देखना पसंद करते हैं (Pomerantz, 2013) जिससे उसकी जीवनशैली, अभिवृत्ति और उसको देखने की आदतों में भी बड़े बदलाव देखने को मिल सकते हैं।

ओटीटी विषयवस्तु तकनीक -

आज युवा इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर पूरी तरह निर्भर हो चुका है, कैलकुलेटर से लेकर वर्चुअल 3D आर्ट तक, सब कुछ इन उपकरणों के माध्यम से संभव है। दुनिया के लगभग 4.4 बिलियन लोग एक दूसरे को किसी भी तरह की जानकारी किसी भी समय ऑनलाइन इन्टरनेट के माध्यम से भेज सकते हैं और देख सकते हैं (Clement, 2020)। एक समय था जब पारंपरिक माध्यम ही मनोरंजन का एकमात्र साधन था जिसमें विभिन्न शैली के कार्यक्रम तय समय पर आते थे और युवाओं के बीच MTV और चैनल V जैसे चैनल पहली पसंद बन गए थे पर इनकी संख्या सीमित थी।

इसी निर्भरता के कारण डिजिटल विषयवस्तु की मांग भी काफी बढ़ी है। जिसको पूरा करने के लिए अब इन स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म के द्वारा मूल विषयवस्तु के निर्माण करने पर जोर दिया जा रहा है। अनुसंधान और परामर्श फर्म्स OMDIA के अनुमान के अनुसार, तीन प्रमुख ओटीटी स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स, अमेज़न प्राइम और हॉटस्टार का 2021 में कुल 282 मिलियन का बजट मूल विषयवस्तु के निर्माण के लिए है और भारत के प्रमुख ओटीटी प्लेटफॉर्म जैसे जी 5, EROSNOW, सोनी लिव, वूट, ALT बालाजी, जिओ सिनेमा का कुल बजट 665 मिलियन मूल विषयवस्तु के निर्माण के लिए रखा गया है (Exchange4Media, 2020)l ओटीटी के माध्यम से बड़ी मात्रा में डिजिटल विषयवस्तु, विशेषकर वेब सीरीज इन प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध है और साथ ही नियमन की कमी, गुणवत्तापूर्ण विषयवस्तु और बड़े कलाकारों का इन वेबसीरीज की तरफ झुकाव भी इसकी लोकप्रियता का एक बड़ा कारण है।

इस शोध में हम युवाओं में ओटीटी की बढ़ती रुचि और बिंज वाचिंग प्रवृत्ति के कारकों जानेंगे। साथ ही इस प्रवृत्ति के कारण युवाओं की जीवनशैली में हो रहे बदलाव का अध्ययन कर इसके नकारात्मक तत्वों का विश्लेषण करेंगे।

सैद्धांतिक रूपरेखा

मनोरंजन के माध्यम और समाज के परिवर्तन के बीच एक खास जुड़ाव होता है। मीडिया परिदृश्य में चल रहे डिजिटल व्यवधान के कारण समाज पर इसका जो प्रभाव है, वह अप्रामाणिक है। इसने सुलभता, पोर्टेबिलिटी और विषयवस्तु देखने की जो स्वतंत्रता प्रदान की है उसके कारण इसके उपभोग की आदतों में बड़ा बदलाव देखने को मिल रहा है। विशेष रूप से, वीडियो विषयवस्तु देखने के अनुभव को 'ओवर-द-टॉप' वीडियो स्ट्रीमिंग सर्विस प्लेटफॉर्म्स ने क्रांतिकारी रूप से बदला है (Tryon, 2015)।

वेब सीरीज प्रभावी दृश्य माध्यम है। इसकी आसान उपलब्धता और इसमें दिखाए जाने वाले दृश्य और चरित्र का प्रभाव हमारे समाज पर होता है। एक अध्ययन में इन्टरनेट के उपयोग और उसके प्रभावों को समझने हेतु दो सिद्धांतों यूज़ एंड ग्रेटीफीकेशन सिद्धांत (Use and Gratification Theory) एवं प्ले थ्योरी ऑफ़ मॉस कम्युनिकेशन (Play theory of Mass Communication) का उपयोग किया गया है।(Chien Chou, 2000) इन्टरनेट के अत्यधिक उपयोग से उपयोगकर्ताओं को उनकी जीवनशैली जैसे भोजन, नींद, अध्ययन, कार्य आदि में बड़े बदलाव देखने को मिले हैं जो किसी भी माध्यम के अत्यधिक उपयोग से होने वाले प्रभावों को दर्शाता है। इन प्रभावों से जीवनशैली में हुए बदलावों और इसके कारकों को जानने के लिए इस शोध में इन दोनों सिद्धांतों का उपयोग किया गया है। यूज़ एंड ग्रेटीफीकेशन सिद्धांत, जो लोगों पर मीडिया के प्रभावों की चर्चा करता है वहीं विलियम स्टीफेंसन (William Stephenson) द्वारा दी गयी प्ले थ्योरी ऑफ़ मॉस कम्युनिकेशन में मुख्य रूप से इसी बात पर जोर दिया गया है कि हम अपनी संतुष्टि के लिए मीडिया का उपयोग कैसे करते हैं। यह सिद्धांत जरूरतों, उद्देश्यों और प्रभाव के मनोविज्ञान से निकटता से संबंधित है। स्टीफेंसन के अनुसार हम अपनी कल्पनाओं को विकसित करते हैं और मीडिया में अपने पसंदीदा

पात्रों को देखकर अपनी भावनाओं का प्रदर्शन करते हैं। हम अपने पात्रों को मीडिया में देखकर उससे खुद को जोड़ने की कोशिश करते हैं और उसमें दिखाए जाने वाले चरित्र से काफी प्रभावित होते हैं। वेब सीरीज विषयवस्तु में भी पात्रों द्वारा नकारात्मक तत्वों के अत्यधिक प्रदर्शन को दर्शक सच और स्वाभाविक मानकर उन तत्वों को अपने जीवनशैली में शामिल कर लेता है।

जॉर्ज गरबनर ने सबसे पहले कल्टीवेशन को मुख्यधारा मीडिया के लिए मैक्रो-स्तरीय स्पष्टीकरण के रूप में विकसित किया था (Potter, 2014)। गरबनर द्वारा दिए गए कल्टीवेशन के सिद्धांत (Cultivation Theory) से पता चलता है कि अगर लंबे समय तक किसी भी मीडिया को देखा या सुना जाए, विशेष रूप से टेलीविजन, तो वह दर्शकों के मन में वास्तविकता की धारणा को उजागर कर देता है। उन्होंने इसे 'मीन वर्ल्ड सिंड्रोम' भी कहा है (Jaggi, 2013)। गरबनर ने बताया है कि जो दृश्य टेलीविजन में विभिन्न धारावाहिक, विज्ञापन, सिनेमा आदि द्वारा लंबी अवधि तक बार-बार दिखाए जाते हैं उसकी वजह से वह सामाजिक और मानक विचारों का निर्माण करता है और उसमें दिखाए जा रहे दृश्यों को अनुभूति करने लगता है।

साहित्य समीक्षा

आधुनिक समय में 'ओवर द टॉप' वीडियो स्ट्रीमिंग सर्विस जैसे डिजिटल माध्यम के उद्भव और लोकप्रियता के कारण तथा उसकी पहुँच जैसे विषयों पर कई तरह के शोध पत्र लिखने का कार्य हुआ है। परन्तु हर तकनीक के कुछ फायदे हैं तो साथ ही उसके हानिकारक प्रभाव भी होते हैं। ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर प्रसारित विषयवस्तु से विशेषकर वेब सीरीज से बढ़ती बिंज वाचिंग प्रवृत्ति से युवाओं पर लगातार हानिकारक प्रभाव बढ़ते जा रहे हैं। मुंबई शहर के युवाओं पर हुए अध्ययन में सामने आया कि बड़ी संख्या में विद्यार्थी और नौकरीपेशा नौजवानों ने अपने आप को बिंज वाचर माना जिसकी वजह से उनकी कार्य क्षमता पर काफी नकारात्मक प्रभाव पड़ा है और साथ ही इस लत के कारण उनकी मानसिक और शारीरिक सेहत भी प्रभावित हुई है (Aditya Dhanuka, 2019)।

बिंज वाचिंग की परिभाषा की बात करें तो डिजिटल डेमोक्रेसी सर्वे के अनुसार, "किसी भी टीवी या वेब सीरीज कार्यक्रम के तीन या उससे अधिक एपिसोड एक ही बैठक में देखना बिंज वाचिंग होता है"(Deloitte, 2015)। दर्शक किसी भी कार्यक्रम के एपिसोड को पारंपरिक माध्यम में दिखाए जाने वाली क्रमबद्ध तकनीक या प्रतिदिन एक एपिसोड देखने के बजाय जल्दी से जल्दी किसी भी कार्यक्रम के सभी एपिसोड देखना चाहते हैं जो विभिन्न सर्वे के नतीजों में भी दर्शाया गया है। नेटफ्लिक्स द्वारा 2013 में किये गए सर्वे में भी 73 प्रतिशत लोगों ने किसी भी एक कार्यक्रम के 2 से 6 एपिसोड लगातार एक ही बैठक में देखने को बिंज वाचिंग कहा गया। (West, 2013)

मनोवैज्ञानिक और चिकित्सा साहित्य ने भी बिंज व्यवहार को एक बुरी लत के रूप में परिभाषित किया है। (Mark S Gold, 2003) शोध में बताया गया है कि व्यक्ति अधिकतर वास्तविकता से बचने के लिए ऐसी गतिविधियों में संलग्न रहता है। पारंपरिक माध्यमों में भी दर्शकों की बिंज वाचिंग की आदतों को देखा गया है। टीवी दर्शकों पर "बिंज वाचिंग के प्रमुख कारक और उससे उत्पन्न होने वाला अपराध बोध" विषय पर किये गए एक सर्वे में पाया गया कि दर्शक लगातार स्क्रीन के सामने बैठने को अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं जबकि एपिसोड की संख्या से उन्हें अधिक मतलब नहीं होता है। इसमें यह भी देखा गया कि अधिकतर बिंज वाचर अकेले ही टीवी देखना पसंद करते हैं जो सुविधा ओटीटी ने बड़ी आसानी से उपलब्ध करा दी है। उनकी अपराध बोध भावना से उनके टीवी देखने के स्वरूप में भी कई बदलाव इस शोध में देखने को मिले हैं(Wagner, 2016)।

कभी भी और कहीं भी विषयवस्तु देखने की सुविधा ने ओटीटी स्ट्रीमिंग सर्विस प्लेटफॉर्म्स को मनोरंजन का एक वैकल्पिक माध्यम बना दिया है। कोविड महामारी और लॉकडाउन ने भी भारत में लगातार ओटीटी के दर्शकों में बढ़ोतरी की है। यह इन प्लेटफॉर्म्स के लिए वरदान की तरह साबित हुआ है। कुछ ओटीटी प्लेटफॉर्म्स जैसे जी 5 के सब्सक्रिप्शन में लगभग 80 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी हुई है। कोविड काल में लगभग हर ओटीटी प्लेटफॉर्म्स विषयवस्तु की खपत और उसकी दर्शक संख्या विशेषकर युवा दोनों में काफी बढ़ोतरी हुयी है (Kaushal, 2020)। इसी दौर में इन युवा दर्शकों का बिंज वाचर बनना प्रारंभ होता है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य भी युवा दर्शकों में बिंज वाचिंग के कारकों को जानने और उससे उनकी जीवनशैली में होने वाले बदलावों का अध्ययन और विश्लेषण करना है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. वेब सीरीज विषयवस्तु के प्रति युवाओं की बढ़ती रुचि का विश्लेषण।
2. ओटीटी प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से बढ़ती बिंज वाचिंग प्रवृत्ति के कारकों को जानना।
3. बिंज वाचिंग प्रवृत्ति के कारण युवा दर्शकों की जीवनशैली में हो रहे बदलाव को जानना।

अध्ययन की प्रासंगिकता

भारत में लगातार ओटीटी स्ट्रीमिंग सेवा और वेब सीरीज विषयवस्तु के बढ़ते प्रभाव एवं उसकी आसन्न उपलब्धता ने युवाओं के बीच बिंज वाचिंग प्रवृत्ति को काफी बढ़ावा दिया है जिसके परिणामस्वरूप युवाओं की जीवनशैली पर उसका असर दिखने लगा है। बिंज वाचिंग के कारण होने वाले बदलावों के कारकों को जानने का प्रयास प्रस्तुत अध्ययन में किया गया है। इसके माध्यम से ओटीटी प्लेटफॉर्म और बिंज वाचिंग से युवाओं के

शारीरिक स्वास्थ्य पर होने वाले नकारात्मक प्रभावों को जानने हेतु प्रस्तुत अध्ययन काफी आवश्यक है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य ओटीटी वीडियो स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म्स पर लगातार प्रसारित हो रही विषयवस्तु के प्रति युवा दर्शकों की बिंज वाचिंग प्रवृत्ति के कारकों को जानना और उसके कारण उनकी जीवनशैली में हो रहे बदलावों का अध्ययन एवं विश्लेषण करना है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु भोपाल जिले के 15 से 40 वर्ष के युवाओं से संरचित प्रश्नावली के माध्यम से ऑनलाइन गूगल फॉर्म तकनीक द्वारा डाटा को एकत्र किया गया है जिसमें सभी बंद सिरे के प्रश्न शामिल हैं। डाटा को 100 उन उत्तरदाताओं से उद्देश्यपूर्ण रैंडम सैंपलिंग (Purposive Random Sampling) तकनीक द्वारा एकत्र किया गया है जो ओटीटी प्लेटफॉर्म की अवधारणा से परिचित हैं और देखते भी हैं।

शोध का क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन में मध्यप्रदेश के भोपाल जिले के युवा उत्तरदाताओं से सर्वे तकनीक के माध्यम से डाटा एकत्रित किया गया है। भोपाल मध्यप्रदेश की राजधानी है और 2011 के जनगणना के अनुसार इसकी जनसंख्या 23 लाख के आसपास है। प्रस्तुत अध्ययन में भोपाल जिले के कुल 100 उत्तरदाताओं से उद्देश्यपूर्ण रैंडम सैंपलिंग के माध्यम से डाटा एकत्रित किया गया है।

डाटा विश्लेषण

ऑनलाइन गूगल फॉर्म तकनीक द्वारा डाटा को एकत्रित करने के पश्चात उसको सरल प्रतिशत विश्लेषण (Simple Percentage Analysis) के आधार पर विभाजित कर डाटा का विश्लेषण किया गया है। "यह एक विशेष प्रकार की दरों को संदर्भित करता है, डाटा की दो या अधिक श्रंखला के बीच तुलना करने के लिए प्रतिशत का उपयोग किया जाता है।"(Ramadu, 2020)

विश्लेषण

आज के तकनीकी युग और ऑनलाइन होती दुनिया में ओटीटी जैसे प्लेटफॉर्म ने उस तलाश को पूरा करने का काम किया है। ओटीटी पर लगभग आज 40 से अधिक प्लेटफॉर्म उपलब्ध हैं जिस पर रोज़ एक नयी विषयवस्तु अपलोड की जा रही है जिसे दर्शक कभी भी कहीं भी अपनी सुविधानुसार देख सकते हैं। साथ ही बड़े कलाकारों और निर्देशकों की भागीदारी और नियमन न होना भी इसकी बढ़ती पहुँच का मुख्य कारण है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन में युवाओं की जीवनशैली में इस बिंज वाचिंग से होते बदलावों के कारकों का विश्लेषण करने हेतु 15–40 वर्ष के 100 उत्तरदाताओं से 13 प्रश्नों की प्रश्नावली जिसको गूगल फॉर्म से वितरित कर डाटा एकत्रित किया गया है, इसमें 91.8% उत्तरदाता महाविद्यालय के छात्र शामिल थे एवं 9.2% उत्तरदाताओं में स्नातक एवं स्कूल के छात्र सम्मिलित थे। इन उत्तरदाताओं में 54.5 प्रतिशत पुरुष उत्तरदाता शामिल थे एवं 45.5 प्रतिशत महिला उत्तरदाता थीं। इसके अलावा ओटीटी और बिंज वाचिंग की प्रवृत्ति को समझने के लिए एक और महत्वपूर्ण कारक होता है वैवाहिक स्थिति जिसके लिए हमने प्रस्तुत अध्ययन में 62.9 प्रतिशत विवाहित और 37.1 प्रतिशत अविवाहित उत्तरदाताओं को शामिल किया था।

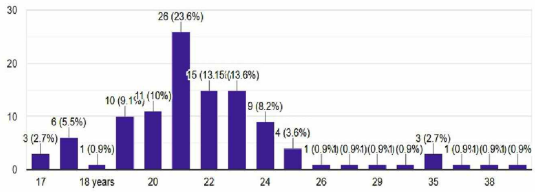

ओटीटी वीडियो स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म्पर 63 प्रतिशत उत्तरदाता प्रतिदिन 2 घंटे तक का समय बिताते हैं तो वहीं 29 प्रतिशत उत्तरदाता इन प्लेटफॉर्म पर 2 से 4 घंटे तक का समय भी व्यतीत करते हैं। 8 प्रतिशत ऐसे भी उत्तरदाता हैं जो 4 घंटे से भी अधिक इन ओटीटी प्लेटफॉर्म पर विषयवस्तु देखते हैं।

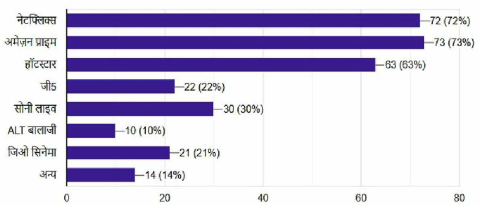

परंपरागत माध्यम के मुकाबले ओटीटी वीडियो स्ट्रीमिंग माध्यम की पहुँच एवं प्रभाव और युवाओं के बीच बढ़ते आकर्षण का सबसे बड़ा कारण है उस पर उपलब्ध विषयवस्तु, जिस पर अभी तक किसी भी तरह का नियमन भी नहीं है। इसके अलावा समय की सुविधा और विज्ञापन का न होना भी इसकी बढ़ती पहुँच का प्रमुख कारण बना हुआ है। ओटीटी प्लेटफॉर्म की पसंद में उत्तरदाताओं द्वारा सबसे अधिक लगभग 75 प्रतिशत अमेज़न प्राइम और नेटफ्लिक्स को पसंद किया गया है वहीं हॉटस्टार को भी 60 प्रतिशत से अधिक दर्शकों ने पसंद किया है। जी 5, सोनी लिव और जिओ सिनेमा जैसे प्लेटफॉर्म को लगभग 30 प्रतिशत दर्शकों ने पसंद किया है। ओटीटी प्लेटफॉर्म पर लगभग हर शैली की विषयवस्तु उपलब्ध है जिसमें मूल विषयवस्तु के निर्माण पर इन प्लेटफॉर्म द्वारा विशेष निवेश किया जा रहा है।

70 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कॉमेडी और ड्रामा शैली के विषयवस्तु को सबसे अधिक पसंद किया है वहीं लगभग 60

प्रतिशत दर्शकों ने क्राइम और एक्शन विषयवस्तु को पसंद किया है। ओटीटी प्लेटफॉर्म वीडियो स्ट्रीमिंग सर्विस की पहुँच और आकर्षण का प्रमुख केन्द्र रहा है वेब सीरीज फॉर्मेट। सभी प्लेटफॉर्म द्वारा विभिन्न फॉर्मेट में मूल वेब सीरीज का निर्माण किया जा रहा है। 68 प्रतिशत दर्शकों ने वेब सीरीज फॉर्मेट को पसंद किया है वहीं 18 प्रतिशत दर्शकों ने मूवी फॉर्मेट को पसंद किया है।

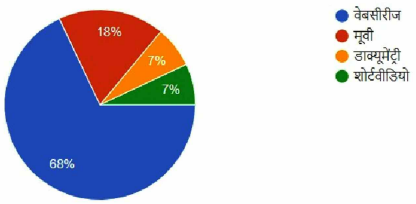

67 प्रतिशत दर्शक रात के समय इन प्लेटफॉर्म पर विषयवस्तु देखना पसंद करते हैं जिससे उनके शारीरिक और मानसिक समस्याओं में वृद्धि हो सकती है। वहीं 44 प्रतिशत दर्शकों ने माना कि वह कभी-कभी वेब सीरीज के तीन से अधिक एपिसोड एक ही बैठक में देखते हैं। वहीं 37 प्रतिशत ने कहा कि वे कम से कम तीन या उससे अधिक एपिसोड एक बैठक में देखते हैं जिन्हें हम बिंज वाचर कह सकते हैं। 45.9 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि उन्होंने 3-4 एपिसोड एक ही बैठक में अधिकतम देखे हैं। 30.6 प्रतिशत दर्शकों ने बताया कि उन्होंने 7 या उससे अधिक एपिसोड भी एक बैठक में देखे हैं । 23.5 प्रतिशत ने 5-6 एपिसोड देखने की बात कही।

41 प्रतिशत दर्शकों ने माना कि वह बिंज वाचिंग प्रवृत्ति से प्रभावित हैं, वहीं 33 प्रतिशत ने इससे इनकार किया और 26 प्रतिशत इसके बारे में अनिश्चित हैं। 56 प्रतिशत दर्शकों ने माना कि वेब सीरीज के सभी एपिसोड एक साथ उपलब्ध होना इसके प्रमुख कारकों में से एक है। बिंज वाचिंग से होने वाले शारीरिक और मानसिक रोगों के बारे में 63.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं को उसकी जानकारी है जो काफी सराहनीय है । वहीं 36.7 प्रतिशत उत्तरदाता इसके बारे में नहीं जानते हैं।

किसी भी तकनीक या माध्यम के नकारात्मक पहलू होते हैं और इसी कड़ी में ओटीटी वीडियो स्ट्रीमिंग सर्विस से बढ़ती बिंज वाचिंग प्रवृत्ति इन प्लेटफॉर्म के नकारात्मक पहलू को दर्शाया है। जिससे युवाओं की जीवनशैली में काफी बदलाव देखने को मिले हैं। 67 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने रात को देर तक जागने को सबसे बड़ा बदलाव माना है। नींद में कमी और फिर कार्य क्षमता में भी कमी आना स्वाभाविक है जो बिंज वाचिंग से होने वाले बाकी दो सबसे बड़े बदलाव भी हैं। इसके अलावा उत्तरदाताओं ने माना कि इस प्रवृत्ति के कारण अकेलापन भी युवाओं के बीच बढ़ रहा है और जिससे रिश्तों में तनाव आने के भी संभावना रहती है।

निष्कर्ष और सुझाव

निष्कर्ष बताते हैं कि भोपाल के युवाओं में ओटीटी वीडियो स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म्स काफी प्रचलित हैं। युवा दर्शक बड़ी संख्या में बिंज वाचिंग प्रवृत्ति से ग्रसित हैं और उसकी लत से जूझ रहे हैं और जिसके कारण उनकी जीवनशैली में काफी बदलाव देखने को मिल रहे हैं।

1. ओटीटी वीडियो स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध विषयवस्तु विशेषकर वेब सीरीज विषयवस्तु को कभी भी कहीं भी देखने की सुविधा ने इन प्लेटफॉर्म को युवाओं के बीच काफी प्रचलित किया है। साथ ही कोविड महामारी के कारण हुए लॉकडाउन, बिना विज्ञापन का विषयवस्तु एवं नियमन की कमी ने इनकी सब्सक्राइबर संख्या में परंपरागत माध्यम के मुकाबले काफी वृद्धि की है। आने वाले समय में इन प्लेटफॉर्म के वॉच टाइम में काफी वृद्धि होने की संभावना है। यह प्लेटफॉर्म मनोरंजन के एक सशक्त माध्यम के रूप में युवा दर्शकों के बीच स्थापित हो गया है।

2. बिंज वाचिंग के कारकों में ओटीटी वीडियो स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म द्वारा क्लिफ हैंगर तकनीक (जिसमें हर एपिसोड का नाटकीय या रोमांचक अंत किया जाता है) का उपयोग किया जाता है जिसके कारण दर्शक जल्द से जल्द अगला एपिसोड देखना चाहते हैं। क्योंकि वेब सीरीज के सभी एपिसोड इन प्लेटफॉर्म पर एक साथ उपलब्ध होते हैं, दर्शक अधिक से अधिक एपिसोड एक ही बैठक में देखता है, जिससे बिंज वाचिंग प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है। ओटीटी प्लेटफॉर्म को वेब सीरीज के सभी एपिसोड को क्रमशः अपलोड करने पर विचार करना चाहिए।

बिंज वाचिंग प्रवृत्ति से युवा दर्शकों की जीवनशैली में भी बड़े बदलाव देखने को मिल रहे हैं। जहाँ पहले एक स्क्रीन होती थी और पूरा परिवार उसे एक साथ देखता था तो वहीं आज हर व्यक्ति के पास अपनी एक स्क्रीन है जिसमें हर प्रकार की विषयवस्तु उपलब्ध है। अब वह रात को अकेले में जागकर अधिक से अधिक विषयवस्तु देखना चाहता है जिससे पारिवारिक दूरी तो बढ़ ही रही है, साथ ही अनेक शारीरिक और मानसिक बीमारियों से भी युवा ग्रसित हो रहे हैं, जिससे उनकी कार्य क्षमता में कमी आने लगी है और तनाव बढ़ने लगा है। इसको लेकर सरकार एवं ओटीटी प्लेटफॉर्म द्वारा जल्द से जल्द एक नियमन लाने की आवश्यकता है।

REFERENCES

- Aditya Dhanuka, A. B., 2019. Binge-Watching: Web-Series Addiction amongst Youth. The Management Quest, 2(1), pp. 160 - 172.
- Chien Chou, M.-C., 2000. Internet addiction, usage, gratification, and pleasure experience: the Taiwan college students' case. Computers & Education, 35(1), pp. 65-80.
- Clement, J., 2020. www.statista.com. [Online]
- Available at: https://www.statista.com/statistics/617136/digital-population-worldwide/ [Accessed 18 Jan 2021].
- collinsdictionary, 2015. www.collinsdictionary.com. [Online]
- Available at: https://www.collinsdictionary.com/dictionary/english/cliffhanger [Accessed 20 Feb 2022].
- Dangwal, S., 2017. www.Indai.com. [Online]
- Available at: https://www.india.com/business/reliance-entertainment-launches-bigflix-indias-first-global-multi-language-hd-movie-platform-2074662/ [Accessed 08 Feb 2021].
- Deloitte, 2015. Digital Democracy Survey, s.l.: www.Deloitte.com.
- Dictionary, C., 2020. www.dictionary.cambridge.org. [Online]
- Available at: https://dictionary.cambridge.org/dictionary/english/binge-watch [Accessed 5 6 2021].
- Exchange4Media, 2020. www.exchange4media.com. [Online]
- Available at: https://www.exchange4media.com/digital-news/ott-giants-expected-to-spend-rs-28249-cr-on-original-content-in-india-in-2021-report-109559.html [Accessed 5 6 2021].
- Jaggi, R. K., 2013. Women in Indian T.V. Advertising: The Discourse in the Fair & Lovely Ad Campaign. IMS Manthan (The Journal of Innovations), 8(2), pp. 181 - 184.
- Kaushal, S., 2020. Forbes.com. [Online]
- Available at: https://www.forbes.com/sites/swetakaushal/2020/05/26/good-news-amid-lockdown-ott-platforms-register-60-80-surge-in-subscription-base/?sh=6b727e04413a. [Accessed 09 06 2021].
- Mark S Gold, K. F.-P. a. W. S. J., 2003. Overeating, Binge Eating, and Eating Disorders as Addictions. Psychiatric Annals, 33(2), pp. 117-122.
- Pomerantz, A. M., 2013. SAGE. [Online]
- Available at: https://www.rset.edu.in/download/dsims/2_Binge_Watching_Web_Series_Addiction_amongst_Youth.pdf [Accessed 28 feb 2021].

- Potter, W. J., 2014. A Critical Analysis of Cultivation Theory. Journal of Communication, 64(6), pp. 1015 – 1036.
- Ramadu, J., 2020. Course Hero. [Online]
- Available at: https://www.coursehero.com/file/p1lunt/1-SIMPLE-PERCENTAGE-ANALYSIS-It-refers-to-a-special-kind-of-rates-percentage-are/
  [Accessed 18 Feb 2022].
- STATISTA, 2021. www.statista.com. [Online]
- Available at: https://www.statista.com/statistics/255146/number-of-internet-users-in-india/ [Accessed 20 Feb 2022].
- Tryon, C., 2015. Media Industries. [Online]
- Available at: https://quod.lib.umich.edu/m/mij/15031809.0002.206?view=text;rgn=main#N1. [Accessed 24 11 2020].
- Wagner, C. N., 2016. ₹Glued to the Sofa₹: Exploring Guilt and Television. Communication Honors Thesis, 5(1), pp. 125–132.
- West, K., 2013. www.cinemablend.com. [Online]
- Available at: https://www.cinemablend.com/television/Unsurprising-Netflix-Survey-Indicates-People-Like-Binge-Watch-TV-61045.html. [Accessed 05 06 2021].

मध्यप्रदेश में फिल्म पर्यटन की संभावनाएं: एक अध्ययन

*** अंकित पाण्डेय**
**** प्रियंका पांडेय**

शोध सार : फिल्म निर्माताओं की पिछले कुछ वर्षों में मध्यप्रदेश में फिल्मों की शूटिंग करने में दिलचस्पी बढ़ गई है। हाल में कंगना रनौत और विक्की कौशल-मानुषी छिल्लर की फिल्म की शूटिंग अलग-अलग स्थानों पर हुई। पिछले पांच सालों में मध्यप्रदेश के पर्यटन स्थलों की खूबसूरती के साथ ही सरकार का सकारात्मक रवैया और प्रदेश का शांत माहौल बॉलीवुड को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। कई फिल्मों की शूटिंग मध्यप्रदेश में हो रही है तो अनेक फिल्म निर्माता अपनी फिल्मों की शूटिंग के लिये मध्यप्रदेश का ही चयन कर रहे हैं। मध्यप्रदेश में बॉलीवुड की गतिविधियां बढ़ने से प्रदेश के पर्यटन स्थलों का प्रमोशन हो रहा है, वही पर्यटन गतिविधियों को भी गति मिल रही है। सरकार के राजस्व में बढ़ोत्तरी हो रही है तो फिल्म के निर्माताओं को भी कम बजट में ज्यादा सुविधाएं मिल रही हैं। फिल्मों की शूटिंग से स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर भी सृजित हो रहे हैं।

मुख्य शब्द- दिलचस्पी, पर्यटन स्थल, गतिविधियां, राजस्व, फिल्म निर्माता, रोजगार के अवसर आदि।

प्रस्तावना

कुछ सालों पहले मध्यप्रदेश की गिनती बीमारू राज्य के रूप में की जाती थी। विकासशील प्रदेश की दौड़ में होने के चलते मध्यप्रदेश की तरफ कम ही लोगों का ध्यान आकर्षित हो पाता था। खासकर बड़े उद्योगपति अपने उद्योग प्रदेश में स्थापित नहीं करना चाहते थे। फिल्मों के निर्माता-निर्देशक भी शूटिंग मध्यप्रदेश में करना पसंद नहीं करते थे। इसके पीछे जो कारण सामने आते थे, उनमें सबसे प्रमुख कनेक्टिविटी की कमी का था। दूसरा सर्वसुविधायुक्त होटलों न होना और तीसरा कारण-स्थानीय स्तर पर अपराधों का ऊंचा ग्राफ था। किन्तु मध्यप्रदेश सरकार ने पिछले कुछ सालों में बुनियादी व्यवस्थाओं पर ज्यादा जोर दिया है। सड़कों को सुधारकर राष्ट्रीय राजमार्ग और राज्यमार्गो की श्रृंखला का निर्माण किया गया। डकैती और नक्सली हिंसा की समस्या पर नियंत्रण किया गया। इसके बाद सरकार ने पर्यटन विकास निगम के माध्यम से पर्यटन केद्रों के विकास और सर्वसुविधायुक्त होटलों की चैन तैयार की। इसका परिणाम यह हुआ कि बड़ी संख्या में अब बॉलीवुड के फिल्म निर्माता मध्यप्रदेश की ओर आकर्षित हो रहे है। प्रदेश के पर्यटन स्थलों की खूबसूरती को देखकर सिर्फ निर्माता-निर्देशक ही नहीं, बल्कि प्रदेश शूटिंग के लिये आने वाले कलाकारों का भी पसंदीदा डेस्टिनेशन बनता जा रहा है। कोरोना संक्रमण की पहली और दूसरी लहर के बाद जैसे ही आर्थिक गतिविधियां पटरी पर लौटना शुरु हुईं, मध्यप्रदेश में फिल्मों की शूटिंग के लिये अनुमति की लंबी कतार लग गयी। अब मध्यप्रदेश में बॉलीवुड के कई निर्देशक और सितारे लाइट, कैमरा और एक्शन करते हुए नजर आते हैं। इनमें राजधानी भोपाल से लेकर महेश्वर, ग्वालियर, ओरछा और अमरकंटक की लोकेशंस शामिल है। एक के बाद एक फिल्मों की शूटिंग प्रदेश के अलग-अलग स्थानों पर हो रही है। भोपाल में भी फिल्म और सीरियल की शूटिंग का सिलसिला धीरे-धीरे रफ्तार पकड़ रहा है।

पूर्व साहित्य का अध्ययन

डॉ नागरथ, एस.के.(2020) ने मध्यप्रदेश की नयी पर्यटन नीति को लेकर एक लेख लिखा। उन्होंने अपने लेख में लिखा है कि मध्यप्रदेश में फिल्मों की शूटिंग बढ़ाने और इसकी मदद से रोजगार को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने मध्यप्रदेश फिल्म पर्यटन नीति 2020 लागू कर दी है। नई नीति के तहत प्रदेश में फिल्म निर्माण के क्षेत्र में अनेक रियायतें प्रदान की जायेंगी। नई नीति के मुताबिक किसी भी भाषा में बनने वाली फिल्म की 50 फीसदी शूटिंग मध्यप्रदेश में होने पर सरकार कुल लागत की 25 फीसदी और अधिकतम एक करोड़ रुपये तक की राशि अनुदान स्वरूप प्रदान की जाएगी। इसके लिए शर्त यह है कि यह फिल्मकार की पहली फिल्म हो। दूसरी फिल्म के लिए यह राशि बढ़ाकर 1.25 करोड़ रुपये कर दी जाएगी। इसी प्रकार तीसरी तथा उसके बाद की फिल्मों के लिए यह अनुदान राशि 1.50 करोड़ रुपये होगी। इसके अलावा टेलीविजन सीरियलों और वेब सीरीज को वित्तीय अनुदान देने की बात भी नीति में कही गई है।

सिंह, करिश्मा (2020) ने 'मध्यप्रदेश बना फिल्म निर्माण का फेवरेट डेस्टिनेशन, जल्द शुरू होगी 22 फिल्मों की शूटिंग' विषय

* मीडिया समन्वयक, मा.च.रा.प.सं.वि.वि., भोपाल
** पत्रकार, बी.बी.सी. खबर

पर शोध आलेख लिखा। उन्होने अपने आलेख में इस बात का जिक्र किया है कि बॉलीवुड फिल्मों की शूटिंग के लिए मध्यप्रदेश निर्माताओं की पसंदीदा जगह बन गया है। सारे बड़े फिल्म निर्माता और कलाकार मध्यप्रदेश में अपनी फिल्मों की शूटिंग कर रहे हैं। भोपाल में हुमा कुरैशी ने सलामतपुर के आरामबाग में 'महारानी' फिल्म की शूटिंग की है। वहीं नुसरत भरूचा ने पिपरिया को हॉरर फिल्म 'छोरी' की शूटिंग के लए चुना। अच्छी खबर यह है कि भोपाल और मध्यप्रदेश की अलग-अलग लोकेशंस पर नए साल में लगभग 22 प्रोजेक्ट्स (फिल्म, वेब सीरीज और टीवी सीरियल्स) की शूटिंग होनी है। इसका मुख्य कारण मार्च 2020 से पर्यटन निगम की फिल्म नीति आने के बाद फिल्ममेकर्स को सब्सिडी मिलना है।

मध्यप्रदेश सरकार की फिल्म पर्यटन नीति के मुख्य प्रावधान

फिल्म पर्यटन नीति के अनुसार किसी भी भाषा में फिल्म निर्माण के लिए प्रदेश में फिल्मों की ज्यादा से ज्यादा शूटिंग पर अनुदान देने का प्रबंध किया गया है। किसी निर्देशक की पहली और दूसरी फिल्म की शूटिंग के लिए अनुदान एक करोड़ रुपए तक अथवा फिल्म की कुल लागत का 25 प्रतिशत तक दिया जाएगा। इसमें शर्त यह होगी कि फिल्म की पूरी शूटिंग में कम से कम 50 प्रतिशत शूटिंग मध्यप्रदेश में होना जरूरी होगा। तीसरी और आगे की फिल्मों के लिए 1 करोड़ 50 लाख रुपए तक या फिल्मों की लागत का 75 प्रतिशत अनुदान दिया जाएगा। इसमें भी फिल्म के संपूर्ण शूटिंग दिवसों में न्यूनतम 50 फीसदी शूटिंग होना जरूरी है।

- मध्यप्रदेश में एक समर्पित फिल्म सुविधा सेल का गठन किया गया है। राज्य टूरिज्म बोर्ड के प्रबंध संचालक की अध्यक्षता में यह सेल फिल्म पर्यटन विकास के लिए नोडल एजेंसी के रूप में कार्य कर रहा है।
- यह सेल फिल्म पर्यटन नीति के क्रियान्वयन, प्रक्रिया निर्धारण, आवेदनों के निराकरण संबंधी समन्वय करेगा तथा फिल्म उद्योग की अद्यतन प्रवृत्तियों के अनुसार नीति प्रस्ताव तैयार करने की जिम्मेदारी का निवर्हन करेगा।
- फीचर फिल्म, टीवी सीरियल/ शो/वेब सीरीज/शो/डाक्यूमेंट्री की शूटिंग के लिए वित्तीय अनुदान की व्यवस्था।
- अंतरराष्ट्रीय फिल्म निर्माताओं और दक्षिण भारतीय फिल्म निर्माताओं के लिए विशेष वित्तीय प्रोत्साहन की योजना।
- स्थायी प्रकृति के बुनियादी ढांचे के निर्माण पर वित्तीय प्रोत्साहन/अनुदान/ भूमि आवंटन।
- सिंगल विंडो सिस्टम के माध्यम से फिल्मांकन अनुमति के लिये संबंधित विभागों से आवश्यक समन्वय स्थापित करना।
- आधारभूत ढांचे और सेवाओं जैसे हवाई जहाज, हेलीकॉप्टरों, संपत्तियों आदि को फिल्म निर्माताओं को प्रक्रिया के अनुसार उपलब्ध कराना।
- सिंगल स्क्रीन सिनेमा, बंद सिनेमा घरों के पुनरुद्धार को बढ़ावा देना।
- मौजूदा सिनेमा हॉल को अपग्रेड करना तथा मल्टीप्लेक्स की स्थापना को प्रोत्साहित करना/वित्तीय अनुदान।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिये निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं-

- मध्यप्रदेश में फिल्म शूटिंग के माहौल और वातावरण का अध्ययन करना।
- मध्यप्रदेश में फिल्म शूटिंग की संभावनाओं का अध्ययन करना।
- मध्यप्रदेश में फिल्म शूटिंग के प्रमोशन के लिये सरकारी प्रयासों का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध अध्ययन के विवरणात्मक प्रकृति का होने के कारण परिकल्पना का निर्धारण करना आवश्यक नहीं है, किंतु शोध की प्रासंगिकता और तार्किकता को ध्यान में रखते हुए निम्न परिकल्पनाएं की गयी है-

- मध्यप्रदेश सरकार प्रदेश में शूटिंग की पर्याप्त सुविधायें जुटाने के प्रयास में लगी है।
- मध्यप्रदेश में पर्यटन स्थलों की खूबसूरती और उचित माहौल होने के चलते फिल्म शूटिंग की असीम संभावनायें हैं।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन विवरणात्मक प्रवृत्ति का होने के कारण अध्ययन के लिये विवरणात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया गया है। अध्ययन के दौरान फिल्म निर्माण के प्रोत्साहन के लिये सरकारी सुविधाओं, अनुमति के लिये एकल खिड़की प्रणाली लागू करने, पर्यटन विकास निगम के माध्यम से आरामदेह और सर्वसुविधायुक्त होटल तैयार करने के साथ ही बुनियादी सुविधाओं को जुटाने के लिये किये गये प्रयासों का द्वितीयक आंकड़ों के रूप में संकलित किया गया है। अध्ययन के दौरान प्राप्त होने वाले द्वितीयक आंकड़ों और इस प्रक्रिया से जुड़े व्यक्तियों के साक्षात्कार के बाद निष्कर्ष पर पहुंचा गया है।

अध्ययन अवधि

प्रस्तुत शोध एक जनवरी 2019 से दिसंबर 2021 के बीच में मध्यप्रदेश में हुई फिल्मों की शूटिग के बारे में किया गया है। सरकार ने इन तीन सालों में फिल्म शूटिग को प्रोत्साहन देने के लिये क्या-क्या सुविधायें मुहैया करायी हैं, इनको भी अध्ययन में शामिल किया गया है।

परिणाम और विश्लेषण

मध्यप्रदेश की संस्कृति प्राचीन है। असंख्य ऐतिहासिक

सांस्कृतिक धरोहरें, विशेषतः उत्कृष्ट शिल्प और मूर्तिकला से सजे मंदिर, स्तूप और स्थापत्य के अनूठे उदाहरण तथा यहां के महल और किले हमें यहां के महान राजाओं और उनके वैभवशाली काल के साथ महान योध्दाओं, शिल्पकारों, कवियों, संगीतज्ञों के अलावा हिदू, मुस्लिम, जैन और बौध्द धर्म के साधकों की याद दिलाते हैं। भारत के अमर कवि, नाटककार कालिदास और प्रसिध्द संगीतकार तानसेन ने इस उर्वर धरा पर जन्म लेकर इसका गौरव बढ़ाया है। मध्यप्रदेश का एक तिहाई हिस्सा वन संपदा के रूप में संरक्षित है जहां पर्यटक वन्य जीवन को पास से जानने का अदभुत अनुभव प्राप्त कर सकते हैं। कान्हा नेशनल पार्क, बांधवगढ़, शिवपुरी आदि ऐसे स्थान हैं जहां आप बाघ, जंगली भैंसे, हिरणों, बारहसिंघों को स्वच्छंद विचरते देख पाने का दुर्लभ अवसर प्राप्त कर सकते हैं। फिल्मों की स्क्रिप्ट के मुताबिक ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले लोकेशंस मध्यप्रदेश में आसानी से मिल जाते हैं। लॉजिंग, खान-पान, आउटसाइडर सपोर्टिंग टीम के साथ-साथ सहयोगी कलाकार भी मध्यप्रदेश में आसानी से और कम बजट में डायरेक्टर्स को उपलब्ध हो रहे हैं। लिहाजा मध्यप्रदेश दूसरे राज्यों के मुकाबले फिल्म शूटिंग के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है। पिछले 3 सालों के सफर पर गौर करें तो सबसे ज्यादा फिल्मों की शूटिंग मध्यप्रदेश राज्य में हुई है।

ग्वालियर, मांडू, दतिया, चंदेरी, जबलपुर, ओरछा, रायसेन, सांची, विदिशा, उदयगिरि, भीमबैठका और भोपाल ऐतिहासिक महत्व के स्थल हैं। महेश्वर, ओंकारेश्वर, उज्जैन, चित्रकूट और अमरकंटक ऐसे स्थान हैं, जहां आकर तीर्थयात्रियों के मन को शांति मिलती है। खजुराहो के मंदिर विश्व में अनूठे हैं। इसके अलावा ओरछा, भोजपुर और उदयपुर के मंदिर इतिहास में रुचि रखने वाले लोगों और श्रृद्धालुओं को आकर्षित करते हैं। सतना, सांची, विदिशा, ग्वालियर, इंदौर, मंदसौर, उज्जैन, राजगढ़, भोपाल, जबलपुर, रीवा और अन्य अनेक स्थानों के संग्रहालयों में पुरातत्वीय महत्व के भंडारों को संरक्षित रखा गया है। मध्यप्रदेश में धार्मिक, ऐतिहासिक, प्राकृतिक स्थलों की भरभार है। यही वजह है कि मध्यप्रदेश के अलग-अलग स्थानों पर शूटिंग के लिए करीब 12 से ज्यादा फिल्म मेकर्स ने सरकार को आवेदन किये हैं। हैदराबाद के फिल्म निर्माता वाराही चाल्लन चेतराम, बाय स्कोपिया, अपेक्षा फिल्म, बाबुल प्रोडक्शन और कृष्णा दीप इंटरटेनमेंट सहित अन्य फिल्मकारों ने भी राज्य में शूटिंग करने की रुचि दिखाई है। खूबसूरत लोकेशंस के चलते मध्यप्रदेश फिल्म मेकर्स और डायरेक्टर्स की पहली पसंद बनता जा रहा है।

शूटिंग के लिहाज से प्रदेश के लोकेशंस न सिर्फ सुरक्षित हैं, बल्कि सुविधाजनक भी हैं। शूटिंग की परमिशन और एनओसी मिलना भी यहां दूसरे राज्यों के मुकाबले आसान है। हाल ही में सरकार ने नई फिल्म पर्यटन नीति लागू की है, जिसमें फिल्मकारों को काफी सुविधाएं मुहैया कराई जा रही हैं। मध्यप्रदेश में फिल्म और वेब सीरीज की शूटिंग में हर साल इजाफा हो रहा है। अब तक 300 से ज्यादा फिल्मों की शूटिंग हो चुकी है। पिछले साल यानी 2021 में 23 फिल्मों की शूटिग मध्यप्रदेश में हुयी है। अनलॉक के बावजूद 5 फिल्म और वेब सीरीज की शूटिंग हुई। कम बजट के साथ-साथ 700 करोड़ की बड़ी बजट की फिल्में भी प्रदेश में शूट होने वाली हैं।

आगे की राह

पिछले दो सालों में यहां 'रिवॉल्वर रानी', 'टॉयलेट एक प्रेम कथा', 'द पैडमैन', 'लिपस्टिक अंडर माय बुर्का', 'संजय दत्त की बायोपिक', 'लाला एनकाउंटर', 'लायन', 'स्त्री', 'दबंग-2', 'कंगना रणौत की पंगा', 'पान सिंह तोमर', 'चक्रव्यूह', 'अपहरण', 'यंगिस्तान', 'गंगाजल-2', 'बाजीराव मस्तानी', 'सुई-धागा' जैसी फिल्में भोपाल के साथ अन्य लोकेशंस पर शूट हुई हैं। आगे 20 से ज्यादा फिल्में और वेबसीरीज की शूटिंग प्रदेश में होनी है। इनमें कंगना रणौत की 'धाकड़', 'गुल्लक टू' (वेब सीरीज), 'विसलब्लोअर' (वेब सीरीज). 'पंचायत- 2' (वेब सीरीज), 'कोटा फैक्ट्री' (वेब सीरीज), 'सिट्टी पिट्टी गुम', 'विलोम', 'द गेम', 'हसबैंड इन लॉ', 'गोंड विंडो', 'गांधीजी', 'हीरा इडली और मैं', 'धर्म क्षेत्र', 'कांड', 'काऊ बॉय', 'गरिमा एम', 'को अहम', 'अमेरिकी टॉकीज' जैसी फ़िल्में और वेब सीरीज मध्यप्रदेश में शूट होनी हैं।

निष्कर्ष

मध्यप्रदेश की ऐतिहासिक इमारतें और प्राकृतिक सौंदर्य बॉलीवुड को जमकर पसंद आ रहा है। प्रदेश के पर्यटन स्थल ओरछा में एक बार फिर लाइट, कैमरा, एक्शन दिखेगा। ओरछा में जल्द ही एक बड़े बजट की फिल्म का निर्माण होने वाला है। बुंदेलखंड की ऐतिहासिक धरोहरों ने एक बार फिर फिल्मकारों को अपनी ओर आकर्षित किया है। एक बार फिर देश के जाने-माने निर्माता निर्देशक मणिरत्नम ने ओरछा की ओर रुख किया है। मणिरत्नम अपनी आगामी फिल्म "पोनियिन सेलवन" की शूटिंग ओरछा में कर रहे हैं। 2022 में रिलीज होने वाली इस फिल्म की शूटिंग के लिए वे अपनी पूरी टीम के साथ ओरछा में मौजूद हैं। इस फिल्म में मुख्य तौर पर साउथ के सुपरस्टार विक्रम, ऐश्वर्या, तृषा और प्रकाश राज हैं। फिल्म का बजट करीब 500 करोड़ रुपये है। विभिन्न लोकेशंस पर अक्षय कुमार, सलमान खान, रणवीर सिंह से लेकर कई बड़े फिल्म स्टारों की फिल्मों की शूटिंग हो चुकी हैं। इन स्थानों पर बेहतर कनेक्टिविटी और बुनियादी सुविधायें जुटाकर ज्यादा से ज्यादा फिल्म मेकर्स को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

संदर्भ

- https://www.bhopalsamachar.com/2020/02/mp-news_767.html
- https://www.mptourism.com/
- https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=1770175
- https://www.bhaskar.com/mp/bhopal/news/kamal-nath-madhya-pradesh-go
- http://www.starsamachar.com/Film-tourism-policy-Government
- https://www.livehindustan.com/madhya-pradesh/story-madhya-pradesh

The Cinematic Language of Satyajit Ray : With Special Reference to Pather Panchali

*** Dr. Yasharth Manjul**

Abstract: Satyajit Ray is one of of the most important filmmaker of the world. Almost after 30 years of him passing away his cinematic language is still the important study material for film scholars and researchers all over the world.From his first film Pather panchali(1955) till his last Agantuk(1991) Ray evolved himself as a filmmaker but Pather Panchali still remains one of his best film, made with minimal resources and creating a language of cinema while rejecting certain set standards that filmmakers contemporary of his times and afterward(specially in the age of digital era where there is a demand of better cinematic language and less resource) are inspired with. Pather Panchali remains the fountain head for passionate and new filmmakers throughout the world.The paper discusses what makes SatyajitRay an auteur filmmaker,his technique of adaptation and his approach towards the elements of mis-en-scene while making Pather Panchali.

This is the centenary year of Master filmmaker Satyajit Ray. Like the world, India is also celebrating its unique filmmaker in various ways. Different government bodies are organizing lectures and discussions on the art form of this dynamic filmmaker.Recently organized International Film Festival of India contained a daily discussion on the cinematic art of Satyajit Ray. A lot has been written about Ray and his films. Ray himself wrote a lot about cinemas Satyajit Ray from contemporary times till today has been called as the auteur filmmaker (somebody who has total command over tools of cinema) Film critic Gaston Roberge writes "Satyajit Ray has the reputation of working with great discipline.The shooting of his film is minutely planned.His direction is firm and precise.Takes are few and the shooting ratio is extremely low.The budget is moderate.Ray himself performs several major tasks in the making of his films: Scriptwriter, Music Composer, Director and at times camera person. In addition, he closely supervises all other aspects of the production, especially art direction and editing."Filmmaker and Actor Richard Attenborough who worked with him in Shatranj ke Khiladi says "I have to depend on entire team for various components during film production.Within the scope of Ray's proficiency and authoritative contribution were all the technical departments which he used to co-ordinate.The work of dress and Set Design was done by himself.He later went on to edit the film and compose its music.At the time of shooting he was also operating the camera and was directing the crew and actors.All his films are truly his creations.".No doubt Ray was an auteur,the time at which he entered the cinema world also highlighted his capabilities as a filmmaker. BD Garga in one of his articles in 1966 says that when Satyajit Ray entered filmmaking the scenario of world cinema was gloomy.The era of neo-realism was almost at end. The new wave filmmakers of Europe could not establish a signature style.The era of soviet filmmakers hadended.This was the time when two Asian filmmakers Akira Kurosawa and Satyajit Ray came as a breath of fresh air.

It is not only about the cinematic language of Ray but his content wide and multi faceted that documents the changes of the century within the country.In his career Satayjit Ray directed 25 full feature, 3 shorts and 5 documentary films. Through Apu Triology (1955,1956,1959) Ray

*Assistant Professor MGAHV, Wardha

documents a journey of a poor bhramin family from village to town, Jalsaghar (1958) is about the collapse of zamindari order ,Charulata(1964) and Mahanagar(1963) tells the tale ofwomen and their struggles, Pratidwandi(1970) is an important film about unemployment and its repercussions during the time,his last three films Ganashatru(1989), Shakha Proshakha (1990) and Aagantuk (1991) presents a new urban middle class. It is not only that Ray made only serious films he has significantly contributed in creating important films for children as well,that only shows his concern for the future generation.Ray's father Sukumar Ray contributed much towards the children literature in Bengali that further influenced ray to choose such subjects.Ray himself wrote stories for children.His understanding of child psychology reflected in his films.It is not merely a coincidence that major poetic films of the world like Red balloon(1956),Ivans Childhood(1962) Fanny and Alexander(1982) places child like emotion as metaphor.Ray's film does the same.Some of Satyajit Ray's important film for children includes Paras Patthar (1958),Goopy Gyne Bagha Byne(1969), Sonar Kella (1974), Joy Baba Felunath(1979) and Hirak Rajar Deshe (1980). Apart from these feature film Ray also made a short film Two(1964). It is an Important experimental film of Ray made for U.S Public television services.The film revolves around 2 young boys from different social background.Film has no dialogues.Ray has communicated using only actions within this film,since Ray considers cinema to be a primarily visual medium. It is his command on various elements of Mise-en—Scene that Ray uses no or minimal dialogues in presenting important segment of his film. The train sequence of Pather Panchali (1955), The opening sequence of Charulata(1964),The end sequence of Jalsaghar(1957) and Agantuk (1991) are few examples of his cinematic hold. Ray considered Cinema to be an art form having amalgamation of movement, Theatre, Speech, Music and story but primarily it is a language Ray himself has said "There is a debate whether the film is craft or not. Those who wants to limit the existence of films says that film has no personal existence,it is a monochromatic amorphous object mixed with five types of crafts.Actually this word itself creates a confusion.If it is called language instead of craft,then the nature of film becomes more clear and there is no room for argument".

The expression through his cinematic language that Ray was able to deliver was because of the fact that Ray inherited from his father, grandfather and Rabindranath Tagore as well as his school at Santi Niketan where he studied art for two and a half years, their modernist-social reformist tradition at one hand and a religious –philosophical Indiannesson the other.Both became distinctly discernible in his films.The dominant religious orientation in his ambience was derived from Upanishad and Buddhist wisdom.The first imbued with a sense of an intelligence permeating the universe and the second with non violence and compassion. Both intigrated in him a feeling for India's spiritual tradition. He also acquired the cultural heritage from Tagore.These strands manifest themselves in Ray's work in counterpoint to the western form of the construction of his films of Santi Nikentan itself Ray says, "In two and a half years, I had time to think, and time to realize that almost without being aware of it, the place had opened windows for me.More than anything else,it had brought to me an awareness of our tradition, which I knew would serve as a foundation for any branch of art that I wished to pursue. Santiniketan taught me two things –to look at paintings and to look at nature."

In his lifetime Ray made films independent as well as based on the studio system.

Ray in one his interviews tells about seeing more than 100 films before making Pather Panchali.It was Vittorio de sica's 'The bicycle thief' that made him sure about the style of his first film.

Cinematic language of Pather Panchali.

Completed in the year 1955 Pather Panchali episodically cover the life of a family residing in village.The film mainly revolves around the perspective of Apu and Durga.It drew only few portion of its stylistic inspirations from VittorioDe sica's Neo realistic film 'The bicycle thief'. Real

locations, natural lighting setting up the mood for film, free flowing narrative structure and life like characters(with zero makeup) was visible throughout the film.This was majorly because of the original novel By Bibhuti bhushan Bandopadhyaya on which Pather Panchali was based,According to Ray himself "One can be entirely true to the spirit of Bibhuti bhishan, retain a large measures of his other characteristics–lyricism and humanism combined with casual narrative structure–and yet produce a legitimate work of cinema. Indeed,it is easier with Bibhuti Bhushan than with any other writer in Bengal .The true basis of the film style of Pather Panchali is not neorealist cinema or any other school of cinema or even any individual work of Cinema,but the novel of Bhibhuti Bhushan itself". Ray had a unique quality of identifying the visual material from the written text that made him entirely different as a filmmaker from his contemporaries.His command over various elements of Mise–en—Scene allowed him to visualize text in a complete form at times different from to that of the original written text. He even omits from the original what he finds irrelevant for his films and at times add what he finds important.

Satyajit Ray in his career of feature film making made most of it based on Indian literature. But since for him cinema is primarily a visual medium he adapted the written text and presented it so cinematically that the visual narrative entirely evolved as an independent art piece .According to Ray himself his films are interpretation, a trans–creation not a translation."It is in the process of turning a story into a screenplay, I find that certain characters begin to change.Then script writing becomes a process of criticism of the original, because as you think deeply about the lines of development, some character do not seem anymore to behave in a convincing manner.So then starts a process of modification and the conclusion become slightly different from the original story". It is important to note that his command over the narrative structure guides him to develop causal effect within the screenplay.In case of PatherPanchali,in the novel the two deaths one of auntie(Chuunibala Devi) and other of Durga(Uma Dasgupta)are shown as unrelated by causal links to anything that's precedesthem.But in the film Auntie's death can be seen as a consequence of Sarbojaya's(Karuna Banerjee) ignorance and Durga dies of Pneumonia due to her ecstatic surrender to the monsoon shower. Establishing causal links at these level has made the story comprehensible at all levels.

In terms of cinema,talking only about the narrative structure doesn't allow to look at the film completely.The cinematic language of Pather Panchali plays a very important role in giving new metaphor to the novel of Bibhuti bhushan Bandopadhyay. Camera work, editing, setdesigning, lighting, music and the use of diegetic sound makes this visual piece an independent art work. The original mood of the novel is not only impactfully captured but the episodes are structured and created in a manner which makes this film an important film study material.

I would specifically like to discuss the treatment of two deaths portrayed the in the film, first is of Aunt and second is of Durga. The choice of various elements of mise–en–scene used in these deaths are of different nature.The former generates 'shaantras' while the latter 'karuna'.The death of aunt is portrayed in long static shots using the poem that she use to sing as the background score while the death of Durga is accompanied by music (the dialogues are completely absorbed in the sequence when Harihar(Kanu Banerjee) comes to know about her daughter's death).The camera is moving .Aunt death is sudden in the film but the death of Durga is picturised more dramatically in the film.In fact all the birth and death in the Aputrilogy form a well organized design of their own.Apu's birth,the birth of a son is truly a happy event for the family and the community.When Apu's son is born the mother dies:happiness is neutralized by the tragic contrast.The fiction of the trilogy places deaths a ruthless turning point.Indir is very old,in any case

due to die soon but she asserts her dignity in the manner she dies.Durga has just entered youth when she dies of a mere fever in a poor medical help situation. Harihar death is all too sudden,when he was settling down to a new pattern of living in Benares.With Apu's distancing, Sarbojaya slowly withers away in silent loneliness in the village. Aparna's (Sharmila Tagore) death while giving life to Kajal fits well in the design of life–death triology.All these deaths uses varied metaphors too.

The practice of film editing rests on the principle that "shots rightly selected and viewed from the correct angle,in a right order,cut to the right length, beginning and ending at the right moment are apprehended as a single whole".Ray followed this principle of editing and has always played editing as an important tool of storytelling. Ray used editing that kept the audience absorbed in the narrative of the film.This was unlike his contemporary, Mrinal Sen, who has used jump cut to produce alienation (specifically in his Calcutta triology) effect.Ray believed in smooth transitions and used editing to produce continuity of emotions rather than breaking it (Scene from Charulata (1964) where Charu before writing a story thinks of her village(montage) is important sequence in this regard). Almost all scenes of Pather Panchali have multiple shots smoothly joint together keeping in mind the principles of continuity. Ray also intelligently used editing to keep the focus at certain character instead of shifting it. The candy man' sequence in Pather Panchali is important here , throughout the sequence the viewer is made to identify with Apu and Durga.This whole sequence does little to advance the story,yet,it conveys deep feelings. Indeed this segment of the film functions like a dance in other Indian films. It is delightful to watch. But whereas the dance in Indian films are usually brought in for their own sake, and impede the development of story,but here we can see and associate with the environment and little joy of Apu and Durga. The homework and story boarding done by Satyajit Ray helped him to do the editing on the camera itself. He was clear about his intentions before he began shooting.It made his shooting ratio low. Editing in his films demonstrates flow and poetry.This process continued in all of his films which started from Panther Panchali. According to Ray "Editing is the stage where a film really begins to come to life and one is never more aware of the uniqueness of the film medium then in watching aawell cut scene pulsate with a life of own".

Like Dulal Datta (editor of Pather Panchali), Subrata Mitra never worked in films before. His frame sense and experimental outlook helped him in his first film with Ray. Subrata Mitra also operated the camera until Charulata when Ray decided to take over. They Both parted company. Ray was very precise about the working style of cameraman he wrote "It is dangerous for a cameraman to put forward creative suggestions unless he has the full emotional and visual sweep of the film in his head". Throughout his film career Ray completely knew about the mood and visualization of the film he is working ondue to which he was able to impose a visual approach to his camera man. The story boarding of Ray contained the details about the lighting condition as well as other elements of visual composition of the film.This led him to create an authentic atmosphere through unobtrusive camera work and lighting in Pather Panchali. Ray worked in independent as well as studio style of filmmaking his dislike for slick light effects was seen in his first film Pather Panchali,where he completely used natural lighting through which he created the ambience, look and mood of the film.Ray in his first film rejected the method of studio lighting but he is equally comfortable in using them in his studio based films like Jalsaghar(1958) and Charulata(1964).Set design,locations,costume and makeup have provided authenticity to the film.

Conclusion– Through his first film Satyajit ray gave a new kind of cinematic language to the world. Rejecting certain methods acceptable world over like Narrative structure,shooting on the set, editing, lighting style and documentary style in fiction.His command over other subsidiary art forms of Cinema and his vision not only helped him to completely utilize his resources.But also made him an auteur filmmaker guiding all other departments. Ray remained constantly in touch with important cinematic development throughout

the world which could be seen in his writings on cinema.His memoir 'My years with Apu' has details of his struggles while making this film in minimal resources,early debacles and prolonged shortage of funds. Film won 11 international awards including the 'Best human document' at the Cannes Film festival.This proves that one needs passion and complete study of the subject while making the films.Rest is secondary.

REFERENCES

- The art of Cinema,BDGarga,Penguin India,2005
- Deep focus:Reflection on Cinema,Sandip Ray(ed),Harper Collins,2013
- Our Films Their films,SatyajitRay,Orient Blackswan,2001
- Satyajit Ray: Essays(1970–2005),Gaston Roberge,Manohar Publishers,2007
- SatyajitRay:An Intimate Master,Santi Das(ed),Allied Publisher,1998
- In the beginning there was Panther Panchali,AdoorGopalakrishnan,in Santi Das(ed) Satyajit Ray: An Intimate Master,Allied Publisher 1998, pp.57–8
- The cinema of Satyajit Ray,Chidanand Das Gupta,National Book Ttrust,2001
- Seeing is Believing:Selected Writings on Cinema,Chidanand Das Gupta,Penguin India,2008
- Aputrilogy:A textual study, Satish Bahadur & ShyamlaVaranse,Vani Prakashan,2012
- https://satyajitray.org/cinematography–camera–and–lighting
- Satyajit Ray, doccumentaryfilm,Shyam Benegal,1985

Study on Non-verbal Communication in National Award Winning Movies (with Special Reference to Mrigaya)

*** Dr. Urvashi Parmar**
**** Ms. Sheuli De Sarkar**

Abstract: The society is changing constantly and so are we as a part of it. We learn things from our surroundings, as kids we do what we see our elders doing and that are how we learn new things. Communication is an important aspect of human survival, without it co-existence of life is somewhat not possible. Communication is basically the process of telling others what you want to express. Communication is majorly divided into two types – verbal (which is spoken and has words) and non-verbal (everything other than spoken words). Communication helps people to live in the society and grow together for the betterment. There are several mediums of communication and cinema is considered as one of the most effective mediums of communication in the society. It not only entertains us but also educates us by giving many good messages which are important for the development of the society as a whole. Since language can be considered as a barrier for this medium in disseminating its message the researcher tried to analyze the frequency of use of non-verbal cues in the movie for communication.

Key Words – Cinema, Non-verbal communication

INTRODUCTION -

Cinema is a huge part of the Indian society and plays a vital role in the development of the people in many aspects. Cinema not only entertains us but also teaches us many new things and opens our minds to new possibilities. This creative medium has been with over 100 years now and will keep affecting the life of the people for many more years. India is a diverse country with people speaking many different languages and thus movies are made in a variety of languages. This is the reason why many times we are not able to watch a good movie because of its language. So if the film makers make it a point to inculcate the use of non-verbal communication more in their movies, it might be able to reach a larger number of audiences. Now days the content of movies are more dialogue based as compared to the earlier movies. It is not wrong to say that in the present time we lack aesthetics film making. One of the reasons for this is that film makers now days are more concerned about earning money than giving good content to the audience.

Non-verbal communication is broadly divided into five major categories, they are – Kinesics, Haptics, Oculesics, Proxemics and Chronemics. Kinesics is the study of body language and is all about communicating through body movement such as gestures, postures and facial expressions. Kinesics is one of the main and powerful forms of human's communication. Haptics is the branch of non-verbal communication which deals with the sense of touch. Touch can be said as the most sophisticated and intimate way of communicating affection or emotion. After vision Haptics is the second most important way we have for understanding and interacting. Proxemics is the study of human use of space and distance. Oculesics is the study of eye movements and how we humans communicate through our eyes. It is a branch of kinesics. Chronemics is the study of the use of time in non-verbal communication.

Cinema being such an important part of the

*Assistant Professor, Makhanlal Chaturvedi National University of Journalism and Communication.
** Ph.D Scholar, Makhanlal Chaturvedi National University of Journalism and Communication.

human society should use proper communication channel for the dissemination of the message and for this if the main stream cinema use more of non-verbal cues than the verbal cues then may be the audience will be able to understand it more and also language will not be a barrier for the audience who love watching good films.

In this study the researcher did an in depth content analysis on of the national award winning Indian movies on the basis of these parameters of non-verbal communication types and tried to analyze how much non-verbal cues are used in the award winning movies for communicating the messages.

REVIEW OF LITERATURE –

1. Thompson O. Ewata in his research paper, "Meaning and Non-verbal communication in films", studied the non-verbal communication in two films belonging to different countries and cultural on the basis of physical appearance, gestures and postures, face and eye behavior, vocal behavior, cultural signs, space and environment, and concluded that non-verbal communication is a universal property of human beings and the non-verbal cues aid the interchange between characters in films and helps audience's comprehensibility in the multilingual and multicultural complexities portrayed in the film genre. Through his study he said that human beings always depend on the non-verbal cues more for communication than words as they convey the meaning more easily and some non-verbal cues can be used universally. Non-verbal communication accounts for 70% of the information transmitted during human interactions and against verbal communication which accounts for about 30%. Non-verbal communication is very useful when people belonging to different linguistic background interact with each other. The language barrier can be a big hindrance for communication among people and non-verbal communication can help in removing this barrier. The author mentioned in his study that actors use multimodal non-verbal cues in movies which make the communication process easier and the message more clear. After analyzing the non-verbal cues in two films belonging to two different cultures and backgrounds the researcher even concluded that non-verbal communication can be considered as the universal property of human beings, but he also said that if non-verbal cues are not handled properly they may portray wrong attitude of the users and can lead to miscommunication. Hence it is very important to understand the non-verbal cues properly and use them for communication in the correct manner.On the basis of this research it can be said that, using non-verbal communication in cinema can reduce the language barrier. In a country like India where movies are made in multiple dialects, this practice can provide the audience with more good options of movies to watch.
2. Celina Stratton, in her paper, "Non-verbal communication and the influence of films success: A literature review" stated that the success of any film depend on how much it can influence the audience and the audience gets persuaded by any film only when they feel a connection with the film. The research did an extensive literature review supporting the statement that non-verbal communication influences the success of films. The success of any movie depends on the response it gets from the audience and the audience will like it only when they will feel some connection with the movie, this connection can be based on many factors. The researcher through this study claimed that non-verbal cues used in the movies are a big reason for the success of any movie as they persuade the audience. The non-verbal factors which the researcher analyzed where – environment (which was presented through the camera work and lighting), physical characteristics (the set of the film and the props used to establish anything related to the story), gestures and postures of the actors, costumes, colors, physical appearance and

sound. These elements non-verbally narrate the story of any film and on the basis of many research done it can be said that these factors successfully connects the audience to the films which as a results becomes the cause of the commercial success of any film. Movies are considered to be mass influencers and repeated exposure of it can yield power effect on the viewers, thus it won't be wrong to say that movies can be a very good medium to disseminate good messages to the society, and non-verbal cues used in the movies makes it all the more easy for the viewers to connect with the films and understand it better. Be it the actors acting in the films, the music, the environment of the film, the viewers will accept it all only when they feel a connection with these things and the researcher in this paper says that according to her research these non-verbal communication tools have time and again proved to establish a connection between the audience and the movie which intern have yielded on the commercial success of the film, and is a film is commercially successful it obviously will reach a huge number of audience. Thus it can be said that using non-verbal cues in the movie makes it more popular and successful and these films effectively persuade the audience.

OBJECTIVES –

1. To analyze the non-verbal communication in the selected movie on the basis of acting done by actors
2. To analyze the non-verbal communication done by camera movements and shots in the selected movie.

METHODOLOGY-

Content analysis was done on the movie Mrigaya (1976) which is the national award winning movie on the basis of some set parameters of non-verbal communication. The movie was selected through chit method under simple random sampling technique in probability sampling. Total 14 hindi movies have won national award till now, out which Mrigaya was selected for analysis through chit system.

DATA ANALYSIS AND INTERPRETATION

Movie – Mrigayaa

About the Movie –

Mrigaya is a 1976 hindi movie directed by Mrinal Sen. The movie is a about a tribe living in a remote village and their life. Mrinalsen used this movie to powerfully drive home the point of humans as animals (which makes them more dangerous) in a story woven against the background of uprising British rule and common people's steps against them. Mrigaya literary means royal hunt and the title is justified in the story.

Kinesics (Mrigaya)

Time	Face Expression	Posture	Gait	Head Movement	Any other particular behaviour / habit
7:39		Mukhiya sitting at a height and villagers sitting on ground- indicating class difference			
8:02			Man stops walking, turns, walks towards the other person – anger		
8:21	Man spits towards those who are making fun of him – his rejection or anger against their act				
8:31		Girl talks with head hung low – sad/disappointed			
10:04			Ghinua walks fast – determination		
13:35	Ghinua nods head to say yes				
17:28			Ghinua walks slowly so that animal does not run away – hunting		
21:56	Ghinua's mouth open – eyes wide – surprised				
30:00			Girl walking with water quickly move to side – giving way to the big man		
32:19	Old lady talks with straight face – indicating the degree of her pain and sorrow				
32:55		Man turns his face to the bad guy with sudden movement – anger			
36:33		All men sitting at the feet of bad man shirtless – class/ caste difference			
38:14		Ghinua stands up and turns as dhunia walks towards the bad man – worried			
41:48	Ghinua smiles at his newly wedded wife – happiness, love, affection.				
52:41		British lady stands up to see what happened			
59:13			Man walks forward then again goes back to tell others to come fast repeat this action – scared to go alone		
59:59			Old lady walks slowly with folded hand		
1:01:41			Britisher walks uptight – determined to catch the thief		
1:14:02				Policeman nods his head in agreement	

Kinesics

The movie deals with a very unique theme and an important message for the society. Being amrinalsen movie a lot has been shown which goes beyond the dialogues and the story line. The story is about a tribe living inside a dense forest, and this has been very clearly shown by the director through the appearance and behaviour of the characters of the movie. As we know that tribal people are not very much aware about the outside world nor do they have any connection with it. This has been very nicely portrayed in the movie by all the characters. Their way of talking, walking, reactions, actions everything conveys who they are and where they belong to. The class difference shown by the distance between them, also the difference between the people of the village is very well portrayed by the interpersonal relationship of the villagers. Whenever there is meeting of the

villagers, it can be seen that the mukhiya (head) is sitting at a height and the villagers are sitting at a level below him, and whenever they are talking to him their body language is giving the respect required. Similarly whenever the Britisher comes and talks to the villager they all have their head hung low showing respect to him. The movie is not about just one person or just the main leads, the story involves many characters of the village and highlights their personal problems and every character's problem can be sensed through their expressions and body language. Some common communication done through non-verbal cues are – walking fast or slow to indicate urgency or worry respectively, nodding of head to agree with something, blank face indicating immense sadness, faint smile on face – happy to get support etc. In the last scene of the movie, the villagers gather at a place from where they can see the first rays of the sun in order to stand with their hero who was ordered to hand till death, as soon as he is hanged the shot cuts to a wide shot were the sun rises and all the villagers stand up and raise their hand, this is their way of showing respect to ghinua for the greatest hunting he did and saved the entire village from the most cruel animal – the rich money lender.

Kinesics					
Time	Face Expression	Posture	Gait	Head Movement	Any other particular behaviour / habit
1:17:44	Faint smile on face of old lady – happy to get support from mukhiya				
1:31:15			Ghinua walks slowly so that no one notices him		
1:34:48				British man looks up – realization	
1:35:13	Lawyer says everything with a straight face – confidence about murder				
1:36:18			Mukhiya walks slowly – sad as his son will be hanged		
1:36:26		Mukhiya falls towards the wall for support and starts to cry – immense sadness			
1:37:16		Everyone stand up as mukhiya comes – respect			
1:40:56	Lost expressions – sad and scared (ghinua)				
1:43:02		Everyone stand up and put both hand in air – paying respect to ghinua's sacrifice			

Haptics

The villager have been shown very united and each person loves the other, they even at one point unitedly lie to the police man to save one of their villagers son, thus throughout the movie a lot of hand movements have been used to show the support and comfort given to the people by each other. Waving hand to say no, folded hand and bowing to show respect, holding face with hand by mother indicating love and affection, holding hands to show support, all these have been repeatedly used to communicate a many things non-verbally throughout the movie. In one scene when ghinua and dhuriya are sitting with all the other villagers to watch the entertainment program, one of the man who works for the rich money lender comes near them and again and again keeps his hand on dhuriya's shoulder, each time the man does this, ghinua shrugs his wrist and keeps his arms around dhuriya's shoulder and moves near him, this gesture clearly show the protective nature of ghuniya towards his wife and how he will always save and protect her from men like this, which he does again towards the end of the movie. In another scene all the villagers are seen pointing their hand towards the bad villager who worked for the british this gesture indicates the unity of the villagers and how they can be dangerous when it comes to protecting their people.

Time	Haptics
5:38	People vigorously beating stick with hand on some object – trying to scare away animals
7:20	Villager waves hand to tell his wife to leave
11:18	Ghinua repeatedly use his hand to justify his action
26:06	Ghinua folds hand and bows in front of the british man before leaving
56:43	Mother holds son's face with both hands, son holds mother from shoulder- indicates the love and affection between both of them
1:03:31	Mukhiya embraces shalpu with is palm on his face and shoulder – his love, affection and trust towards him
1:05:45	Man keeps hand on dhunia's shoulder, ghinua removes man's hand and keeps his arm around her shoulder – protection of his wife
1:18:19	Everyone points fingers at the bad man and move towards him – attacking him
1:33:25	Mukhiya taps on dhunia's hand on his shoulder – support, console

Oculesics

Not too many scenes have used which have focused just on the eye movements of the characters, but since a lot have been communicated through the expressions, eyes have definitely played some important role too. Talking about ghinua's character, he has mostly spoken through his face and expressions. His anger has been shown with wide eyes, his love for dhuriya has been shown through the spark in his eyes whenever they were together and his rage and violence has also been shown through his eyes. Dhuriya's character also speaks less in the movie, most of the actions has been done by her expressions and eyes. Her eyes are moist when she is scared. In one scene when she is observing how ghinua is following his pray she keeps looking without blinking indicates her level of

Time	Oculesics
15:40	Ghinua looking sideways as if something is their – being alert
17:58	Girl keeps looking without blinking – keen observation
1:24:40	Ghinua's eyes wide and does not blink – anger

concentration. Both the lead characters have done justice to their role and communicated a lot through their eyes.

CAMERA ANGLES, MOVEMENTS AND SHOTS

Not much variety of camera angles or movements have been used in the movie, but shots have been used in many places to communicate a lot of things. Zoom in have been used multiple times in the movie, it is the most used camera movement followed by pan movement. Whenever any character talks about misery or any mishap the camera zooms in towards his or her face to emphasize and highlight the sorrow. Since the story is about forest and the people living in it, there are many pan shots to establish this and give the feel of the forest and village area. Repeated shots of villagers working on fields have been shown to make the theme and location more clear. Close up shots have been used many times to highlight the emotions and sufferings of the villagers. Low angle and high angle shots have been used to show the caste and class difference which otherwise has not been shown through dialogues, the camera has communicated it quite well.

Camera Angles and Movements

Time	High Angle	Low Angle	Dutch Angle	Pan	Tilt	Track In/ Out	Combination
1:20						Camera zoom in the dense trees- taking the audience inside the village / forest	
1:42							Multiple shots of people working in village – village life establishment
14:25						Camera zoom in towards the mukhiya and other villagers – highlighting their reactions	
14:36				Pan shot of field then hills then sky – village ambience			
15:30							POV of ghinua- his vision of the forest
37:34						Zoom in to huzur – as he looks at dhunia – looking at a young girl with wrong intension	
59:29				Pan shot of all the people – showing everyone's reaction			
1:24:28							Shaky camera movement to indicate something disturbing has happened

CONCLUSION –

After doing in depth content analysis of the movie it was observed that non-verbal communication was used a lot. There were less dialogues and more communication was done through non-verbal cues. The movie was set on the background of tribal village and was based on a social and emotional storyline. The actors did a lot of justice to their characters and their acting communicated many things. Since the movie was based on tribals definitely there were many things which were given special attention to, like their clothes, the locations and the way the characters interacts which each other. If someone who is not aware about the difficulties faced by the tribal people this movie will really help to understand a lot about the lifestyle these people follow and what all they have to go through in their day to day life to earn their bread and butter. Kinesics was the most used form of non-verbal cues in both the movies and there were many common cues which were used in both the movies despite both being in different languages. Haptics and Oculesics were also used repeatedly in both the movies to communicate the emotions of the characters. It was observed that proxemics was one element of non-verbal communication which was not used in the movie to communicate anything particular.Apart from that all the other forms of non-verbal cues were used for communication.

Thus it can be said that national award winning movies which can be considered as the best movies from India have used non-verbal cues for communication and people from not only India but world have liked and understood the movies. So the use of non-verbal cues in cinema should be inculcated more. Also generalized cues should be used so that more and more audiences are able to watch these movies and understandthe message. Therefore if more non-verbal cues are used in the movies then language barrier can be removed and all those who enjoy good movies will be able to watch and understand these movies.

REFERENCES

- Arora, T. (2020, August 13). KINESICS: THE STUDY OF BODY LANGUAGE. Retrieved from scicomm.in: https://scicomm.in/uncategorized/ kinesics-the-study-of-body-language/
- Danesi, M. (2016). Proxemics . Retrieved from sciencedirect.com: https://www.sciencedirect.com/ topics/ medicine-and-dentistry/proxemics
- Ewata, T. O. (2016). Meaning and Non-verbal communication in Films. Issues in Language & Linguistic: Perspectives from Nigeria, 3.
- Haptic Communication. (n.d.). Retrieved from communication theory: https://www.communicationtheory.org/haptic-communication/
- Stratton, C. (2017). Non-verbal communication and the influence of film success: A lifetime review. Concordial Journal of communication Research, 4(1).

Mobilizing Justice in Social Media through Hash Tag: A Case Study of "#justiceforsushantsinghrajput" on Twitter

*** Nitesh Tripathi**
**** Swati Chandak**
***** Mr. Sayak Pal**

Abstract: In recent times, the importance of Social Media has increased significantly as it has become the medium to register protest against injustice or initiate activism for burning issues. And that is why the term Social Media Activism became popular due to the immense contribution of Social Media in Arab Spring, Occupy Wall Street, Me too Movement, Black Lives Matter and so on. In all these cases, there was a positive outcome that encouraged the common people to utilize it to raise their voice, dissent, opinion on issues that are not covered by the mainstream media. But the success of these Online campaigns/activism has also boosted the moral of netizens to raise issues that are trivial. Also, they see it as an opportunity to change the course of debate as per their convictions. Online debates on issues turn volatile and toxic as netizens start taking sides and go to any extent to prove their point.One such example was the death of Sushant Singh Rajput, an actor which led to the formation and consolidation of his fans on Social Media platforms who starting trending #JusticeforSSR. While initially the focus was on pressuring the government to initiate a CBI enquiry into his death but later conspiracy theories starting circulating regarding circumstances of his death and his fans began targeting Rhea Chakraborty by running a smear campaign. The demand for her arrest became a trending hashtag. Later Kangana Ranaut, another actress shaped the debate towards nepotism and Sushant's Online fans shifted their focus on hating and trolling other Bollywood celebrities who were a product of nepotism or supported it such as Karan Johar, Varun Dhawan, Alia Bhatt etc. The fans in pursuit of providing justice to their Idol (Sushant) initiated online gestures such as trolling actors who supported nepotism, disliking trailers of films on YouTube, and boycotting films such as Sadak 2. The study assessed and anticipated the reasons, as well as genesis behind the Sushant fans anger being vented towards the debate of nepotism and how it turned into fruition through online gestures. Also, itanalysed the content posted on Twitter through discussion threads and tweets, using Semantic Analysis in order to understand consequences, and also investigate the downsides of social media justice. The findings of the study suggest that most of the tweets were centred around themes such as– drawing parallel with other incidents, venting anger on a particular person/party, paying tribute to the deceased person, demand for justice, boycott of certain media content to express solidarity with the cause, or suspecting foul play by circulating conspiracy theories.The tweets displayed that diversity of opinion existed on #JusticeforSushantSinghRajput but none were leading towards a particular discourse and that might have been one of the reasons behind the entire activism endeavour being inconsequential in totality.

Keywords– Social media, Internet Justice, Sushant Singh Rajput, Nepotism, Twitter, Bollywood

INTRODUCTION

The Social Media platforms have proved to be a boon for the humankind. They have innumerable utilities due to which they are widely popular among the masses. Be it for the purpose of socializing, exchanging information and news, or connecting with people across the world, Social Media has always been the facilitator. One of the

* Assistant Professor, Adamas University, Barasat–Kolkata
** Assistant Professor, Adamas University, Barasat–Kolkata
*** Research Scholar, Symbiosis International (Deemed University) Pune

lesser understood utilities of Social Media is its use for activism and campaigning for movements. Since its origin, it has been used widely by the people to raise their voice against injustice. In fact, popularity of few of the platforms such as YouTube could be attributed to the social movement. While Arab Spring could have been limited to just Middle-Eastnations but with YouTube (which was in its nascent stage at that time) the atrocities of the dictator regimes became known to the world and thus support started pouring in from other powerful nations as well. Due to Arab Spring, democratic governments came in power in Middle-East and Social Media played a pivotal role in this. Not just this, in many other movements since then, Social Media has become the major site for expression and aggression as well- be it discontentment due to lesser job opportunity, gross corruption in the institutes, raising voice against exploitation and harassment, or environmental concerns.

The focus of this study would be on how Social Media platforms are used by netizens for demanding justice for a particular cause. As we all know, whenever someone faces discrimination or injustice, the logical and the correct step would be to approach the Judiciary system. But people around the world when fed up with inefficient judicial system, use Social Media to demand justice. For instance, me too movement became popular because women at workplace were getting harassed and the perpetrator were mostly the people with power and money which made it difficult for victims to approach the Court. And so, women broke their silence using social media where they narrated their story and this is how the movement became global. It is in this respect that justice through Internet (or popularly known as Internet Justice) must be studied so as to understand the various dimensions of this entirely new phenomenon. There is a need to analyse and document its- strengths, limitations, disadvantages (if any), implications, forms, and various instances.

Justice and its Forms-In The Theory of Justice (1971), John Rawls articulates that justice is the first virtue of social institutions, as truth is of systems of thought. A theory however elegant and economical must be rejected or revised if it is untrue; likewise laws and institutions no matter how efficient and well-arranged must be reformed or abolished if they are unjust. Each person possesses an inviolability founded on justice that even the welfare of society as a whole cannot override. For this reason, justice denies that the loss of freedom for some is made right by a greater good shared by others. Justice is a social issue as it focuses on societies. There can be no definition for, or understanding of, the term 'justice' without a social context in which it is embedded. (Amit & Tirosh, 2015) The primary subject of the principles of social justice is the basic structure of society, the arrangement of major social institutions into one scheme of cooperation. We have seen that these principles are to govern the assignment of rights and duties in these institutions and they are to determine the appropriate distribution of the benefits and burdens of social life. The primary subject of social justice is the basic structure of society, or more exactly, the way in which the major social institutions distribute fundamental rights and duties and determine the division of advantages from social cooperation (Rawls, 1971).

The view of justice investigated asserts that a just society is a good society: good for the individual people that comprise it. To implement such an approach to justice, the social good is identified and used to rank social alternatives. Of the alternatives that are feasible, given the constraints of human nature and history, the best is identified with justice. Even if the best alternative is not chosen, however, better ones are considered to be more just than worse ones. If societies are not perfectly just, therefore, social improvements can be recognized (Donaldson, 2002) There are different forms of social justice. The distributive justice, or economic justice deals with giving all members of society a ₹fair share₹ of the resources available (Donaldson, 2002). Procedural justice is makes and implements decisions according to the process which safeguards 'fair

treatment'. It believes that rules must be impartially and consistently applied in order to generate an unbiased decision (Tschentscher, 2019). Retributive justice appeals to the e idea that people deserve to be treated in the same way they treat others. It is justified punishment as a response to past injustice or wrongdoing (Alexander, 2018). Restorative justice deals with healing the wound of victims and tries to restore the offenders to a more law-abiding life. It also aims at repairing harm done to interpersonal relationships and the community (Hamilton, 2021).Online activism takes many forms, from symbolic signal-ling of one's stance on a politicised issue (e.g. changing one's social media profile picture) to more complex engagement (e.g. writing detailed posts about a social issue. The formation of online activist communities is rarely isolated: The online and offline are typically closely integrated. Indeed, online activism facilitates offline protest by advertising and organising it. Increasingly, this means that mass protests can occur without formal structures (Greijdanus, et al., 2020).

Defining Internet Justice – Internet justice is defined the reflection of the people seeking action on the egregious acts on a specific issue and demanding justice on the same. The acts are described as unruly and lawlessness by many and sometimes based on inaccurate or false information. It is in some instances also been described as modern-day witch hunting and result in vigilantism (Azarian, 2017). The original term "Cyber Justice" encourages good governance through norms of human rights in internet. The concept is based on three key approaches, "more accountability", "more transparency" and "more participation" helping internet users to protect human rights and promote good governance through cyber tools. The lack of global regulation on internet communication results in abusing and misusing information causing damages to many, thus strict cyber governance is much needed to control the spread of information on internet. The infiltration of human rights on several occasions is very common and they applies on various areas like 'free expression', 'art forms; 'written text'; 'free and equal access to the information'; 'protection of privacy', 'friendship and health issues' and many more. One of the common issues encounters by the many people is related to the intellectual properties which can easily get tempered on cyber space. Although government across different nations are trying hard in setting guidelines and rules on the data manipulation and misinformation on cyber space, it's hard to keep track of massive information surge on cyber space (Mihr, 2016).

The behaviour of mob on the internet, protesting issues are somehow related to the animal behaviours which depicts the similar kind of attitudes towards the community members. Like the Turkeys often attack the injured one and drive it to death, which is not completely unusual among the other animal community. Several instances are also found where people are often victimized because of the false information spread over internet. One such case occurred for Kyle Quinn, a biomedical engineer working as an assistant professor at the University of Arkansas. A lookalike, wearing a t-shirt captioned "Arkansas Engineering" spotted in a rally in 'Charlottesville' immediately alarmed internet activists and threats ware posted on Kyle Quinn who had nothing to do with the activity and in fact being accompanied by his wife at his resident on that evening. Kyle Quinn and his wife faced several threats from multiple sources and even forced to take shelter at his friend's house while people also demanded his termination from the university. The case was finally resolved when the actual protester came forward and apologized for the misunderstanding (Leon, 2019).

Internet Justice from the Indian perspective- India saw several changes through decades with cases that contradicts the fundamental human rights and also seek out justice through online media where the traditional jurisdiction fails to aid to their cause. In March 2015, Supreme Court of India scraped the decade's old Section 66A of 'Information Technology Act' that identified any content that was inconvenient, annoying and grossly offensive as a criminal offence as the terms were found to be extensively broad and vague. The section used to be abused excessively by the law and enforcement agencies on

the content posted on social media (Deepak Maheshwari, 2020). On 16 December 2012, India woke up with the horrified news of raping and murdering a 23-year-old medical student near south Delhi. The citizen of India broke in massive protests demanding justice for Jyoti Singh (named as Nirbhaya) who was raped by six men. The Social media was flooded with the campaigns and protests "Justice for Nirbhaya" that ran for long time and finally the four accused, who were involved in raping and murdering the victim, were given death penalties in Tihar jail, after fighting the battle for almost 7 years and 3 months (Chatterjee, 2020). The list of the cases is quite long in India and social media has always been used as a highly potential medium to bring in the protest and could also manage to gather millions of shares and comments, putting constant pressure on the judiciaries to present the verdict sooner. "Shakti mills gang-rape case" in 2013, where a female photojournalist was attacked and gang-raped; "Badaun gang-rape case" in 2014, saw the gang-rape and murder of two girls of 14 and 15 years by five men; "Uber rape case" in December 2014, accused an Uber driver of raping a 27 year old female passenger which led to banning the Uber service in Delhi for a brief period and many more found their way to internet and people started asking for the justice to be delivered in favour of the victims (desk, 2017).

Internet Justice for Sushant Singh Rajput- On 16th June, a young talented Bollywood actor Sushant Singh Rajput was found hanging from the fan of his ceiling. Immediately people around India and media outlets including Social Media platforms started speculating that it was not suicide but murder. Some alleged that his girlfriend Rhea Chakraborty was responsible for pushing him towards drug addiction and depression. While there were many others who saw a bigger conspiracy and blamed it on the nexus in Bollywood (film industry) known as "Bollywood Mafias". Celebrities like Mahesh Bhatt, Karan Johar and Rajeev Masand were blamed for bullying Sushant and taking way film opportunities from him which made him suicidal. His fans on Social Media started several hashtags to demand justice for him. They demanded CBI (Central Bureau of Investigation), premier investigating agency of India to investigate the case.But they didn't stop here. They even started trolling other celebrities such as Alia Bhatt, Varun Dhawan, Sanjay Dutt, and Kareena Kapoor by calling them products of nepotism and disliking their trailers on Youtube, boycotting their films, and unfollowing them on Social Media.Thus what started as a movement for pursuit of justice took ugly turn and ultimately became a means to insult, take revenge, and initiate blame game on opposing parties.

REVIEW OF LITERATURE

Social media activism is a form of protest or advocacy for a cause that uses social media channels. Because hashtags play a central role in mobilizing movements, the term is often used interchangeably with hashtag activism. It includes promoting awareness and showing solidarity through the use of hashtags, posts, and campaigns (Reid & Sehl, 2020).Social media involvement builds support and creates a network of partners for important issues; therefore it has the capacity to have an impact within political and legal systems. Many recent events, such as the Kony 2012 campaign and the Arab Spring, have demonstrated how social media can influence mass movements (Thomson, 2013) and act as predecessors of 2020s progression into digital activism. George Floyd's death on Memorial Day set in motion a national reckoning with the systemic inequity that Black Americans have been subjected to in this country for centuries. Thousands took to the streets in protest of anti-Black racism and in support of the Black Lives Matter movement (Rosenblatt, 2020). In these events, social media and hashtags played an instrumental role in mobilizing the human rights movement offline (Reid & Sehl, 2020).

First, they allow individuals to express experiences and opinions, relating them to collective causes. Second, they allow online community members to provide support, organise activities, and challenge negative responses to

their activities (Greijdanus, et al., The psychology of online activism and social movements: relations between online and offline collective action, 2020). The efficacy of online organizing has led to real, tangible results during a time where governments and institutions are being called out and exposed for systemic injustices (Zhu, 2020). These social mediamovementshave been attributed to the interest and involvement of youngergenerations, who may be perceived as the starting point for such movements. (Thomson, 2013). Online activism provides an opening, a doorway for those people who perhaps don't know what to do and don't consider themselves as activists, to enter the conversations online where it may be safer and more private (Zhu, 2020). These social media tools offer people a chance to gain a perspective on issues in other nations and it allows people to become involved in means of communication often perceived as controlled by "mainstream" and "elite" media outlets (Thomson, 2013). While some users harnessed social media to demand justice for the victims of systemic inequity, others used it to hold the platforms themselves accountable (Rosenblatt, 2020).

There is the danger that online activism could result in "slacktivism" and movements could slow down (Thomson, 2013),while it's hard to know who is partaking in meaningful activism and who is partaking solely in "slacktivism". K-pop stans, or ardent fans of Korean pop music, joined forces with TikTok users to attempt to troll the president by reserving tickets to the rally with no intention of attending. (Rosenblatt, 2020).Those who engage in activism through social media have to be dedicated, persistent and reach out to those who are affected by the issue that is being raised through social media (Thomson, 2013).The future of how effective youth involvement in social media can be really depends on the level of interaction between the public and these social media tools. Activism and awareness raising is a long term fight, through social media, and must be kept up in an effort to engage younger audiences and prepare them for future involvement (Thomson, 2013) With our society shifting towards an increasingly digital future, the ways social media is wielded by activists can have a significant impact on how much attention and support an issue receives and as a result, how responsive institutions are to demands for change (Zhu, 2020).

The impact of globalization, digital media and the Internet can be seen now more clearly than ever today. The globalisation of every struggle or movement gaining attention and horrors of Internet shutdown to stop the information to reach outside are the two realities of today. The Supreme Court has stated Internet freedom to be a fundamental right, and hence, the Internet blockade in states of Uttar Pradesh, Assam and Kashmir etc. are example of failure of administration and citizens' rights (Sabbagh & Schmitt, 2016). When the press is not able to expose the brutalities of the establishment, it is grassroots protests recorded by the public that brings truth to the global community watching on the Internet. What social media has done in the protest against CAA and NRC is to combine the people of India. country. This emergence of a public sphere that reaches to those in need in times of #SOS, that pass on information to everyone in times of emergency and that keeps an eye on their mobile phones for every bit of information, that uploads protest videos and images makes this a watershed moment for today (Feminisminindia, 2020).

OBJECTIVES AND METHODS

The study aimed to explore the reasons and genesis behind hashtag #JusticeforSushantSinghRajputand also assess its outcomes. This was done to underst and the discourse that took place on twitter due to the death of Sushant Singh Rajput, a Bollywood actor. As far as Research Methodology is concerned, for the purpose of data collection, tweets on #JusticeforSushantSinghRajput that had at least 100 likes were considered and analysed as it was the most popular hashtag trending at that time. (Comments or retweets as a variable lacked consistency/uniformity. Also, repetitive tweets were ignored).Other lesser popular hashtags such as #BoycottKaranJohar, #karanjohargang, #cbiforsushant, and #justiceforssrwere not considered due lesser popularity and engagement.

The tweets were collected from 16th June, 2020 (date of Sushant's death) to 16thJuly, 2021. Later this data was analysed using Semantic Analysis as Twitter is mainly text centric platform along with option of sharing images, GIFs and videos.

DATA ANALYSIS AND INTERPRETATION

Once popular tweets on #JusticeforSushantSinghRajput were collected, the researcher conducted semantic analysis of the tweets to understand their tone, motive, underlying emotions, and appeal. On analysis of tweets, following themes were found common among the tweets and discussion threads:

Drawing parallel/ Making comparison/ sharing relevant anecdotes and memories- Many twitter accounts used Twitter to share their perspective on Sushant's death by sharing certain anecdotes or by making comparisons. One Twitter account titled in_jail_out_soon mentioned how Randeep Hooda another talented actor without any Godfather in Bollywood didn't get the required support or appreciation in the film industry. He did so by sharing an image that shows his drastic weight loss (transformation) of 20 kg within 27 days for Sarbjit film.(Likes-12.1K, Retweets-3K, Comments-244). A video titled "difference between star kids and self-made star" was shared by Aman Kumar Choudhary which showed comparison between how one of the Star kids (children of Bollywood actors) ignored her fans' request for a picture with her while Sushant interacted with them and even took selfies with them on their request. (Likes-6.4K, Retweets-1.7K, Comments-92). A user named Manisha shared screenshot of Ranvir Shorey an actor who pointed out to the nepotism in Bollywood through his tweets. He mentioned how award shows are biased as a Star kid while hosting an award show coincidently receives award from his parents who are both film actors. (Likes-2.9K, Retweets-818, Comments-57). One user the real surbhi posted an image that provided comparison on followers of self-made film actors and star kids. Twitter accounts of actors who earned reputation through their talent like Nawazuddin Siddiqui, Pankaj Tripathi, Rajkumar Rao, JaideepAhlawat, Manoj Bajpayee had lesser followers. On the other hand 'products of nepotism' such as Karan Johar, Alia Bhatt, Tiger Shroff, Arjun Kapoor and Janhvi Kapoor had way more followers on twitter. The user wrote a caption for this image that blamed the audience for choosing, preferring and liking star kids instead of talented actors. (Likes-1.2K, Retweets-533, Comments-80)

Venting anger/ frustration/ Backlash/ Anguish/ Disbelief- Many users were shocked or angered by what happened with Sushant and hence they expressed same through Social Media. One user named Aman saxena mocked the general public by asking them to shed their anger if it's temporary and would go away with time once they forget about the issue. He shared an image of another tweet that blamed and cursed the audience by calling them stupid for watching substandard films of Star kids like Baaghi and Judwaa 2 and making them earn 200 crores. (Discourse- wrong information as Judwa 2 didn't earn 200 crores). (Likes-9.4K, Retweets-2.6K, Comments-330). #WithPKTM shared a short clip of Sushant in which he is addressing the question of the interviewer by saying that in case if he doesn't get any films, he would act in a play instead or buy a 5D camera and shoot movie on his own. This video showed that he was an optimistic person who didn't easily give up. The user grievously asked Sushant why did he commit such an act as his words contradicted his actions. He speculated that he did this due to depression.(Likes-2.7K, Retweets-873, Comments-49)

Paying Homage/Tribute- While many users had paid tribute in form of poetry, sketch, image or video of Sushant, but these tweets didn't garner that much attention.One user named Piyushi Priyanshi paid tribute by sharing a sketch prepared by her of Sushant. (Likes-4K, Retweets-768, Comments-66).

Demand for Justice- One thing in common among all tweets was that every tweet supported and demanded justice for the late actor. For this they used the #JusticeforSushantSinghRajput. Their tweets had content that belonged to more

than one category stated by the researcher and hence categorised accordingly.

Call for Action/Appeal- Several users demanded speedy justice for Sushant and so apart from legal punishment for those involved in Sushant's death, they also asked netizens to show solidarity through symbolic gestures.One user accountnamed Wear A Mask demanded other tweeters to unfollow all the Bollywood actors/actress who are product of nepotism or support nepotism. He shared an image of Alia Bhatt's account data and showed how due to Sushant debacle people have already started unfollowing her twitter account. He asked others to follow the lead. (Likes-7.2K, Retweet-2.5K, Comments-431). Images of actors Akshay Kumar, Irrfan Khan, Manoj Bajpayee, Nawazuddin Siddiqui, Kangana Ranaut, Sushant Singh Rajput, Rajkumar Rao, Pankaj Tripathi and Ayushmann Khurrana were shared by user named Hypnotic along with caption hailing them as real talents. The user also wrote that he is proud that he is fan of these real talents and not actors who are product of nepotism.Also he appealed users to support these actors before situation becomes worse. (Likes-2.5K, Retweets-717, Comments-54). A twittererAkshay Kumar (parody) pointed out to the silliness of people boycotting films of Karan Johar and yet eagerly waiting and planning to watch film 'Raghuvanshi' starring Akshay Kumar when it is in fact being produced by Karan Johar. He also mentioned the #karanjohargang in his tweet which shows that he also believed in the theory that Karan Johar was responsible for the death of Sushant. (Likes-2.3K, Retweets-941, Comments-254)

Boycott/Protest- Not just symbolic protest, some users also demanded boycotting of certain celebrities who endorsed nepotism. One user named Designer Chandni Agarwal wrote that all should boycott Karan Johar with #BoycottKaranJohar. For this she shared a cropped image of an article as an evidence that stated how Karan Johar didn't give "Outsider"(actors who don't have a godfather in Bollywood and create identity on their own) Ayushmann Khurrana role in his film even when he got confirmation from his production house-Dharma Productions. (Likes-2.8K, Retweets-1K, Comments-72). Another user named NIDHIII shared the same post along with #karanjohargang. (Likes-3.2K, Retweets-1K, Comments-193).

Praise/Reminiscence- Many users praised and recalled several incidents from life of Sushant to commemorate his kindness, intelligence, humbleness and talent. A user named Ashish Suna wrote how Sushant was a humble human being and unlike other celebrities who out of arrogance don't follow their fans or non-celebrities on twitter. (Likes-2.3K, Retweets-578, Comments-38). One person named Mahesh Aashiq mentioned that once he was followed by a fake account of Sushant. Later when he came to know that its fake, he shared his disappointment with real account of Sushant. In reply, Sushant actually started following him. The person also made speculation regarding death of the actor by using #karanjohargang. (Likes-6K, Retweets-1K, Comments-40). A user named Baishakhi posted a video of Kangana Ranaut, an actress who openly spoke against nepotism and support claims of fans that nepotism was the reason for the death of Sushant. She praised her for taking a stand during this Sushant incident and stated that she is proud of her outspoken and brave personality. The video clip was from "The Kapil Sharma Show" where the host asks Kangana on if any film personality should get Information and Broadcasting ministry who should it be? To which she took a dig at Karan Johar who runs the nexus of nepotism in Bollywood by saying that heshould be heading this ministry as he likes to gossip and has information on every person in film industry. The user felt that Kangana gave a befitting reply to those who support nepotism in the industry. (Likes-5.8K, Retweets-1.4K, Comments-112)

Conspiracy Theory/ Speculation/ Blaming/ Alleging- A lot of users peddled fake news and speculated about the circumstances under which Sushant died, but none of them shared any concrete fact or evidence and instead stated merely opinions. One person named Vijay Krishna tweeted that nepotism was the reason that didn't allow Sushant to get good opportunities in Bollywood and led him to commit suicide. He shared an image which shows that he got no awards even after giving successful films for several years and on the

other hand Ananya Pandey who was perceived as output of nepotism got 3 awards even when she is new to Bollywood. (Likes–1.8K, Retweet–933, Comments–84). One user account titled justice for Shushant singh rajpoot shared video of singer Abhijiton AajTak news channel speculating that nepotism was responsible for pushing Sushant towards suicide. The user asked followers to retweet the video so that "alleged Bollywood mafias" like Salim Khan, Salman Khan and Karan Johar should be exposed. In the video, the singer claimed that Bollywood is run by mafias who do not allow "outsider" to become successful. He gave example of Sharad Kapoor,Vivek Oberoi, andeven established actors like Govinda who became victim of Bollywood mafias bringing a decline in their career. He praised outsiders like Sushant and Kangana Ranaut for their talent and blamed Bollywood mafias like Mahesh Bhatt and Karan Johar for not giving Sushant due credit even when he gave three back-to-back hit films. He mentioned one instance as evidence where Alia Bhatt on Koffee with Karan show refused to acknowledge Sushant and said that she doesn't know any actor named Sushant. He felt that this nexus existed in singing industry as well and pushed well known singers RD Burman and Kishore Kumar into oblivion. (Likes–8.1K, Retweets–3.1K, Comments–272)

Another user named Prabhat Singh tweeted a scene from the film "3 Idiots" where the main character questions claim of police and university authorities who said that the student committed suicide. He feels that it is a murder blames the university's head for putting the student under tremendous pressure which made him take this extreme step. Same way even the twitter user felt that nepotism was the reason Sushant committed suicide. (Likes–2.8K, Retweets–987, Comments–46). Priyanka Chincholia blamed Karan Johar for killing Sushant whom she called a real talent. She tweeted screenshots of Facebook user named Swati Soni in support. In the post, Swati claimed that Bollywood nepotism gang killed Sushant. She gave various instances as evidence. On one instance Kamal Khan had tweeted how Yash Raj Films, Sajid Nadiadwala, Salman Khan, Balaji Films, Karan Johar, Dinesh Vijayan, Sanjay Leela Bhansali and T-Series had boycotted Sushant and he may have to return to TV industry. She further mentioned that Karan Johar is monster and a vicious bully. Also she wrote that Bollywood industry doesn't give fair chance to talented actors and instead goes for favouritism. She said that Sushant was intelligent and well-read unlike school drop outs such as Karan Johar, Alia Bhatt etc who trolled, ragged and bullied him. She accused Karan Johar of killing Sushant's career by making film Drive which was super flop. He was oppressed as he had refused few films of YRF and chose to act in Shekhar Kapoor film. She felt that the nepotism gang started rumours about him being arrogant and short tempered so that nobody works with him. He even dropped "Rajput" (an upper caste) from his surname to please Sanjay Leela Bhansali. She pointed out how Sushant had begged his fans on Social Media to watch his film Sonchi riya otherwise he will run out of job. (Likes–2.5K, Retweets–1K, Comments–89)

A twitter user Foodhunter shared a video where a person (probably a Forensic Expert) was explaining that Suhsant's suicide theory is wrong and he was strangled and suffocated to death. To explain this, he showed the post-mortem images of Sushant where on his neck there were regular and circular mark which only come when someone is strangulated and not when someone tries to hangs self. The person in video claimed that he is not blaming someone and just want answers to what he observed. The user tagged Roopa Ganguly, Payal Rohatgi, Kangana Ranaut, Shekhar Kapoor, and Shekhar Suman who were very vocal about Sushant's death and felt that there was a conspiracy. Also he demanded justice by using #cbiforsushant, #FIRForSuhantUnder302, #CBIEnquiryForSSR, and #BeFairInSSRMurderCase.

Expressing Hope- Apart from widespread negativity related with the movement and online discussions, few users instead of mocking, trolling or blaming someone, focused on pointing out that the kind soul of Suhsant has already departed and

hence all must focus preparing an environment that doesn't allow such things to happen again.One user named Varsha demanded for change by posting quote of a film "Super 30" which meant that only those who deserve will get the opportunity indirectly referring to the debate of nepotism and how it pressurized Sushant to take his own life. (Likes–3.3K, Retweet–942, Comments–51). Pointing out to the similarity between deaths of actors Kunal Singh of Kollywood (in 2008), Uday Kiran of Tollywood (in 2014) and Sushant Singh from Bollywood in 2020, a twitter useryellaAkhil wrote that these young talents without any godfather in the film industry became successful and inspired many people but ultimately went away too soon due to depression. He expressed hope that such incidents won't repeat in future and urged all to be kind to each other and not hurt anyone. The tweet didn't blame his suicide on anyone. (Likes–2.2K, Retweets–660, Comments–37)

CONCLUSION AND DISCUSSION

The researcher conducted this study to understand Internet Justice as a phenomenon. For this purpose, the researcher chose death of a budding Bollywood actor Sushant Singh Rajput to assess Internet Justice that arose due to the fans, common people's and celebrities' demand for finding out the real culprit behind his death. While some alleged that his girlfriend incited him to commit suicide while others said that he was strangulated to death by his servants and girlfriend. Many users also blamed his death on Bollywood bigwigs who had created a nexus that didn't allow talented outsiders to get opportunity to act in films.

To understand this issue further, the researcher analysed the tweets on Twitter related to hashtag #JusticeforSushantSinghRajput that was trending due to netizens urging government and police to take action, find the cause behind Sushant's death and provide justice to his family. This was the original reason for which this hashtag was started. But later it spiralled into several other dimensions as well. Some users tweeted on how several other outsiders such as RandeepHooda, RanvirShorey also faced discrimination and didn't get much appreciation due to Bollywood mafias (celebrities from Bollywood who are highly influential and powerful) such as Karan Johar, Mahesh Bhatt etc.

For some twitter users, it was a shock that an actor like Sushant who was jolly and very enthusiastic in nature would take such extreme step. Few twitter accounts expressed their anguish by blaming and calling out Bollywood mafias and even audience for watching films of actors who are a product of nepotism. There were only a few popular tweets that were related to paying tribute. Many tweets were also discussing how Sushant as a person was humble and kind by narrating instances from his life or by sharing his videos. A group of users were also expressing hope that such incidents shouldn't be happening in future and that it is high time that people start appreciating and supporting real talents.

A vast number of tweets were demanding some actions to be taken so as to avenge Sushant's death. A few users suggested that the Social Media users should unfollow Bollywood celebrities who are product of nepotism or support nepotism. Some users asked all twitter users to boycott films of Karan Johar. A major portion of the webpage on #JusticeforSushantSinghRajputwas dedicated to blaming Bollywood mafias and Sushant's girlfriend Rhea Chakraborty (obviously baseless allegations with little evidence). Apart from calling out the names of Bollywood celebrities who were perceived responsible for Sushant's death, they also asked people to boycott them and their work. In such tweets there were heated discussions and debates on nepotism, depression, Bollywood mafias/nexus, outsider vs insider, dirty politics in the Bollywood film industry etc.

Overall, most of the tweets focused mainly on speculating Sushant's death, blaming someone for causing his death or demanding justice for the departed soul. As far as the consequences of the hashtag are concerned, there were several important outcomes that came out of this movement. The Sushant's fan trained their guns towards films of actors such as Alia Bhatt, Varun Dhawan, Sara Ali Khan, Sanjay Dutt and Aditya Roy Kapoor. That is why their film trailers on

YouTube received dislikes in huge amount. Also, it resulted in their films (Sadak 2 and Coolie No. 1) getting flopped. They even started unfollowing their Social Media accounts and urged other to also do the same. Apart from these ramifications, there were some positive outcomes as well such as CBI finally started investigating Sushant's death.But this can't be entirely attributed to the Internet Justice as television channels were also running this story day and night for couple of months. In the end it can be said with certainty that Internet Justice is here to stay, and there is need for rigorous research to understand its implications in the digital and real world and this research is one such humble attempt.

REFERENCES

- Alexander, L. (2018). Retributive Justice. In S. Olsaretti, The Oxford Handbook of Distributive Justice. Oxford. doi:DOI: 10.1093/oxfordhb/9780199645121.013.32
- Amit, S., & Tirosh, N. (2015). "Seek the meek, seek the just": Social media and socil justice. Telecommunications Policy.
- Azarian, B. (2017, December 6). 'Internet Justice' Actually Does Good, Potentially Saves Lives. United States. Retrieved from https://www.huffpost.com/entry/internet-justice-actually_b_8223268
- Chatterjee, P. (2020, April). The Internet Reacts To Hanging Of Nirbhaya Rapists At Tihar Jail. Retrieved from https://in.mashable.com/culture/12379/the-internet-reacts-to-hanging-of-nirbhaya-rapists-at-tihar-jail
- Deepak Maheshwari, P. K. (2020, September 16). 5 cases in 25 years of Internet that changed how India logs online. India. Retrieved from https://theprint.in/opinion/5-cases-in-25-years-of-internet-that-changed-how-india-logs-online/503621/
- desk, T. H. (2017, May 07). After Nirbhaya: the rape cases that shook the nation. India. Retrieved from https://www.thehindu.com/news/national/after-nirbhaya-the-rape-cases-that-shook-india/article18404268.ece
- Donaldson, D. (2002). Utilitarianism and the theory of justice. Handbook of Social Choice and Welfare.
- Feminisminindia. (2020, 01 05). How has social media helped organise protests against CAA. Retrieved from Feminisminindia: https://feminisminindia.com/2020/01/15/social-media-protests-against-caa/
- Greijdanus, H., Fernandes, C. A., Turner-Zwinkels, F., Honari, A., Roos, C. A., Rosenbusch, H., & Postmes, T. (2020, 03 21). The psychology of online activism and social movements: relations between online and offline collective action. ScienceDirect. doi:doi.org/10.1016/j.copsyc.2020.03.003
- Greijdanus, H., Fernandes, C. A., Turner-Zwinkels, F., Honari, A., Roos, C. A., Rosenbusch, H., & Postmes1, T. (2020). Science Direct.
- Hamilton, M. (2021). Restortive Justice. Environmental Crime and Restorative Justice, Justice as Meaningful Involvement.

- Leon, H. (2019, May 31). How Internet Mob Justice Can Easily Destroy Innocent Lives. New York, New York, United States. Retrieved from https://observer.com/2019/05/internet-mob-justice-innocent-lives/
- Mihr, A. (2016). CYBER JUSTICE: CYBER GOVERNANCE THROUGH HUMAN RIGHTS AND A RULE OF LAW IN THE INTERNET. US-China L. Rev., 314-336. doi:10.17265/1548-6605/2016.04.002
- Rawls, J. (1971). The theory of Justice. USA: Harvard University Press.
- Reid, A., & Sehl, K. (2020, 07 07). Genuine Social Media Activism. Retrieved 02 07, 2021, from Hootsuite: https://blog.hootsuite.com/social-media-activism/
- Rosenblatt, K. (2020, 09 26). A summer of digital protest. Retrieved 02 06, 2021, from www.nbcnews.com: https://www.nbcnews.com/news/us-news/summer-digital-protest-how-2020-became-summer-activism-both-online-n1241001
- Sabbagh, C., & Schmitt, M. (2016). Handbook of Social Justice Theory and Research. New York: Springer.
- Thomson, K. (2013, 09 06). youth, justice and social medi activism. (T. U. Peacebuilders, Producer) Retrieved 01 25, 2021, from youth policy: https://www.youthpolicy.org/blog/internet-governance/youth-justice-and-social-media-activism/
- Tschentscher, A. (2019). The Function of Procedural Justice in Theories of Justice. In Procedural Justice. doi:DOI: 10.4324/9780429444524-5
- Zhu, K. (2020, October 23). From posts to protests: Hoe social media makes social justice accessible. Retrieved 02 06, 2021, from www.eyeopener.com: (https://theeyeopener.com/category/covid-19/)

A Narrative Analysis of the Amazon Prime Original Web Series "PAATAL LOK"

*** Dr.C.Sriram,**
**** Dr. V. Mohanasundaram**

Abstract: A critical look on the Amazon Prime Original Web Series "Paatal Lok", directed by Avinash Arun and Prosit Roy in 2020 gave the impression that it used some or all the principles of narrative construction postulated by Vladimir Propp in the realm of functions and categories of personae. A structural analysis of the content and communication channels peculiar to the art of cinema like sound and images has been effectively carried out and the results were discussed in this paper.The success factors of the PaatalLok web series were constructed using this analysis and such studies will greatly help the online entertainment platforms in future.

Keywords: PaatalLok, Propp's functions, Structural analysis and Communication channels.

INTRODUCTION

In any medium, a narrative is considered as a chain of events occurring in time and space and linked by causes and effects. The basic principle of the commercial cinema is that a narrative should consist of a chain that is easy for the spectator to follow. Narrative is a way of interpreting the world around us. In other words, it is a kind of "rewording of circumstances."Principles of narrative analysis were shown in Vladimir Propp's famous study, Morphology of the Folktales. In Morphology of the Folktales, first published in 1928, Vladimir Propp (1985) analyzed hundreds of Russian fairy folktales and then compiled a list of thirty-one functions and seven categories of characters. He found that these thirty-one functions of characters remained unchanged in all folktales. These thirty-one functions and seven categories contain theory-based representations for precise narrative analysis.

FOCUS

This case study is about the Amazon Prime Original web series "Paatal Lok" (2020) directed by Avinash Arun and Prosit Roy. The motive of the present analysis has been to find out there exists any relation between Propp's narrative units and the syntagmatic formation of "Paatal Lok" (2020). Syntagmatic analysis studies the surface structure of a text. The researcher can explore common elements of traditional fairy tales and character structure in this web series. A comparison between fairy elements and filmic elements has been made according to structural narrative analysis methods.

REVIEW OF LITERATURE

Film is a narrative and uses some or all the principles of narrative construction borrowed from Propp's functions and categories of personae. In a formal system during brief analysis, issues such as how the narrative in a movie is constructed and how the meaning is built will be addressed via a structural analysis of the content and communication channels(Parsa, 2004).

Deep Audience Analysis platform claims to analyse 'thousands of key story elements of a script, outline, finished cut, or trailer to visualize the audience involvement. This analysis is

*Assistant Professor, P.G. Department of Journalism & Communication,
Dwaraka Doss Goverdhan Doss Vaishnav College, Chennai
**Associate Professor and Head, Department of Economics (SF),
PSG College of Arts & Science, Coimbatore

conducted in a matter of hours and produces results that are able to shape the creative development and on-set production (Frohlick, 2020). The formal consistency of scriptwriting is an important factor to consider in Artificial Intelligence (AI) innovation. While denoting its content using AI tools with clear indications of factors such as location, character, dialogue, and action, it becomes anaccessible entry point into analyzing and generating new original texts.

During the lockdown period, faster broadband, cheaper smart TV sets and proliferation of video streaming services had an impact on the film industry in general and multiplexes in particular. Digital releases greatly helped the filmmakers in the time of lockdown (Patel, Khaida, & Awasya, 2020).

Popular movies are often found to be bemoaned. With derogation and an occasional sneer, they are said to be formulaic. Movies shouldn't be looked down upon at all times. As a story form they can be fine art, emotionally absorbing, thought provoking, educational, and entertaining.Movies can even be thought of as a kind of mind candy; here theory-of-mind is effectively applied to predict and find out what characters think (Cutting, 2016).In this context, as pointed out by Khanna & Malviya, 2020, the social media played a vital role in the promotion of Mirzapur; cultural influence and cast factor among respondents also improved the viewership. The most influential element of this web series was the appealing storyline. Also, creative story with extraordinary production and cast also paved the way for Mirzapur's success among the audience.

Gaps in the literature are quite evident because while conducting an extensive literature search, broad range of research articles are not found; there is a lack of studies in this research area and hence it is important to address this research gap.

METHODOLOGY

Narrative Analysis, as a methodology, stresses that each element within a creative system derives its meaning from its relations to every other element in the system. Narratology or narrative theory focuses on the structural units in any kind of visual work. In this paper, Narrative Analysis concentrates on the interaction between the various characters of the 'Paatal Lok' web Series. It distinguishes structural elements as story outline and plot structure, the spheres of action commanded by different characters, the way narrative information is channeled and controlled through point-of-view, and the relationship of the narrator to the inhabitants and events unfolding in the screenplay. Thus, this 'structuralism' approach completes the narrative analysis.

DATA

Reviews are collected from the respondents and are used for narrative analysis.Out of ten respondents,selected using convenience sampling method, four are females and six are males. The respondents are interviewed over phone and word-for-word excerpts taken from interviews formed the basis for analysis.

ANALYSIS

While conducting qualitative surveys to get sentimental reviews on any video content, high quality responses are key to generating powerful insights and data-driven narrative ideas. Below,the responses were brought in the form of a table so as to make it brief and clear.

Table 1 Responses of Selected Respondents on the Web Series "Paatal Lok"

R	M/F	Designation	Response / Observations
1	Male	Media student	"This web series is made on a low budget; this crime thriller had people on the edge of their seats. The characterization of Hathi Ram, the lead character, has been done extremely well. The element of surprise is maintained throughout the story till the dying end".
2	Female	Costume designer	"There is a steady momentum; an unmistakable sense of force underlining the craft in Paatal Lok, from the cinematography to the acting to the atmospherics. But what struck me the most is the propulsion in the narrative as it forges ahead from episode to episode to become an installation; a pile up of shameful inequities and accompanying exploitation is quite evident in the screenplay; the barbarity reaches a crescendo and it leaves you gutted".
3	Male	Graphic designer	"The media manipulation element has been well explained in this web series; 'about media playing with the minds of the people' – that idea has been visually explored to the core".
4	Female	House wife	"Gripping from start to end; simply wow! Every single event that's been shown in this web series has been happening in our country for a very long time – from caste discrimination to islamophobia and how political parties use these against the people; the symbolism of Paatal Lok, Dharti lok and Swarg lok are deeply enrooted in our society. Dual faces of media, unconditional love, fear, courage, freedom, father-son relationship are mind boggling".
5	Female	Choreographer	"Paatal Lok is what gives the word 'Binge-watching' it's meaning! The title was a bit delusional for me, never really indicating what was in store for the viewers; the star cast also did not inspire much confidence; very rarely do you see a story or a screenplay that defines and gives relevance to each character and that happens because of the making and the tight screenplay".

6	Female	Nursing graduate	Her views about this web series are manifold. Librandus, she says, want a world where they want pujaris of the mandirs shout from the loudspeakers giving non-believers three options – convert, flee leaving their women behind or die. They want Sanatanis to blow themselves up, pelt stones on non-believers and forces, spit on medicos when they go to help them, lynch innocents, blast maternity wards of hospitals, killing newborns, gun down kids and go on hijacking their schools. The Sanatanis have their own opinion about women and oppressing them is also in their agenda, not giving them a single right or freedom, torture them day and night, use and throw them, get them raped by their own male members in the name of accepting them back, make them give birth to many kids, commit polygamy and all sorts of atrocities.
7	Male	Assistant cinematographer	"This is indeed a remarkable web series made by Indian film makers! A well knitted storyline, impressive acting, best cinematography, impeccable editing and flawless direction. I love the camera movement and composition; character portrayal is just superb and convincing; also interesting texture added to the storyline and of course, it is like the ace of spades".
8	Male	Assistant director	"I'm not a big fan of crime thriller genre; all my friends suggested me to watch 'Paatal Lok' but I thought this is such an overrated series. After watching, my perception got changed and I too liked this web series very much; now – a-days, intros and theme songs have always dominated but over here, I didn't like the theme music; in that part, I feel, there is something lagging behind".
9	Male	Automobile engineer	"I feel, this web series is spoiling our country's reputation; the scenes and actions in this web series are objectionable and they corrupt our thoughts; vulgar language usage is definitely annoying".
10	Male	Mechanical engineer	"Paatal Lok is definitely one of the best in the business; it is known for its compact and powerful screenplay; indeed a
			binge worthy content on the whole. The way the director has shown the timeline for each and every character is highly impressive; flashbacks have been effectively used in this web series".
			binge worthy content on the whole. The way the director has shown the timeline for each and every character is highly impressive; flashbacks have been effectively used in this web series".

NARRATIVE FUNCTIONS

Preparation

- The hero is a cop and he lives a timid life
- The hero has been given a high-profile case
- An assassination attempt has been made on a reputed journalist
- A team of cops arrest four criminals
- The hero gains lots of attention because of this high-profile case
- The hero gets an opportunity in his life to prove himself to the world
- The bitter truth is revealed in the end after thorough investigation

COMPLICATION

- The main villain is ruthless with his cold emotionless eyes
- The villain kills people with a menacing stare in an unorthodox manner
- The media world's hypocrisy is hurting the common man
- Gangsters and goons rule the roost
- Blood thirsty saffron mobs kill people in the name of religion
- The villain kills people with no remorse

TRANSFERENCE

The Hero

- is determined to solve the high-profile case
- uses this high-profile case to redeem his career
- starts the investigation in an orderly manner
- experiences the bitter taste of this murderous world
- begins his journey to the darkest corridors of the crime world
- discovers in his journey that criminals do have a gentle human touch.

STRUGGLE

The Hero

- finds the truth about the residents of Paatallok
- learns about the plight of journalism in India
- learns about the politics of the country
- gets to know about the kind-hearted criminals in the end

RETURN

The Hero

- finds out that all that glitters is not gold
- faces the problems of a typical middle – class family
- shows that his bravery is a win for middleclass
- teaches a simple lesson to the crooked media world
- solves the case but gains no recognition
- is a thoroughly satisfied man in the end

RECOGNITION

The Hero

- discovers the political reality
- learns about the management issues in a police department
- adopts to the world which is too wounded and broken
- sees that the villain experiences a glorified death in the end
- knows the answer to the harsh realities of

life

Vladimir Propp: Theory and Postulates

A folklorist with an analytical mind, V.Propp(1894 – 1970) of Russia theorized that stories are character driven and that plotsdevelop from the actions and decisions of characters. After adopting the method of Structural analysis, Propp postulated that there were 31 different "functions", which formed the basic components to the narrative structure of the tale. To highlight these postulates, a small table is prepared and given here,

Table 2 Description of Fairytale Heroes by Vladimir Propp

Character Role	Sphere of Action
Villain	Vicious murderer, elicits dread and curiosity
Donor (Provider)	Gives a chance and helps in crucial realization
Helper	Young and aspiring and brings upward mobility to the story
Father Figure	Enlightens people and shows the way forward
The Dispatcher	Always maintaining his dignity but has some acceptance
The Hero	Excels and completes his journey
The False Hero	Looks like ever dependable but floats along with the tide

Narrative Analysis of "PAATAL LOK"

To test empirically the view pointthat every narrative has five different phases (Klran & Klran, 2003, pp. 21–22), an examination was done on the web series "Paatal Lok", and the observations were given one by one

1. **The Outset**

It is the part when the characters, space and time are introduced just before the disturbance of the established setting. The opening sequence manifesting the characters and the setting lasts 15 minutes in the first episode of the web series.Divided into nine episodes, of around 45 minutes each, Paatal Lok intends to unfold like an epic – a story capturing India's messy, contradictory realities. The show's ambitious structure finds ample support in its characters. There's the elite liberal India in Sanjeev. Hathiram represents the simmering, discontented middle-class. His colleague Imran Ansari (Ishwak Singh), a young cop aspiring to be an IAS officer, symbolises the story of imminent success. Hathi's boss, the Station House Officer Virk (Anurag Arora), and DCP Bhagat, portray the hierarchial constraints in Indian police. The final pieces in the puzzle are the four perpetrators: Tope Singh (Jagjeet Sandhu), a lower caste man from a Punjab village; Kabir M. (Aasif Khan), a Muslim from Chandni Chowk; Mary Lyngdoh or "Cheeni" (Mairembam Ronaldo Singh), a transwoman; and Vishal Tyagi (Abhishek Banerjee), a serial killer from Bundelkhand. Their identities shape their destiny and land them in a Delhi lockup.

2. **Transforming Element**

Paatal Lok cuts to a flashback and shows Tope Singh's backstory. He is a boy bullied because of his caste who, overwhelmed with rage, murders his tormenters. From that point, the show becomes interesting;it becomes a feast of layers, one clinging to the other, revealing newer facets and meanings. The petty power struggles in the police station, especially between Virk and Hathi, reveals the inherent cannibalism of the Indian middle-class. Moreover, in the stories of Tope, Tyagi, Kabir and Cheeni, one can see a ravaged India; under such circumstances people are consumed and destroyed for no fault of theirs; also they consume and destroy others.Hathiram's contentious relationship with his father had a significant impact on his relationship with his son; later, Hathiram made changes at home to find a better work-life balance; he also made some family-friendly work arrangements and only then he started getting the much deserved love and respect from his son. A transforming element of this narrative is the power struggles in the police organization and management. The Hero pretends to fit into the corrupt system but unfortunately, he is pushed to his limits.

3. **Set of Actions**

Things develop quickly. A progressing set of action forms the action part that serves as the development part connecting the introduction and

the conclusion. Meanwhile, some other crises are involved which come out as conflicts between the hero and himself, the Hero and another group, the Hero and a natural force or the Hero and social values (Miller, 1993). Such crises and conflicts are used in the development part of the film quite frequently.

Ahlawat plays a tireless cop and finally finds his purpose to reclaim his dignity. His character 'Hathi Ram Chaudhary' is an intriguing mix; he is someone with credible weariness and enough curiosity; to be more precise, he is an in-betweener caught in a storm of grief and stranded between bargaining and acceptance.Banerjee, playing a vicious murderer, is equally impressive. 'Vishal Tyagi'character is present in all the nine episodes and barely speaks throughout the series. All he gets is a menacing stare, some wild swings with a hammer, and a freedom to occupy the frame throughout this web series. These restrictions usually result in a formulaic villain but Banerjee, playing Tyagi, effortlessly excels; hischaracter unblocks curiosity and builds creativity.Prime-time Hero Sanjeev Mehra is a reputed journalist; he survives an assassination attempt. That incident tells the audience just about everything and sets up the tone and genre of this series beautifully.

4. Balancing and Organizing Elements

In the end, Hathi completes his journey, but it is not quite enough in a rapidly changing world. In Paatal Lok, the world is too wounded, too broken, to be pieced together. The Hero took the long road and walked it and found out that the reality is bound by a series of competing elements. As Hathi lobs his stick of ice cream to a stray dog in the last scene, his face remains impassive, but he knows the perfect answer to the perfect question.All the characters in the series are picked out of the everyday life in the neighbourhood and hence they look immensely realistic. Each of these characters is given a convincing backstory and none of it looks artificial. The beauty of the series also lies in the best performance of all the characters.

5. Conclusion

It all turns back to the initial setting or completely new setting appears. In this phase, things are counterbalanced, crises are dissolved and there are no open-ended crises at the end. Abhishek Banerjee as Vishal AKA Hathoda Tyagi is chilling; he has cold, emotionless eyes and that does the trick in most parts. Gul Panag is a delight to see on screen as the wife of Hathiram. Panag is torn between her duty towards her husband and son, and also dealing with her fraud of a brother in a comical way.Vipin Sharma, Jagjeet Sandhu, Niharika Lyra Dutt, Aasif Khan all play their parts believably. Above all of this, the story of Paatal Lok is well-written. Most of the scenes are shot in a glitzy newsroom and in the bylanes of Punjab, they all look so real on screen. In the end, this is the kind of web series that encourages meaningful engagement and indicates narrative planning.

The Paradigmatic Approach of "Paatal Lok"

The paradigmatic approach is rooted in Claude Lévi-Strauss (1966) structuralist works and analyses binary oppositions included in the narrative and their contributions to the development of the story. Lévi-Strauss was mainly interested in the relation between myths and societyand for him myths are coded messages that societies produce for their members, which exist in the deep structure of narratives. It is the job of the researcher to unpack or reveal these messages hidden in deep structure (Hansen et. al., 1998). Such a listing contributes to the analysis of myths, ideologies and point of views included in the text and identification of common themes. Finding out the central oppositions serving to the construction of narrative structure helps to set forth the meaning of the film.

Paradigmatic structure in "Paatal Lok" is based on such binary oppositions as given in table 3.

Table 3 Binary Oppositions in "Paatal Lok"

These central oppositions have been built within the narrative structure in this web series. Paradigmatic analysis mainly concentrates on a

Woman	Man
Violence	Peace
Lower caste	Upper caste
Right	Wrong
Minority	Majority
High society	Low society
Believable	Unbelievable
Secular	Religious
Selective	Unselective
Vermin	Gentleman

series of opposing models in the discourse. Specifying such oppositions used in various media discourses facilitates to interpret different connotations, that is, the substance of the text. What the web series "Paatal Lok" brings into mind in an ideological perspective can be itemized as follows:

- The Elite Liberal is obsessed with dominating the simmering, discontented middleclass,
- The flow and control of power in Police Administration is complex,
- People are consumed and destroyed for no fault of theirs so they, in turn, consume and destroy others,
- Religious bigotry and casual discrimination are routinely seen inside the Police Force,
- The world is too wounded and too broken to be pieced together.

The Syntagmatic Approach and Narrative Functions in "Paatal Lok"

Function and deed in a narrative is a suggestive action of a character in the course of events. Organization of these events is crucially significant in order to grasp the inherent meaning of the text. The functions of characters, their missions and their range of operation are confined. Propp (1985) depicted 31 basic functions, virtually unchanged in syntagmatic analysis of fairytales and scheduled them in six main categories in 'Narrative Functions' segment. According to Propp, not all narratives necessarily convey these functions, but if they do, they are composed of those listed in 'Narrative Functions' segment.

These narrative functions have yielded the results (Table 4) when applied to the case study, "PaatalLok".

Function No	Description of the Function	Narrative in "Paatal Lok"
0	Outset	The characters and the set of circumstances are introduced and then the main story line is presented to the audience briefly.
1	Departure	Illustrating that Hathi Ram Chaudhary brings about possible favorable changes in his cop life when he is given a high-profile case.
2 & 3	Prohibitions and violation of prohibitions	Hathiram Chaudhary was a small-time down-and-out police inspector. Hathiram's father left him with an ugly past and his wife mentions about that all the time whenever there is a fight. Finally, he gets a high-profile case and this case holds the potential to give Hathiram a ticket to Dharti lok with the occasional peek into Swarg Lok.
4	Hero under investigation	Inspector Hathiram begins his investigation that takes him to the dangerous scenarios of crime world. Later, he is under informal investigation and facing political pressure.
5	Gathering information	Hathiram Chaudhary gets the biggest case of his life. He jumps headfirst into the case and investigates the attempted assassination of a prominent journalist.
6		The protagonist looks at the dark past of two suspects, Vishal "Hatauda" Tyagi (Abhishek Banerjee) in Chitrakoot and Tope Singh (Jagjeet Sandhu) in Punjab. He has to breathe again for continuing with the onward journey into the heart of darkness.
7		Hathiram Chaudhary was fighting unsympathetic seniors at work and in the middle of it, the effects of frustration in him was clearly visible and that was affecting his family members indirectly.
8 & 8A		According to Propp (1985), a fairytale is stirred up after this function. The cynical Inspector Hathi Ram Chaudhury gives a rambling lecture on the irredeemable nature of human beings. He tells, the world is divided into three realms; the 'Svarg Lok' (Heaven), is the place for the Gods to reside; in the middle there is the 'Dharti Lok', which is where normal human beings reside; and at the bottom is the 'Paatal Lok'; this is the hell from which vermin occasionally escape and wreak havoc above. He starts doing something special in his life by investigating a high-profile case.
9	Mediation or Transition	Hathi Ram Chaudhary is a cog in the well - oiled system that is the 'Indian Administrative System' but he has to pay a heavy price for it. However, he tries to extract the best out of him while dealing with this situation.
10		The primary antagonist Hathoda Tyagi is apprehended by inspector Hathi Ram. Later, he comes to realize that the man he caught was the infamous serial killer. Afterward, the counteraction starts.
11,12,13,14 &15		Propp (1985) underlines the Hero being supplied with a magical object and then dispatched to the mission. In the web series, spatial changes or transference do exist as the Hero is travelling from one place to another to understand the wickedness of the Paatal Lok. Hathi Ram Chaudhary infiltrates into the criminal universe with the help of his colleague Imran Ansari. Disparities are part of the day-to-day reality in the dark mafia world; later he finds far more lowly things in his treacherous journey. Here, the lineage of functions has changed but this is what Propp already predicted (1985, p. 112).
16		Inspector Hathi Ram has always been fighting the unsympathetic seniors at work and in the middle of it all trying to find a larger meaning and direction in life; later he comes to know about the dark past of two suspects, Vishal "Hatauda" Tyagi (Abhishek Banerjee) in Chitrakoot and Tope Singh (Jagjeet Sandhu) in Punjab.
17		Gul Panag is the wife of Hathiram. Panag has always been a pillar of support and strength for her husband; as a housewife she is very particular about her duty towards her husband and sometimes she has to deal with fraud of a brother in her own way.
18&19	Victory and completing lack	Hathi Ram Chaudhary is posted at the 'Outer Jamuna Paar' police station. It is indeed a punishment posting for him and his career is always filled with relegation and regret. But then, Hathoda Tyagi presents him with the biggest case of his life. He considered it as a sign from above; then immediately Hathi Ram jumps headfirst into the case, about the attempted assassination of a prominent journalist and thus completes the lack in function, 8a.
20		Hathi Ram Chaudhary enters the badlands of Uttar Pradesh and he is magnificent in fighting the bad guys. However, such a spatial change is not under consideration.
21		Hathi Ram Chaudhary floats along with the tide during the investigation; later fate pushes him into scary scenarios.
22		Gul Panag has always been loyal to her husband Hathi Ram; his professional life is extremely stressful and so she provides emotional support to him all the time.
23		According to Propp (1985), in this function the Hero arrives home or elsewhere. Hathi Ram Chaudhary perfectly understands the wickedness of the senior police officials; later he embarks on an unsafe journey into the crime world to unravel the truth.
24		According to Propp (1985), in this function the Hero arrives home or elsewhere. Hathi Ram Chaudhary perfectly understands the wickedness of the senior police officials; later he embarks on an unsafe journey into the crime world to unravel the truth.
25		The Hero takes on a hard mission. During the investigation, Hathi Ram Chaudhary is caught in the wheel of exploitation. As he digs deep into the case, the unseemly network of crime and corruption gets wider; also layers of bitter truths keep emerging before plumbing to the depths.
26		After finding the truth, Hathi Ram Chaudhary is totally weighed down and worn out. From insecurities, power play and politics within the cop world, to the corporatization of media, Hathi Ram has seen a lot; in the guise of crime and investigation he finds the dark truth, in a complex, intricate way. As Hathi lobs his stick of ice cream to a stray dog in the last scene, his face remains impassive, but he knows the reality.
27		Hathi Ram Chaudhary is buried under the burden of his profession but he uses his identity cleverly to extract the best out of himself in the end.
28		The villainy of the prime suspect Hathoda Tyagi is apparent from the beginning.
29		That reformation function does not exist.
30		For Hathi Ram, things feel frustrating and directionless because his life puts too much on his own plate. The pent up prejudices against the neo-middle class do exist in the society but in the end, he comes in to terms with it in his own unique way.
31	Happy Conclusion	This function is a sign of a happy conclusion. Hathi Ram Chaudhary, with his sing-song Haryanvi accent and his weary body language, does something special during the course of the investigation. He intensely explores Indian immorality through this high-profile case; at the same time, he also celebrates its ingenuity in his own unique way.

Table 4 Narrative Functions of Propp and the case of "Paatal Lok"

EVALUATION

PaatalLok is a busy show and its characters have intricate innerlives.This web series is telling a taut story and the show is astutely political.The petty power struggle in the police stationreveals the inherent cannibalism of the Indian middle-class. The first half of the web series has enough curiosity in it and it is narrative in nature, the second half is political in nature. It's this seamless blend that makes the series remarkable.The narrative structure of the web series, its theme and plot are identical with the principles of art of drama derived from Ancient Greece. This is"A satire emerging from tragedy" and it is making use of the same classical tragicomedy style to enrich the action scenes. In this age of instant hysteria and unending anger, the makers of this web series explain two vital truths about human life: true empathy is never selective and context is required to understand and judge anything bigger than it self. From the plight of journalism to the world of dirty politics, from fancy bungalows in posh areas with power-crazy social animals within them to the lanes of rural India where caste-based politics is extreme, Paatal Lok covers quite a bit of Indian daily life, in a remarkable way.

CONCLUSION

The pent-up prejudices against Muslims, the dehumanization of the lower castes and the rage and angst of the have-nots against the haves are in consonance with the essential pulse of the series. Also, this web series perfectly captures the unique brand of justice of the Delhi Police; what unfolds later is a classic noir story, populated by morally reprehensible characters, the city is in need of saving, and corruption has gone all the way to the top and inspector Hathi Ram Chaudhary has fully realized it.As a hinterland crime story, the show reveals shocking layers underneath rotting layers and finally, PaatalLok truly comes into its own when it veers off the beaten track.

REFERENCES :

- Allen, R. C. (1992) Channels of Discourse Reassembled (2. Ed.). Chapel Hill: North Caroline University Press.
- Cutting, J. E. (2016). Narrative theory and the dynamics of popular movies. Psychon Bull Rev , 1-32.
- Frohlick, A. (2020). Artificial Intelligence and Contemporary Film Production: A Preliminary Survey. Goldsmiths , 1-27.
- Hansen, A., Cottle, S., Negrine, R., Newbold, C. (1998) Mass Communication Research Methods. London: Macmillan Press Ltd.
- Khanna, P., & Malviya, M. (2020). Identification of Success Factors for Mirzapur Web Series. Shanlax International Journal of Management , 21–27.
- Kıran, A., & Kıran, Z. (2003) Yazınsal Okuma SÜreÇleri. Ankara: SeÇkin Yayıncılık.
- Lévi-Strauss, C. (1966) The Savage Mind London: Weidenfeld & Nicolson.
- Miller, W. (1993) Senaryo Yazımı, EskiŞehir: Anadolu Üniversitesi Yayınları, No: 733.
- Parsa, A. F. (2004). A Narrative Analysis Of The Film, "Titanic". International Visual Literacy Association Publication , 207-215.
- Patel, M. K., Khaida, R., & Awasya, D. G. (2020). A Study: OTT Viewership in "Lockdown" and Viewer's Dynamic Watching Experience. International Journal on Transformations of Media, Journalism & Mass Communication , 10-22.
- Propp, V. (1985) Masalın BiÇimbilimi. İstanbul: Bfs Yayınları.
- Turner, G. (1993) Film as Social Practice (2. Ed.). London and New York: Routledge.
- Wright, W. (1975) Sixguns and Society, A Structural Study of the Western. Berkeley: University of California Press.
- Zoonen, Liesbet Van, and Dominic Wring. "Trends in Political Television Fiction in the UK:
- Themes, Characters and Narratives, 1965- 2009." Media, Culture & Society, vol. 34, no. 3, 2012, pp. 263-279.

Environmental representation in Bollywood Movie: A Narrative Analysis of Movie "SHERNI"

*** Shweta Arya**

Abstract: Movies are not only source of leisure or entertainment, but a proven impactful medium, crafted with visuals and audio, along with other cinematic techniques. Visuals and Dialogues are important element of a film, through which the filmmaker narrates the story. Every film has a message. Whether it is made for pure entertainment or clubbed with some social message, while representing a particular phenomenon, issue, conflict, in form of story. This study is analysing representation of environment in the recently released movie "Sherni". The movie is selected for the study, purposively, because of its concept of environment conservationand shortlisted for Oscars as India's official entry in 2021. The study is based on Narrative Analysis approach, where a narration is used by humans to persuade, as described by Fischer. Because, the researcher is analysing the environmental representation, Ecosee and Ecospeak are used as theoretical concepts. Visuals and Dialogues are investigated to determines the environmental representation and messages being framed by the filmmaker. Alongwith this, the intermental and intramental images of the filmmaker about the narration has been determined by the media interview of Filmmaker published and chosen conveniently by the researcher, that fulfils the purpose of the study. The chosen media interview are selected from Indian express, Scroll.in, Tribune, First post at the time of writing this article. The study finds environmental representation in the movie in Dialogue and Cinematography explicitly.

Key Words: Environment, Ecosee, Ecospeak, Narrative analysis, Images.

1. INTRODUCTION

Bollywood is not only popular amongst Hindi speaking north but also in southern India, having its own charisma among overseas Indians and other nationalities across continents. It has a rich history of popular and critically acclaimed film makerscreated stories on various lines and themes. Shelton 1975, perceives significant benefit of film is its capacity to reach large audiences simultaneously or sequentially across time. A slew of identical release prints can be struck from a film's integrative, tangible end products that precisely repeat the message. Prints can be projected (or broadcast if broadcast on television) in a variety of locations, each time delivering the same message to new audiences. (However, not everyone will get the same message.) Alternatively, the message may be reinforced for repeat listeners. This is a powerful aspect in terms of overall audience manipulation.

Since last decade, Bollywood industry has been making subject oriented films which were generally lacked during 90s cinema. Apart from politics, action or romantic, the very recent subject oriented films like "Bala", "Shubh-Mangal-Savdhan", "lukka-chuppi","kahaani", "tumharisullu", "Queen", "Veere-de Wedding", questions the stereotyped conventions that are still being followed in Indian society and some are considered as taboo. The subjects like men baldness, live-in relationship, homosexual relationships, Women empowerment etc.,the transcendent aspect about these movies, is that these are purely commercial Bollywood cinema

* Research Scholar, Gautam Buddha University
Greater Noida, Uttar Pradesh

that includes all the element of a typical Hindi Bollywood masala on one side, and on other points to the various contemporary ills prevailing in society, while provides solution to it.

Environment and Nature, has always been part of Bollywood movies. But it is picturized more as a commodity rather than a subject. Beautiful landscapes in Karan Johar movies, picturization of songs specially cinematographed on scenic locations like mountains, oceans or Islands, though the story line has nothing to do with it, picturizing the nature with romantic gaze but not with the intention of informing the audience about the anthropogenic effect on these natural resources but to gain maximum on box office. According to Hansen & Machin (2008), television and other media increasingly decontextualize global, symbolic, and iconic images rather than those that are identifiable due to their geographic /historical or social/cultural grounding, that results into ignorance of global capitalism and consumerism affecting the nature. Corbett 2006, even though the natural environment remains in front and centre,the film isn't about nature per se unless it was made as a nature documentary. Though the contemporary generation of film makers are exploring wide range of subjects as mentioned above, environment and nature in their story lines is still far behind. however, there are films who had been awarded with National Film award in environmental category, but there is only one Hindi movie comes in the category, named Irada. Rest all other films are related to other regional languages.

Irada is a movie based on Industrial disaster and its effect on Environment and human life, along with all stake holders of the disaster and its impact. The political and Power games, Journalistic role, enquiryand victims of such disaster. Then there are films like Kadwi Hawa, Kaun Kitne paani mein, Jal, Aisa ye Jahan, whose subjects are purely based on various environmental issues, like water crises and its sustainable management, air–pollution, deforestation and development. Though these films are made by Bollywood filmmakers, but determining the star cast and budget these movies have the cast though popular but rather more critically acclaimed. The brand value of the star cast and budget in overall making of the film not only determines the success of the film but also its impact on audience. Selvaretnam and Yang (2015)star power does, in fact, have a significant beneficial impact on domestic box office revenue in Hollywood's motion picture industry.Elberse (2007) discovers that a star's presence in a film has a beneficial impact on its profitability; in fact, stars can be ₹worth₹ millions of dollars in revenue. In another study, authors Weyi et.al. (2013), found a positive correlation between the star power and movie consumption by the audience.

There is another section of films like Tum Mile, KedarNath, which have the casting with brand value but the story line undermines environmental issues. These films are based on true events of natural disasters. But the focus of narrative circulates around romance and relationships of lead characters being played by popular heroes and heroines. Hence, still there is a need to produce a film with all elements of Bollywood masala movies with the subject explicitly related to Environment and Nature. As Corbett 2006, states in movies where nature functions in the foreground, its prominent role is part of an ongoing cultural effort to interact with and better understand the natural world.

2. THEORETICAL FRAMEWORK

Ecosee: Ecosee is a rhetorical idea that elicits an electrified response to an image of the environment. Ecosee includes Ethos, Pathos, and Logos of rhetoric communication, just like Aristotle's idea of rhetoric. Images, rather than the reasoning formed by humans from the words, Ulmer claims, have an emotional impact. (Dobrin & Morey, 2009)

Ecospeak: Articulated first by Killingsworth and Palmer,is related to politics circulates towards the environmental issue, thus circumventing the environmental dilemma. Itis a form of language that defines the positions of stakeholders public

debate related to envrionmental issues. Ecospeak is a style of language and a way of framing arguments that obscures forms of solidarity and conflict that, if investigated further, could show what is required to solve environmental problems.(Todd,2014–15)

3.OBJECTIVE: The objective of the study is to analyze the construction of message and themes used by the filmmaker in the movie Sherni about Nature conservation.

Specific objective

- To Study the nature of messages being framed through dialogues in the movie.
- To Study the nature and types of visual messages being used by film maker in the movie under study.
- To Study the nature of Characters and their use in delivery of message.

4. RESEARCH QUESTIONS

1. What is the nature of messages spread by dialogues framed in the film under study.
2. What type of visual images used by film maker to deliver the message.
3. What type of camera angles used by the film maker to deliver the message.

5. SELECTION OF FILM SHERNI

Movies are commonly believed to both reflect and shape social perceptions, attitudes and behaviors. (Berger,1996;Welky,2006;Zynda,1979).This is particularly true when the audience has limited personal experience with the classes of people portrayed. The film undertaken in this paper, also qualifies for study, as according to Academy of motion pictures arts and sciences, 2007, a film with 40 minutes or more than it is called as feature film. "Sherni"film under study has a duration of two hours and eleven minutes. Though there are many films being released on various environmental issues, in recent times but mostly they have not gained the level of popularity as this one. According to Ravid (1999) the source of star power either comes from box office success of the film or critics acclaim for artistic work of the star or an actor. Vidya Balan is known in the film industry from both perspectives. The lead part in the film is played by Vidya Balan, a popular but critically praised actress from the commercial Bollywood business who has a mass and brand appeal that is adequate to entice audiences to watch a film.The film was released on OTT platform, due to prevailing pandemic lockdown at the time of writing this article, which widens the film's reach and accessibility. The film is financially significant which mean the profit a film generates in relation to its cost of production. The total budget of Sherni is 17.96 crore rupees.The film has high production and artistic value, the cinematography of which is done by Rakesh Haridas, who is known for his workin the Film industry and directed by National Award winning Filmmaker Amit Masurkar.

6. METHODOLOGY

The researcher has adopted Narrative analysis approach, which is a qualitative research method, that gives deeper understanding of the issue. Narration is a structuring of experiences into meaningful units. It is a description about one's own and others experiences. The Narrative analysis views films as a story, which is being told through images, dialogues between various characters or actors,series of events highlighting story and plot and social backgrounds of the story. According to Fisher(1984) Narration, is used by humans in their communication in order to persuade. This discourse which is used in all forms of narration includes narrative probability and narrative fidelity. Narrative Probability is the structure of a story, its believability and credibility. Whereas Narrative fidelity describes the logical reasoning and truth, on how well is a story being told and corresponds with other stories.

The film is analyzed under the images or visuals or in more cinematic terminology scenes cinematographed by the filmmaker, Dialogues between various characters that include the main character of the story and other supporting actors. In the film as the title suggest, the main protagonist is a Tigress, a wild animal, where dialogues cannot be added, the researcher took the second lead character of the film Vidya Vincent played by commercially successful Actress Vidya Balan,

alongwith supporting characters played by Vijay Raj, etc. Further the films was also analyzed on series of events it highlighted.

6.1: Movie Level Analysis

Creating a narrative is basically a technique of grouping relevant human experiences into episodes. The narrative 'raw material' comes from intermental life events and intramental visuals that aren't visible to the naked eye. Individual stories that arise in texts during the production of narratives, on the other hand, can be observed and interpreted directly (Polkinghorne 1988). In this way, any narrative functions at two levels. The first level comprises the story that has been carefully selected out of a complex situation and has been fixed in a narrative. By selecting one episode from a complex social situation, the event has already been interpreted and infused with meaning: meaning ascribed to it by the narrative under construction, which is the second level (Gudmundsdottir 1997,2001). In the study, the intermental and intramental images of the filmmaker are studied by secondary data. This data is collected from interviews of filmmaker, being published in newspapers or websites to get the intentions and motives of filmmaker about the subject chosen by him for his story narration. Key word search on google search engine technique was used to collect interview. Then the interview or excerpts were withdrawn that fulfills the function of narration at both levels suggested by Toril Moen in his study. The source of secondary data is based on purposive sampling and includes The Tribune, Scroll.in, First post and The Indian Express, at the time of writing this paper.

6.2 Selection of Narrative Story:

The story deals with environment conservation in general and wildlife conservation specifically. From the interview excerpts, it is found that the selection of the story by the filmmaker is motivated by his understanding towards the need of nature conservation that must be told to the audience by the leading Hindi film industry. The filmmaker'snarration of the relationship between man and animal in the movie that becomes the raw material for the filmmaker, is being narrated by picking up Tigeress as the movie central character, in the natural setting of jungle which he treatsas another character, though both remains invisible through speech but, spoken by centrally visible character Vidya Vincent and other supporting actors.

Interview Excerpts 1: "We believed that people deserved a good jungle film, a good film about conservation because it is the need of the hour. You need a story like this to come out in Hindi cinema. It may sound a little audacious but we were expecting the conservation community support to it and also for the common people to like it. This affects us, the human beings and its about our future as a species. So, it is something I believe should be watched."(The Indian Express)

Interview Excerpts 2: "It was the core philosophy that humans are a part of nature, not separate. Conservation is not a hero-driven process, but it is something that requires an entire community to come together and put in a lot of effort and also share knowledge in order to get things done. And this has to be continuous." The reason we chose the tiger is because it is at the top of the food chain in jungle. To save the tiger, you end up saving the entire jungle and with that entire eco-system. All these factors contributed in me getting interested in and they were coming from a space of research and personal experience. So, I was attracted to not just the philosophy but also the way the story world was built. (The Indian Express)

Interview Excerpts 3: We chose the tiger because it is a flagship species of conservation and is India's national animal, tiger is a culturally a symbol of many things. (Scroll.in)

Interview Excerpts 4: Humans think they own this planet. Why earth, there are some people who even want to colonize mars. What we would have achieved by showing gruesome killings? These deaths opened as a result of deforestation and marginalization and we wanted to maintain the dignity of the people. We didn't want to sue their deaths as mean to thrill or titillate the

audience." (Firstpost.com)

6.3: Constructed Narrative:

In the study, the filmmaker's understanding towards environmental conservation, is analyzedunder Fisher'snarrative probability and narrative fidelity, from interview excerpts of filmmaker .The phenomenon of environment conservation has been visualized by placing jungle as the backdrop of the film and Tiger as main protagonist, who became a victim of man–animal conflict. The story has a central character, played by a Bollywood critically acclaimed and commercially successful actress Vidya Balan, as divisional forest officer, who put every effort in her capacity as an officer to conserve the tigress. The film has other supporting characters, though not the central one but take forward the story and explicitly sends messages of conservationin various situations, created by the filmmaker. The film has number of conflict elements. Any narration is imbibed with conflicts. Film without conflict, is not a narration but simply spreading information from the source. (Hine, Ivanovic, and England ,2018). Sherni, has number of conflict element, shown in the whole process of saving a tigress. The conflict has been picturized in interpersonal and intrapersonal forms. Interpersonal conflict is represented through the localsliving besides the forest areas, the conflict between the poachers and central character of film, the conflict between local politicians and forest authority, whereas Intrapersonal conflict has been raised through the central character of the film Vidya Vincent. The story line is based in a region of Madhya Pradesh, a state also known as Tiger state. The common idea behind the conflict, is that it revolves around the conservation of nature generally and Tiger specifically, based on which the survival of forest and humans exists.

Various symbols have been used in the film, which portray the significance and truthness of the issue depicted in the film. Using various dialogues and visuals, the forest, wild animal, lioness and its related issues have been told in a scientific and logical manner, such as use of waterhole in a scene and its utility for forest life, pug mark, camera trap, scientific methods used in the process of locating the tiger, factors influencing the tiger to become man–eater.The conflict representation through various sub–plots like politics and administration, inter–political rivalry, political nexus adds the trustworthiness element in the film. Use of local artists adds realism to the movie, with the rhetorical element of Pathos. (Table 1)

Table 1: Characters Revelation

6.4: Constructed Narrative:

S.No.	Character Revelation	Message
1.	Vidya Vincent	Human savior of nature.
2.	Hasan Norani	Human Savior of nature.
3.	Bansal	Shrewd Officer
4.	Local Politicans-GK-JK	Runs Political agenda through Wild animal.
5.	PintuBhaiya	Poacher in search to fulfill his greed.
6.	Nangia Sir	Practical Officer

Dialogues as a message

Dialogue is one of the component of cinematic discourse, which constitutes the verbal and non–verbalelements of spoken interaction, that includes prosodic features such as intonation, volume and use of pauses.(Chepinchiki&Thompson 2016)

Dialogue moves the plot forward by allowing characters to interact. They express the story's message both overtly and implicitly, based on the conversations written and the way film wasvisualized. The story is told through dialogue. Any scene with dialogue becomes exciting and attention–getting for the audience. For the audience, it can make a scenario either monotonous or exciting. Dialogue may improve the mood and give the plot and characters more dimension. It influences how the audience interprets the film's message.

Dialogue has many functions. From adding a realistic taste to the film by inserting incidental dialogues, dialogues present the reasons and rationally take forward the story, which is not possible to tell through images. According to Sarah Kozloff(2000) dialogues communicate about why, how and what to viewer, it anticipate the plot development, reveal character, and express thematic messages. Thematic messages by Dialogues, allows the filmmaker to talk to the

audience on the particular issue highlighted in the film.

In the study, incidental dialogue is excluded from analysis, because of no thematic message. According to Sarah Kozloff(2005) in films these conversation activities represent everyday encounter instead of character revelation. The focus of dialogues with implicit or explicit message has been included in this study. Table 2, consists of such speech acts, interactions taking place between various characters of film. The character varies, from primary to secondary to supporting being played by known artists and local artists. The dialogues have been studied under context. The central message of film is conservation of wildlife, but no wildlife can be conserved until environment is not conserved. Hence, there are other sub-messages that have drawn attention through dialogue are Man-Animal conflict, consequences of human exploitation of the environment, sustainable development, development and environmental protection, political indifference and nexus, role of community participation in environmental protection.(Table 2)

TABLE 2: DIALOGUE AND MESSAGE

S.No.	DIALOGUE EXCERPTS	MESSAGE
1.	Vidya Vincent and her Driver Babbal conversation, after Vidya received a call from her junior officer. "Jungle kibanawat hi aisihai. Jungle khet, jungle-khet. Koi bhijanwarek jungle se dusre jungle jaanekeliyekhet se guzarna hi padtahai."	Encroachment of Forest land by humans.
2.	Interaction among locals, Vidya Vincent and other fellow officers. "Forest officer- Ekhaftetakyahan koi bhinahiaayega." "Local villager- kaisibaatkarrahe ho saab. Yahannahiaayengetohapnemaweshionkokahancharyenge."	Man-animal conflict. The needs of locals that depends on the surrounding Jungle, that arises the issue of man-animal conflict..
3.	Forest department Awareness programme. On stage, Norani. "Norani :Tohbhaiya, janwarhamaradushmannahihai. Use bhihamaritarahek hi cheezpasandhai. Bolo kyaa….. such shaanti. Toh jungle mein tum selfie loge tohkyahoga. Toh tiger chat karjayega… isliye jungle meinnahijaana."	Human interference into nature has not only disturbed the environment and its related component (in film its tiger) but also has its negative impact on human life.
4.	Election campaigning on show – "Local Mla GK and Forest authority Officer Bansal. GK: Jahan tak tiger kasawalhai…tohbhaiya yah hamarailakahai……usakanahi…aur agar who jabranghusnekikoshishkarega, toh hum use batayenge….arey,useuthakar zoo meinbhijwadenge…circus meinbhijwadenge."	Environmental issues influences local politics though, politicians misleads, common people by tricking them and show their power over wildlife(in the film) or on environmental resources .
5.	Workshop by Nangia sir "Nangia Sir: Development aur Environment ke beech meinsantulanzarurihai. Agar vikaskisaathjaotohparyavaranko bacha nahisakte. Aur agar paryavarankobachane ja otoh vikasBecharaudas ho jaatahai. Is vichardhara se sthapithua EIA. Jisase hum kisibhi project ya plan ke environmental impact asses karsaktehain, taaki jab hum vikaskebaaremeinsochein tab paryavarankonabhulein."	Conflict between Development and Conservation of environment, advocates sustainable development.
6.	Election campaign of GK, alongwith Shooter Gk and PintuBhaiya "PintuBhaiya- Aap log nishchintrahiye. Khoonkabadlakhoon se hi loong main. Us khoonkipyasishernikoapnepaponkadandbhugatanapadega."	Environmental issues influences local politics though, politicians misleads common people by demonstrating wildlife as threat to human life. Thus displays power authority over wildlilfe.
7.	Norani, educating local youth "Norani : Forest friends, ye khet, jungle, aap logon kailakahai. Isakisurakshakizimmedaribhiaap logon kihai. Local Youth: Seedhisibaathai sir. Agar tiger hai, tabhitoh jungle hai. Jungle haitohbaarishhai, baarishhaitohpaanihaiaurpaanihaitohinsaanhai." "Norani : very good..very good… Sabsepahlehamein jungle kobachanahai. Jaanwaron se dostikarnihai. Who alagnahihai. Who hum mein se ekhai."	Role of Environmental conservation (In film its tiger) in sustaining human life, with the participation of local community.
8.	Locating Copper mine as problem for T-12. Norani and Vidya Vincent "Norani :Pahleyahanghana jungle huakartatha. Auraaj ye hai.ye ..ye..copper mine. Ye jo jungle haina…T-12, Sherni, apnebachonkesaathisakepeechehai. Usakojaanahai us pahadikepeeche national park mein. Yahanhamne highway banadiyahai…yahan par purifactorianhain. Sab chokkardiyahai. Kaisejayegiwoh."	Developmental priorities affecting wildlife and environment.
9.	Shagun body found in night. "Local villagers. Local politician, Norani and Vidya Vincent. Local politician: Kya dekhneaayehainaap log. Maut ka tamasha. Ye log mautkatamashadekhneaayehain. Mujhe sab patahai. Ek-ek tiger kobachanekepaisemiltehain, naaap logon ko. Agar insankobachankepaisemilte toh…."	Environmental issues influences local politics, that widens the boundaries of Man-Animal conflict.
10.	Minister in Jungle with PintuBhaiya. "Minister: Is operation ko lead karengePintuBhaiya. Jo kihamareghanishthmitrabhihain. Ye jaisakahengeaapwaisa hi karenge."	Nexus between private poachers and state politicians, overlooks scientific observations.

6.5: VISUAL ANALYSIS

Visuals create an immediate response by simplifying the information and provides a holistic representation of social reality that allows for multiple interpretations of information(Bell & Davison 2013; Meyer et al. 2013; Jones et al. 2017; Kassinis&Panayiotou 2017). Visuals attracts viewer attention and connects the information packages, while providing meaning-making and sharing across various boundaries. (Lurie & Mason 2007; Jones et al. 2017; HÖllerer, Jancsary&GrafstrÖm 2018). Visuals and visual metaphors are specifically useful for translating novel or complicated ideas into more understandable conceptualizations (Bell & Davison 2013; O'Neill et al. 2013; Jones et al. 2017).

In the movie, under study, Visuals are analyzed under contextual information they are intimating to audience while focusing on camera angles being used by the filmmaker. As the way that photographs position the viewer in relation to that which is depicted is significant in similar ways in terms of constructing the viewer's engagement, for example, longdistance/high-angle views construct both an impersonal relationship with what is depicted and potentially a sense of empowerment (Peeples,2011). In the film various shots have been used by the filmmaker to not only establish the story but also create a

relationship between the film and audience. In the film, Portray of Forest remains the central part, and hence various angle shots ranging from master shots to close shots have been used while picturizing various locations and parts of Forest in its natural ambience. The movie has been filmed majorly by moving camera, instead of using tripod, and in daily, that gives shaky shots that adds the realistic value to the narration of forest, without any manipulation while to keep the liveliness and curiosity of the scene that could be predicted. Table 3, explains the various shots with contextual information and message being framed in the film through cinematography. From Romanticizing with mother nature, films visuals spreads messages of consequences of unsustainable development, Man-animal conflict, cultural use and dependency over forests, like in dialogues.

TABLE 3: Visual Shots and Message

S.No.	Shot	Angle	Context	Message
1.	Master Shot	Bird Eye view	Establishing shot-Portrays the beauty of vast jungle.	Importance of Forests and generate romanticized feeling.
2.	Close-up	Low angle	Torn files-show a clear view of files that are torn and covered in the fine dust.	Depicts environment of government office.
3.	Master shot	Ground level	Goat sitting beside a dried plant and dead leaves	Intrusiveness of humansdetoriates condition of forests, leaving lives to suffer.
4.	Medium shot/tracking shot	Eye level	Forest department chasing pugmarks.	Used for audience to have a sense of being there in that particular scene as a character. It is used to bring out the liveliness of a scene.
5.	Close-up	Mid-level	Women weaving baskets, as a source of income.	Depicts cultural dependency of humans on forest about how they utilize trees for commercial and personal purposes.
6.	Helicopter shot	Master View	Copper-mine	Large scale interference of humans, endangering wild life and nature, leading to unsustainable development.
7.	Mid shot	Mid-level	Awareness programme	Use of Cultural presentation in generating awareness amongst the locals.

7. DISCUSSION:

Film is a mixture of visuals, audio and verbal stimuli, alongwith other aesthetic and technical aspects, through which it narrates a story.Every narration speaks a meaning. This could be revealed through visuals, or through verbal stimuli. Ecosee studies the representation of images of a particular region into environmental discourse. In the Movie under study "Sherni", the setting of the film is Madhya Pradesh, which is also known as India's Tiger state. Indian Government has been running Project Tiger since 1973, for the conservation of Tiger, though it is based on a true event occurred in Yavatmal of Maharashtra state. But by considering Madhya Pradesh as the story setting, the film-maker tries to took the advantage of its popularity and hype of the Tiger state, which might have found an emotional connect amongst audience, highlighting local issues of man-animal conflict by involvement of local artist supports the concept of Ecosee, which works on local level to communicate environmental issue. Furthur,in the movie, by placing tiger as a central character, but by using its virtual and graphical images in constructive way,depicts the idea of environmental conservation without using the real tiger. According to Shelton (1975) Cinema may depict ideas that are unavailable due to location, size, or non-availability through a brief animation sequence. Further supporting evidence to the Ecosee, in the film, local village and its issue of fodder for domesticated animals, threat to life were also highlighted in realistic way. Various dimensions of the forest, human dependence on the forest and the exploitation of natural resources due to the process of development arising out of needs have been depicted in the film. The pictures have been bundled into a variety of shots and angles like aerial shots of Forest, Master shot of copper mine, tiger pug-marks, ponds and trees, and the long duration, full of ambience baseduntextual forest area visuals and other wildlife, rhetorically supports the Ecosee framework, being employed in the study. According to Ulmer (2003) photograph or image plays an emotional rather than logic by invigorating conditioned memory. According to Elliot 2006, both high-angle and/or aerial shots and low-angle and macro-shots, provides a new and unusual perspective of seeing. The Film under study has been made in documentary style and since the director was very keen to stick to the authentique technique, there were no fancy visuals,

shots or dramatic movements used in the film, instead the camera movements are shaky, so as to maintain the documentary style to keep up the liveliness and curiosity of the scenes. The visuals have been shot in day /natural light to maintain the authenticity of a forest area and village aesthetics. Shelton (1975) how information is shown in terms of scene type (LS, MS, CU, ECU) defines its relative relevance. The more fully framed an action is, the greater its impact. And the information is successfully transferred. According to Dreyer(1991) film is first and foremost a visual art, directed for eye and slips more easily to audience consciousness than spoken words. Hansen(2010) that the visual language of climate change and other environmental challenges is one that must be built, and where visuals are created to denote climate change, ecological hazard, pollution, risk to health, etc, rather than provide readymade meanings.

These messages depicted in the movie are in line with the Sustainable Development Goals set by the United Nations during Conference of Climate change(COP). At the same time, there is a correlation with the pro- environmentpolicy of the Government of India in line with SDGs. According to a news report published in Times of India, in 2020, 88 human deaths have been reported in Maharashtra state, resulting from man-animalconflict. In another news report of New Indian Expressquoting Environments Ministry data, 500 people and 100 elephant died due to man-animal conflict. Through the film the man-animal conflict has been represented under the human encroachment to animal territory, food search for cattle, and habitat search by animal.

Most of the dialogues suggesting any message are either spoken by the supporting character or by secondary characters being played by local artists. While the central character of the film, played by a successful Bollywood actress, the dialogues spoken are either incidental in nature or reveal more details about the character. This idea of speech act, suggest the role of local community in conservation of environment.This corresponds to the intermental image of the filmmaker, who believes conservation is a community driven activity.In words of the Film director Amit Masurkar "conservation is not hero-driven, but people or community centric."(Singh 2021) .But though the dialogues convey the messages framed around rhetorical techniques of logos, Ethos and Pathos, the film has successfully highlighted the failure of these rhetorical appeals in the story line. This failure of rhetorical appeals amongstvarious stakeholders(local community, Environmentalist, Politicians, hunter) in environmental issues, in the movie, the Tigress, forms the core of Ecospeak. The ecospeak zone, where public divisions remain frozen, confrontations linger, and solutions are postponed due to a failure to critically examine the terms and conditions of the environmental dilemma (₹Ecospeak in Transnational Environmental Tort Proceedings Jeff Todd).

8. CONCLUSION:

Dobrin and Morey (2009) rather than explaining nature and ecological challenges, discourse generates the very idea of nature. Thus, whether the discourse is verbal, visual, or both, nature is established by discourse. Sherni is based on the story of a tigress Avni or T1's, who was accused of killing 13 people in state of Maharashtra. It got killed by a hunter, who was a civilian and led the process of Avni's hunt with forest official. The killing of Avni, tagged as 'cold-blooded murder' by activists and the case is still on in Supreme court of India. The movie under study not only establishes the discourse on environmental issue specifically related to man-animal conflict but successfully spreads the message of various other issues related to the killing of tiger, under theoretical framework of Eco-see and Eco-speak. According to Corbett (2006) nature and wildlife films are thus an expression of a long human heritage of imbuing meaning into the natural world.

REFERENCES :

- Alcolea,J; Banegas.(2008). Visual Arguments in Film. Springer Science +Business Argumentation (2009) 23, 259–275 DOI 10.1007/s10503-008-9124-9
- B. Hine, K. Ivanovic, and D. England,(2018).From the Sleeping Princess to the World-Saving Daughter of the Chief: Examining Young Children's Perceptions of _Old' versus _New' Disney Princess Characters. Social Sciences, 7(9),161. https://doi.org/10.3390/socsci7090161
- Cozma,R;Hamilton,J.M.(2009). Film portrayals of foreign correspondents:A content analysis of movies before World War II and after Vietnam. Journalism Studies, 1–17. DOI: 10.1080/14616700802622656
- Chepinchiki,N.,Thompson,C.,(2016).Analyzing cinematic discourse using conversation analysis.Discourse,Context& Media, Vol 14, 40–53.https://doi.org/10.1016/j.dcm.2016.09.001
- Chodhuary.R.R.(2021,June 18).Sherni movie review: Vidyabalan roars in this man-animal jungle on amazon prime. Retrieved from
- https://www.indiatoday.in/movies/bollywood/story/sherni-movie-review-vidya-balan-roars-in-this-man-animal-jungle-on-amazon-prime-1816204-2021-06-18
- Dreyer, C.T. (1991). A little on film style,122–142. New York: Da Capo Press
- Dobrin,S.I; Morey,S.(2009) Ecosee:Image,Rhetoric,Nature. State University of NewYorkPress,Albany.
- Express news service. (2020,Aug.11).500 people, 100 elephant died due to man-animal conflict: Government Data. Retrieved from
- https://www.newindianexpress.com/nation/2020/aug/11/500-people-100-elephants-die-due-to-man-animal-conflict-government-data-2181751.html
- http://www.filmreference.com/encyclopedia/criticism-ideology/dialogue-functions-of-dialogue-innarrative-film.html
- Gleason.T.(2019,August 2). Why dialogues most important part of film. Retrieved from https://nofilmschool.com/boards/discussions/why-dialogue-most-important-part-film
- Hansen,A., &Machin,D.(2013). Researching Visual Environmental Communication. Journal of Environmental Communication: A Journal of naure& culture. 7:2, 151-168,https://doi.org/10.1080/17524032.2013.785441
- Kim,T; Jung,S.U; Hyun,S.D.(2016). Influence of Star Power on Movie Revenue. Global Journal of Emerging Trends in e-Business, Marketing and Consumer Psychology. Vol: 2 Issue: 2
- Kozloff,S.(2000), Overhearing Film Dialogue. University of California Press.
- Medeiro, P.M.M., Gomes,I.M.A.M.,(2020).Persuasion Through Visual Metaphors: an Analysis of Non-photographic Resources in Environmental Documentaries.Internin,Vol 25,(6-26). DOI 10.35168/1980-5276.
- Pinjarkar,V.(2021,Feb.11).With 88 human deaths, 2020 saw worst-ever wildlife conflict.Retrieved from https://timesofindia.indiatimes.com/city/nagpur/with-88-human-deaths-2020-saw-worst-ever-wildlife-conflict/articleshow/80803330.cms
- Ravid,S.A.(1999).A Study of Film Industry. The Journal of Business ,Vol. 72(4),463-492 a. https://www.jstor.org/stable/10.1086/209624

विशेष पहल

माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में मध्यभारत के प्रथम 'फिल्म अध्ययन विभाग' की स्थापना

– प्रो. पवित्र श्रीवास्तव

सिनेमा जनसंचार का सशक्त माध्यम है। फिल्में न सिर्फ लोगों का मनोरंजन करती हैं बल्कि सूचना एवं सम्प्रेषण का एक सशक्त माध्यम भी हैं। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय मध्यप्रदेश शासन द्वारा स्थापित एक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय है जो जनसंचार की विभिन्न विधाओं में विगत तीन दशकों से शिक्षण एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में अग्रणी संस्थान की भूमिका निभा रहा है। विश्वविद्यालय में पत्रकारिता एवं संचार की विभिन्न विधाओं में तीस से अधिक पाठ्यक्रम संचालित किये जाते हैं। अब विश्वविद्यालय ने फिल्मों पर भी विशेषीकृत अध्ययन एवं प्रशिक्षण की पहल की है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.जी. सुरेश द्वारा यह निर्णय लिया गया कि विश्वविद्यालय में 'फिल्म अध्ययन' का एक पृथक विभाग स्थापित किया जाएगा। इस विभाग की स्थापना के साथ ही विश्वविद्यालय पत्रकारिता, जनसंचार, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, विज्ञापन एवं जनसम्पर्क, न्यू मीडिया, मीडिया संचार शोध, कम्प्यूटर अनुप्रयोग, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के साथ ही फिल्म अध्ययन में भी विश्व स्तरीय पाठ्यक्रम संचालित करेगा। फिल्म अध्ययन का यह विभाग मध्यभारत का पहला फिल्म प्रशिक्षण संस्थान होगा जो डिप्लोमा से लेकर पीएचडी तक के विभिन्न पाठ्यक्रमों का संचालन करेगा।

इस विभाग की स्थापना का उद्देश्य सिनेमा जगत में फिल्म निर्माण की विभिन्न विधाओं के लिए प्रशिक्षित एवं रचनात्मक मानव संसाधन उपलब्ध कराना है। मध्यप्रदेश फिल्म निर्माण के क्षेत्र में अग्रणी प्रदेश के रूप में उभर रहा है। देश-दुनिया के तमाम प्रोडक्शन हाउस मध्यप्रदेश में अपनी फिल्मों, टेलीविजन धारावाहिकों, वेब सीरिज की शूटिंग कर रहे हैं। भोपाल, इंदौर, जबलपुर, ग्वालियर समेत प्रदेश के विभिन्न अंचलों में फिल्म निर्माण की गतिविधियाँ तेज हो रही हैं। महेश्वर, खजुराहो, माण्डू, पचमढ़ी जैसे अनेक स्थान फिल्म निर्माताओं को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। विश्वविद्यालय का नव स्थापित फिल्म अध्ययन विभाग फिल्म की विभिन्न विधाओं में कौशल रखने वाले रचनात्मक युवाओं को तैयार करेगा जो मध्यप्रदेश समेत पूरे देश में फिल्म निर्माण गतिविधियों में अपना योगदान देंगे। इस विभाग की स्थापना से फिल्म जगत को तकनीकी एवं दक्ष मानव संसाधन उपलब्ध होगा, साथ ही प्रदेश में कला जगत में रुचि रखने वाले युवाओं को अध्ययन एवं प्रशिक्षण के साथ रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर भी उपलब्ध होंगे।

विश्वविद्यालय के बिशनखेड़ी स्थित नवीन परिसर में फिल्म अध्ययन का नवीन विभाग फिल्म निर्माण की सभी तकनीकी सुविधाओं से युक्त होगा। फिल्म निर्माण के सैद्धांतिक पक्ष के साथ-साथ व्यावहारिक पक्ष की पूर्ति के लिए सभी तकनीकी संसाधन विश्वविद्यालय द्वारा उपलब्ध कराए जाएँगे। विश्वविद्यालय शैक्षणिक संकाय के साथ-साथ देश-दुनिया के तमाम बड़े फिल्म मेकर्स एवं फिल्म अध्येता, विद्यार्थियों को फिल्म निर्माण से जुड़ी विभिन्न विधाओं में व्यावहारिक प्रशिक्षण उपलब्ध कराएगा। विश्वविद्यालय का छात्र नियोजन एवं उद्यमिता प्रकोष्ठ विशेष तौर पर फिल्म अध्ययन विभाग में अध्ययनरत विद्यार्थियों के इंटर्नशिप एवं प्लेसमेंट के लिए प्रयासरत रहेगा।

विश्वविद्यालय में फिल्म निर्माण एवं फिल्म पत्रकारिता पर दो पाठ्यक्रम वर्तमान में संचालित हो रहे हैं। विभाग की स्थापना के साथ दोनों ही पाठ्यक्रम नवस्थापित 'फिल्म अध्ययन विभाग' से संचालित होंगे। एमएससी फिल्म प्रोडक्शन का दो वर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम फिल्म निर्माण की विभिन्न विधाओं जैसे फिल्म पटकथा लेखन, निर्देशन, फिल्म संपादन, सिनेमेटोग्राफी, आडियोग्राफी, लाइटिंग एवं साउंड जैसे तकनीकी विषयों के साथ-साथ सिनेमा एवं साहित्य, थियेटर, फिल्म मार्केटिंग जैसे विषयों का समावेश कर तैयार किया गया है। इसके अतिरिक्त फिल्म पत्रकारिता का एकवर्षीय पीजी डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी फिल्म एवं मनोरंजन जगत की पत्रकारिता के विविध आयामों को शामिल कर तैयार किया गया है। दोनों ही पाठ्यक्रम युवाओं में बहुत लोकप्रिय हैं। देश के विभिन्न प्रान्तों से आए युवा इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेते हैं। आगामी सत्र से राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर आधारित फिल्म अध्ययन का चार वर्षीय बीएससीः फिल्म स्टडीज (ऑनर्स) पाठ्यक्रम प्रारंभ करने की योजना भी नवस्थापित फिल्म अध्ययन विभाग से क्रियान्वित होगी। यह पाठ्यक्रम बारहवीं के बाद फिल्मों में रुचि रखने वाले युवाओं को अध्ययन एवं प्रशिक्षण का अवसर उपलब्ध कराएगा। सिनेमा पर शोध करने वाले युवाओं के लिए फिल्म स्टडीज में पीएचडी के अवसर भी उपलब्ध कराये जायेंगे।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.जी.सुरेश के विज़न अनुसार विश्वविद्यालय का फिल्म अध्ययन विभाग मध्यभारत समेत देश के तमाम युवाओं को फिल्मों की विभिन्न विधाओं में अध्ययन एवं प्रशिक्षण के अवसर उपलब्ध कराएगा जो अपनी रचनाशीलता एवं तकनीकी कौशल से एक अलग मुकाम हासिल करने का सपना संजोये हुए हैं। विभाग में संचालित पाठ्यक्रमों में न्यूनतम शुल्क पर एक उच्च स्तरीय शिक्षा एवं तकनीकी प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाएगा। राष्ट्रीय स्तर समेत मध्यप्रदेश शासन की विभिन्न छात्रवृत्तियों का लाभ भी इस विभाग में अध्ययनरत विद्यार्थियों को शासन के नियमानुसार उपलब्ध कराया जाएगा।